

## भूमिका

श्रीसीतारामजी की अहैतुकी अनुकम्पा से “भूलन विहार पदावली” का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया। इस संस्करण में पूर्व संस्करण की अपेक्षा सैकड़ों अप्राप्य नवीन पद दिये गये हैं साथ ही अकारादि क्रम से पदों की सूची भी दे दी गई है जिससे पदों को ढूँढ़ने में प्रेमियों को सुविधा हो।

श्रीसीतारामजी की मधुर उपासना में आचार्य प्रणीत पदों का सर्वोत्कृष्ट स्थान है। रसिकाचार्यों ने उपासना के द्वारा श्रीप्रिया प्रियतम का साक्षात्कार किया था। साक्षात्कार के पश्चात् ही पदों की रचनायें की गई हैं। इन पदों के गायन से प्रेमियों को एक अलौकिक मधुर रस की अनुभूति होती है।

इन पदों में लीला माधुर्य एवं रूपमाधुर्य का सम्यक् चित्रण है कहीं मानलीला, कहीं मिलन, इस प्रकार नित्य निकुञ्ज में विहार का पूर्ण संकेत इन पदों में मिलते हैं। इनके गायन से नित्य विहार की मधुरलीलाओं का रसास्वादन प्राप्त होता है।

श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल में भक्ति के चौंसठ भेद कहे गये हैं। जिनमें आचार्य रचित प्रबन्धों का गान प्रमुख भक्ति है—

“अप्रस्वामि आदि के प्रबन्धगान समय सम,  
स्वयं नृत्य गान संध्यावन्दन ज्यों कीजिये।”

सन्ध्यावन्दन की भांति नित्य नियम से इन पदों का गायन करना चाहिये। जिस प्रकार सन्ध्यावन्दन नहीं करने पर द्विज अपने धर्म से च्युत हो जाते हैं, उसी प्रकार रसिकजन यदि इन पदों का गायन नहीं करते हैं तो रसोपासना से च्युत हो

जाते हैं अतः नित्य आचार्य प्रणीत पद-प्रबन्धों का गायन अवश्य करना चाहिये ।

श्री अग्रध मिथिला में एवं अन्य स्थानों में प्रतिवर्ष अनेकों उत्सव होते हैं । इन उत्सवों में आचार्य प्रणीत पदों के गायन बड़े अनुराग के साथ किये जाते हैं । आचार्य की दिव्यवाणी ही इन उत्सवों के प्राण हैं अतः इन पदों का महत्त्व वेदों से भी बढ़कर है । श्रीमैथिलीशरणजी शास्त्री ने अनेकों पदों की पुस्तकें प्रकाशित की हैं । आजतक जिन पदों का श्रवण नहीं हुआ था उन पदों का दर्शन पुस्तक में होता है । अशुद्ध पदों को शुद्ध किया गया है तथा अप्राप्य पदों का उत्कृष्ट संग्रह किया गया है ।

सभी उत्सवों में भूलनोत्सव का महत्त्व सर्वाधिक है । यह उत्सव पूरे श्रावणमास तक चलता है भूलन विहार पदावली का प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया । बड़े परिश्रम से शास्त्रीजी ने नवीन संस्करण का प्रकाशन किया है । इस संस्करण में नवीन पदों की संख्या भी बढ़ाई गई है आशा है प्रेमियों को इन पदों के गायन से श्रीयुगलमाधुरी का रसास्वादन प्राप्त होगा ।

विवाह पञ्चमी  
सं० २०२३

स्वामी सीतारामशरण  
आचार्य पीठ, श्रीलक्ष्मणकिला  
श्रीअयोध्याजी



## दो शब्द

श्रीमिथिलेशराजकिशोरीजू की असीम अनुकम्पा से “श्री भूलन विहार पदावली” का संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण रसिक सन्तों की सेवा में सादर समर्पित कर रहा हूँ। प्रथम संस्करण में कुछ अगुद्धि रह गई उसे शुद्ध करने का प्रयास किया गया है। प्रथम संस्करण में भूला के अतिरिक्त जल विहार, साँझी, विजयादशमी एवं रासोत्सव के भी पदों का संकलन था, जिससे भूला के पदों का पूर्ण रसास्वादन नहीं हो पाता था, इसलिये इसमें केवल भूला के ३०० पद एवं परिशिष्ट भाग में ३५ कवित्त एवं ६ सवैया भी देकर ग्रन्थ को पूर्ण कर दिया गया है। यदि और भी उत्सव के पदों का संकलन होता तो ग्रन्थ विस्तार हो जाता, अतः केवल भूलन के पदों को ही रखा गया है।

इसमें संवत् के अनुसार श्रीअग्रस्वामीजी से लेकर अब तक के सिद्ध सन्तों की वाणी को संकलन करने का प्रयास किया है। षट् ऋतु के अन्तर्गत सबसे अधिक सभी सन्तों के भूलन के ही पद अधिक हैं जिससे सभी पदों को मैं नहीं दे सका। श्रीलक्ष्मणकिला के ‘सरस्वती पुस्तक भंडार’ से पदों को संकलन किया है। कुछ पद श्रीशत्रुहनशरणजी महाराज ( विरौलीवाले ) से मिला है। अतः उनके हम कृतज्ञ है। अधिक दुर्लभ एवं मनोहर पद पं० श्रीश्यामवल्लभाशरणजी से प्राप्त हुआ है, जो कि काशी आकर स्वतः दे गये थे अतः उनके हम हृदय से आभारी हैं। प्रेस जाने आने एवं प्रफ संशोधन कार्य में पं० नन्दराम शर्मा का योगदान सराहनीय रहा है।

प्रूफ के संशोधन में काफी सतर्कता रक्खी गई है फिर भी यदि कुछ त्रुटि रह गई हो तो विज्ञ पाठकों से क्षमा चाहूँगा।

श्रीलक्ष्मणकिलाधीश

स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज

के चरण चञ्चरीक

मैथिलीशरण शास्त्री

विवाह पंचमी

१७/१२/६६



# भूलन भाँकी



चलि भूलें विमल हिंडोर गले भुज गेरी ।  
पिय लगो सावन मास आस यह मेरी ॥



## अकारादि क्रम से पद-सूची

पद-	‘अ’	पृष्ठ	आरती करु। सखि श्यामसुन्दर की	४९
अपने मैं गुरु को भुलैहौं		८१	आरती भूलन की कीजै	११७
अब धन धमण्ड नभ छाये		६५	आली री राघो के रुचिर	५
अब चलु भूलन प्यारे		१५	आली री भूलत राजकुमार	६
अवध बाग जप नन्दन		३०	आली दृग देखु भूलन छवि	३८
अवध सैयां भूलन की ऋतु		५८	आली री को भूले इन संग	८०
अवलोको सखी राज हिंडोरे		५२	‘इ’	
अरज मानो जो अरज मानो		८१	इतनी अरज मोरी मानो	७४
अरे रामा रिमिफिमि बरसे		१०५	‘ए’	
अलि फूलन हिंडोरे भूलै		२१	ए दोउ भूलत रंग हिंडोरे	४
अहो लाल धीरे भूलो		७४	ए दोउ भूलत सरयू तीर	७४
‘आ’			ए दोउ भूलत बने ठने	८३
आई री भूलन की बहारें		३६	ए हो मोरे प्राण धीरे भूलो	७८
आज डोल रसिकमणि भूलहीं		१२	‘क’	
आज दोउ भूलत रंग भरें		३१	कदमतर भूलत दशरथ लाल	५३
आज भुलाइहौं गिय ताको		३७	कदमतर भूलत अवध विहारी	७२
आज श्री सतगुरु मेरे भूलन		८२	कदमडार मोरी सारी लटक रही	५५
आज दोउ भूलै श्रीजानकीबाग		१०६	काहे न धारे भूलहु प्यारे	८१
आज के बिछुड़े न जाने कब		१११	किशोरी संग भूलत नवल किशोर	२०
आज बालम गिर गई मैरी		११५	कैसे भुलिहौं बलमुआं सावन	५५
आजु री निहारु सखी दम्पति		२५	कोशलपुरी सुशवनी	६
आजु तो अवध सैयां भूमकि		९६	क्या मजा सावन की सखी	५०
आजु सावन तीज सुहाई		१०३	‘ख’	
आये हो सिय रघुनन्दन		६१	खुश लगता है सब तौर से	४४
आयो री सावन सुशवन		८५		



‘ग’

गरजत मतंग मतवारे	९२
गावैं रसभरी तान प्यारो	२५
गुनि गुनि गनि गनि	११३
गुमानी भूलन की ऋतु आई	१०

‘घ’

घनश्याम घुमड़ि घन आयो री	१०१
--------------------------	-----

‘च’

चलिये सांझ समय प्रिय भूलन	६०
चलि देखिये मणिकूट पै	८२
चलो देखन जाऊँ री भूलत	७२
चलो री चलो री मोरी संग की	६९
चलो देखें सिया रघुवीर	९५

‘छ’

छवि छाई चहुँधायि ऋतु पावस	९३
---------------------------	----

‘ज’

जनकपुर लागत तीज सुहाई	१
जय रहे अवधेश ललन	८८
जरा भूलो न लाला हमारे	१९
जित देखो घटा तित छाया रही	६८
जित देखो तितै दोउ भूला भूलै	९३

‘झ’

झमकि झुकि भूलति सिय प्यारी	४६
झमकि भूलत सिय रघुराई	४७
झमकि झुलौंगी सैयाँ तोरे बंग	६६
झमकि झुलब बालम तो संगे	१०८
झमकि दोउ भूलै रे हिंडोरबा	११४

भरत भरभर सलिल

भलित भलमलित झुकि भूमि

भांकी भलामल भलके

झुकि झुकि सीताराम सु भूलै

झुलन्दा तेरी अंग अंग माधुरीजोर

झुकि भूलै हिंडोरे लाल ललो

भूमत भूलन पै दोउ आवत

भूलत सीताराम हिंडोरे

भूलत सिया राजिवनैन

भूलत राम राजिवनैन

भूलत नृपति किशोर किशोरी

भूलत सिया वल्लभ लाल

भूलत नवल दशरथ लाल

भूलत राजकिशोर री

भूलत रसिकमणि रघुनन्द

भूलत सिय पिय आख हिंडोरे

भूलत सियवरराज हमारे

भूलत दोउ रघु र रंग भरे

भूलत प्यारी झुलावैं प्यारो

भूलत लाडिली रघुवीर

भूलत अवधेश लाल

भूलत रसिक श्यामा श्याम

भूलत कुंजन भीजि रहे दोउ

भूलत नवल दम्पति आज

भूलत सरस सरयूतीर

भूलत सिय नागरि नागर वर

भूलत लाडिली नृपलाल

भूलत सिया रघुवर लाल	७८	भूलन में आज सज धज के	११५
भूलत राम सिय मन हरे	७९	भूलने लगे लाल लली जू	३७
भूलत राम सिया रस रसिकै	७९	भुलावत राम रसिक पटरानी	१२
भूलत युगल फूल हिंडोल	७९	भुलावो आज प्रीतम को	४५
भूलत सिय स्वामिनि महरानी	७९	भुलावो लाड़िले निजरानी	९९
भूलत जनकजा रघुलाल	९०	भुलावो सजनी धीरे धीरे	११२
भूलत श्वत हिंडोरा राम	९८	भूला भूलो रसिक रघुलाल	३८
भूलत भक्तभोरत निडर पिया	९९	भूला भूलो हिंडोले आज	३८
भूलत दोउ रसिया आलस	१००	भूला भूलो विचारि के	४१
भूलत प्यारे राजदुलारे	१०१	भूला भूलो सही मोरे प्राण	७१
भूलत प्राण वल्लभ लाल	१०३	भूला भूलो मेरी प्यारी	९७
भूलत नवल रसिया लाल	१०६	भूला भूलो मेरे प्यारे	९८
भूलन पधारो जो म्हारो राज	१०	भूला भूलै छबीले रसीले	१००
भूलन पधारो जी श्याम सुजान	१५	भूला भूलो सम्हारि के	१०९
भूलन पधारौ अवधविहारी	१७	भूलि रहे राम हिय हरित	८०
भूलन प्यारी लागे हो	३५	भूल रसिक शिरमौर	४०
भूलन भमक भमक की	४३	भूल भूलन भमकि छविनिधि	४२
भूलन पर मान करी सिय	४७	भूलै नवल हिंडारे	८
भूलन लखि सखियां भमकि	४९	भूलै दोउ रसिया भूलन	४०
भूलन की ऋतुआई सजन	५१	भूलै नवल रसिक रंग भीने	६४
भूलन की क्या छवि छाई	५९	भूलै दोउ साजन साज हिंडोर	७१
भूलन भोंक सम्हार कमर	७५	भूलै रमकि भमकि प्रमुदित	७०
भूलन पर भूल दोउ रसमाते	७६	भूलै जानकी सुजान आज	८४
भूलन विच विलसत श्रीगुरुदेव	८२	भूलो जी भूलो जी राम रस के	१०
भूलन की भांकी अजब बनी है	९१	भूलो भमक हिंडोरे	४२
भूलन पर अरुभि गये पिय	१०४	भोंकवा न दीजै राघो कमर	९०
भूलन से उमगत प्रीतम जात	१०७	भोंका दीजै सम्हारि के मोरी	९



‘त’

तजु अब मानिनी प्रिय मान	९७
तनक तुम धीरे भूलौ लाल	१८
तनक तुम धीरे लाल झुलावो	२८
तनिक धीरे भूलो जी राजकिशोर	५४
तनिक मनहरनी चलो यहि ओर	६०
तनिक धीरे भूलो हो बाँके यार	१००
तेरी बाँकी झुलनि पर वारी रे	११
तेरी बाँकी झुलनि पर बलिहारी	९१

‘द’

दशरथ जू के छैला हो राज	२२
दशरथ राजदुलारे सिया संग	६६
दुलहिनि संग दूल्हा झूलि रहे	१०४
देखु हे नवेली आली झूलन	११६
देखो झूलत राघो डोल	३
देखो राम बने जनु सावन	३०
देखो देखो री हिंडोरा झूलै	४६
देखो देखो री झूलत मिथिलेश	७२
दैं गलवाँही झूलै दोउ आज	५९
दोऊ झूलत दिंडेरे राम सिया	६२
दोऊ झूलै मिलि झूला झुकि	८८
दोऊ जन लेत लतन की ओटें	१०९

‘ध’

धानी रंगादे मजेदार मोरा	११२
धीरा झूलो जी धीरा झूलो	११
धीरे धीरे से झुलावो मेरो	४७
धीरे धीरे हो झुलावो मोरे	७८
धीरे दीजै झुलाय जू	४२

‘न’

नई नई गोरिया	
नई रे सावन नई मेरो	
नए रसिया नई सावन	
नव नागर नेह नहाये	
नवल दोउ झूलत अलिगण	
नवल दोउ झूलत हरे हरे	
नवल दोउ झूलत नवल	
नहुँ नहुँ झूल पहुँ नवल	

‘प’

परसपर झूलन छवि हेरै	
पडल हिंडोरा देखो	
पावस प्रेम प्रगट पुर	
पावस घटा अटा चढ़ि	
पिय हमारी झूलन की अत	
पिय सांवरे सलोने झूला	
पिय लखु हो सावन सु	
पिय लागो सावन मास	
पिय लखो हो सरयू की	
पिया धीरे से झुलावो	
प्यारी झूलन पधारो	
प्यारी चलो न झूलन	
प्यारी पिया संग झूलै	
प्यारी झूलै री आली प्यारे	

‘भ’

भये उनींदे नयन ललन	
भले दोउ लालै लाल लसै	
भीजत कुंजन में दोउ अटके	



## ‘म’

मन मेरो मोह्यो जानकी जीवन	४३
महल पधारो नैना आलस	१२
मेरा बाँका समलिया हरे रंग	५४
मेरी प्यारी सियाजू हिंडोले	५३
मैं जानी सजनी सावन	५६
मैं तोरे संग ना भूलौ बालम	६६
मोरा छाँड़ि दे अंवरवा	१०५

## ‘र’

रमन ऋतु आई आली	३४
रमकि रमकि भूलै नवल	९२
रमके ऋतु पावस सजनी	११३
रसिक दोउ भूलत सरयूतीर	२०
रसिया ना मानै सजनी	५७
राज रंग मानो चढ़ि नवल	२३
राम हिंडारे भूलत सियाजू की	३२
री आली भूलत दोउ मन भावन	१६
रंग मानी जू रंग मानी	१०
रंग भीने पिया प्यारी दोउ	२८
रंगीले पिया प्यारी दोउ	१८
रंगीले तेरी भूलन है अति प्यारी	१९

## ‘ल’

ललित अति कुंजन की घन	३२
ललित ललि लाल अलि	३६
लली लालन दोउ संग भूलै	६९
लसत दोउ श्यामा श्याम	१०२
लाल लली भूलै भूमकि	४५
लाल मोरी अंखियाँ नोंद मुकि	५६

लिये भूलै छत्रीले सुवर	४६
लिये भूलै रसीले सुवर गोरी	९९

## ‘व’

वदन वर विलसत भूलन	३९
वदरवा अरुण रंग छाये	५८
वरसत घन सुख सरसायो	३५
वलिहारी श्री कृष्णला की	९७
बाँकी भुलनि तिहारी मन	५२
विनती लाल मोरी मान	५४

## ‘स’

सखि सुखित सरयू कूल	७७
सखि आज भुलनमां	९८
सखी री सावन आयो	१३
सखी सब भूलन कौ मिल	१८
सजन आज भूला भुलाना	१०६
सजनी भूलत श्यामा श्याम	३३
सजनो सावन सुख सरसावन	३४
सदा भूला मेरे दिलवर	८५
सबहिं चलारी भूला भूलै	२१
सबहिं भुलावो री हिंडारे	२२
सरस सावन सुन्दर सोहैं	३७
सरयू के तीर गढ़ो हिंडोलना	६२
सरयू के तिरवा गढ़ो हिंडोरवा	६३
सरयू के कूल विरचित भूला	७७
सरयू फिनारे कदम जुरि	९२
सरयू कूले भूमकि दोउ	१००
सरयू कूले बना रहे सावन	१०४
सहचरि हरषि भुलावैं	७३

साजन भूलन की विमल वहार	३८
साजन सहित सिय भूलें	४१
साजन धीरे धीरे भूलो	९६
सावन सज सखियन मन	३४
सावन के दिन में शौक से	४३
सावन लागु सुहाई हो	४८
सावन सुहायो सुख नवल	८६
सावन समाज साजि राजे	८६
सावन सिया राम संग भूलत	११२
सिधराम दोऊ वर भूलते	११
सियजू की समता पावन का	२९
सिय पिय दोनी कमकि भुकि	६०
सिय के पिय की छवि देखें	६२
सिय सजि सावन तीज	६४
सियवर भूलें भूमि भूमि	९३
सियजू भूलि रही बगिया में	९४
सिय साजन का रो बांका	१०८
सिया के सजन के भुलाई	११७
सिया प्यारी अति सुकुमारी	३
सिया जू हो भूलत फूल भई	७४
सिया प्यारी अति सुकुमारी	८३
सुनरो सखी यक बात में	५१
सु प्यारे जू सावन की ऋतु	७१
सुनिये सजन रगरी रे	५५
श्यामा श्याम की भुलनि	४८
श्रीसतगुरु के सदनमाँ	८५

‘ह’

हिंडोरना में भूलि रहे सियलाल	९४
------------------------------	----

हिंडोरे कहरत काम करोर	
हिंडोरे कुंवर कुंवरि भूलें	
हिंडोरे पिय प्यारी राजें	
हिंडोरे भूलत सिय सुकुमारी	
हिंडोरे भूलत भरि अनुराग	
हिंडोरे भूलत सिय प्यारी	
हिंडोरे भूलत युगलकिशोर	
हिंडोरे भूलत राजकुमार	
हिंडोरे भूलति जनकलली	
हिंडोरे भूलत राजिवनैन	
हिंडोरे भूलत सियरघुवीर	
हिंडोरे भूलत दोउ सरकार	१०८
हिंडोरे भूलत श्रीजानकीबाग	८४
हिंडोरे भूलें श्री जानकीजान	११
हिंडोरे श्वेत सु भूलन राम	१०१
हिंडोरे भूलत कौशलचन्द्र	१४
हिंडोले भूलति सिय महारानी	
हिंडोले भूलत लाडिलीलाल	१३
हिंडोले भूलत सिया रघुनन्द	१४
हिंडोले भूलत हैं पिय प्यारी	१८
हिंडोले भूलें श्री लाडिली लाल	५३
हिंडोले भूलत प्यारो प्यारी	२४
हिंडोले आली भूलें युगलकिशोर	२४
हिंडोला आज अनोखो रंग	२३
हिय कसकत भूलन भोंक	७५
हेरो हेरो सिया छवि आज	७०
हँस्यो हिय भूलना सियप्यारी	४१



श्री सीतारामाभ्यां नमः  
श्री मते रामानन्दाचार्याय नमः  
श्री मते युगलानन्यशरणाय नमः

# श्री भूलन विहार पदावली

श्रीअग्रअलीजी-पद १

जनकपुर लागत तीज सुहाई ॥

रंग रंगोली अतिहिं छवीलो सब मिलि भूलन आई ।

सावन मनभावन पिय प्यारो अवनी सहज सुहाई ॥

पावन कुंज पुंज सुख वरषत करषत मन बरषाई ।

कंचनखम्भ जड़ित डांडी नग विविध विचित्र बनाई ॥

रेशम डोरि कोरि बनिआई चहुँदिशि जलज जड़ाई ।

लाले बाल लाल रंग भीनी लालन लाल लड़ाई ॥

प्यारी कर गहिकै मंगल गाइ चढ़ाई ।

चारुशिला पिय नैन इसारन भूलन प्रथम सिखाई ॥

भोंका देत लेत सुख पिय को मन्द मन्द मुसुकाई ।

लालहिं पाग लाल शिर चूनरि लाली अति मनभाई ॥

उमगेउ रंग अनंग परस्पर मैन मलार जमाई ।

गावहिं समर रंग भरि भामिनि कोकिल कण्ठ लजाई ॥



ठाकुर हमरे राम मनमोहन अंगन रूप लुनाई ।  
 ठकुराइन मिथिलेश लाड़िली शील सनेह भलाई ॥  
 होड़ा होड़ी मच्यो है हिंडोला शोभा कहि न सिराई ।  
 'अग्रअली' प्रिय दम्पति भूलत जनकलली रघुराई ॥

पद २

हिंडोले भूलति सिय महरानी ।

श्रुतिकीरति उर्मिला माण्डवी चारुशिला गुणखानी ॥  
 रच्यो हिंडोरा नाम लिवावति चतुर सखी मुसुकानी ।  
 सियाजू सकुचि रही नहिं बोलति 'अग्रअली' मनमानी ॥

पद ३

भूलत सीताराम हिंडोरे ।

श्याम गौर अभिराम मनोहर रतिपति के चितचोरे ॥  
 नील पीत वर वसन लसत तन उठत सुगन्ध भुकोरे ।  
 सहचरि हरषि भुलावहिं गावहिं छवि निरखति तन तोरे ॥  
 मन्द मन्द मुसुकात छवीलो रमकन थोरे थोरे ।  
 अति सुकुमारि 'अग्र' की स्वामिनि डरपि गहति पट छोरे ।

पद ४

भूलत सिया राजिवनैन ।

रतन जड़ित हिंडोलना सखि राम सुख के ऐन ॥  
 श्याम अंग पर गौर भलकत दामिनो घन गैन ।  
 मैथिली रघुवीर शोभा निरखि लज्जित मैन ॥  
 नाम पिय को लेहु नागरि ज्यों सखिन मन चैन ।

जानकी नहिं लेति मुख सों देति लोचन सैन ॥  
परस्पर भूलत भुलावत बदत मधुरे वैन ।  
अवधपुर नित केलि दम्पति 'अग्र' आनन्द दैन ॥

पद ५

भूलत राम राजिव नैन ।  
जनकजा सनमुख विराजति तड़ित ज्यों घन गैन ॥  
अतिहिं भूलत मनहिं फूलत रसहिं तोपत मैन ।  
लाल के उर लागि राजति निकष रेखा ऐन ॥  
परस्पर अनुराग दोऊ बदत मधुरे वैन ।  
जाल रन्ध्रनि निरखि वनिता 'अग्र' उर सुख दैन ।

पद ६

सियाप्यारी अति सुकुमारी हिंडोलना में कांई भूलो राज ॥  
अगर चन्दन को बन्यो हिंडोरा मलयागिर को पटा ।  
रेशम डोरि पवन पुरवैया वह सावन की घटा ॥  
प्यारी भूलैं लाल भुलावैं भली बनी सजनी ।  
उड़ि उड़ि अँचरा परत भुजन पर डरपति शशि वदनी ॥  
विपिन प्रमोद लता कुंजन में श्रीसरयू के तटा ।  
सिय प्यारी के भूलना वे निरखति 'अग्र' छटा ॥

पद ७

देखो भूलत राघो डोरु ।

जनकसुता लीन्हें संग शोभित गौर श्याम तन लोरु ॥ ✕  
हीरा पन्ना लारु पिरोजा रतन खचित बेमोरु ।



क्रीड़त राम जानकी दोऊ बजत दुन्दुभी ढोल ॥  
 हँसत परस्पर प्रीतम प्यारी आनन्द बड़ेछ सचोल ॥  
 'अग्रअली' सुन सुनि सुख पावत बोलत मीठी बोल ॥  
 पद ८

ए दोउ भूलत रंग हिंडोरे ।

१) दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी चितवनि में चितचोरे ॥  
 नान्हि नान्हि बूंद पवन पुरवैया फुहियाँ परत थोरे थोरे ॥  
 हरि हरि भूमि लता झुकि आई सरयू लेत हिलोरे ॥  
 हयदल पैदल रथदल गजदल कोट बने चहुँओरे ॥  
 उपवन बाग बिहंगम बोले कोकिल मोर चकोरे ॥  
 वाणी विमल सखी सब गावैं अपनी अपनी ओरे ।  
 नागरि नाम लिवावैं पिय को सियाजू हँसैं मुख मोरे ॥  
 बाजा बजन लगे चहुँदिशि ते अधिक सघन घन घोरे ।  
 'अग्रअली' हरि रूप निहारे चरण कमल करजोरे ॥  
 पद ९

हिंडोरे कहरत काम करोर ।

१) लखु री सखी यह शोभा अद्भुत बाढ़त रंग भुकोर ॥  
 तिरहुतनाथसुता सन्मुख लै राजिवनैनन जोर ।  
 रसिक शिरोमणिश्री रघुनन्दन भूलत अवध किशोर ॥  
 श्री चारुशिलाजू भुज अंशन दुहुँओर ।  
 अपर समाज चहुँदिशि राजत छाई मृदंग टँकोर ॥  
 नाचति गान करत पिकवैनी घन दामिनि लखि मोर ।



युगलचन्द आनन्द अमी हित निरखत 'अग्र' चकोर ॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी-पद १०

आली री ! राघो के रुचिर हिंडोलना भूलन जैए ॥  
 फटिक भीति सुचारु चहुँदिशि मंजु मनिमय पौरि ।  
 गच काँच लखि मन नाच सिखि जनु पाँचसर सु फँसौरि ॥  
 तोरन वितान पताक चामर धुज सुमन फल घौरि ।  
 प्रतिछाँह छवि कवि साखि दै प्रति सों कहैं गुरु हौरि ॥ १ ॥  
 मदन जय के खम्भ से रचे खंभ सरल विसाल ।  
 पाटीर पाटि विचित्र भौरा बलित बेलिन लाल ॥  
 डाँड़ो कनक कुंकुम तिलक रेखैं सी मनसिज भाल ।  
 पटुली पदिक रति हृदय जनु कलधौत कोमल माल ॥ २ ॥  
 उनये सघन घनघोर मृदु भरि सुखद सावन लाग ।  
 बगपांति सुर धनु दमक दामिनि हरित भूमि विभाग ॥  
 दादुर मुदित भरे सरित सर महि उमँग जनु अनुराग ।  
 पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन वाग ॥ ३ ॥  
 सो समौ देखि सुहावनो नवसत सँवारि सँवारि ।  
 गुन रूप जीवन सीव सुन्दरि चलीं भुंडनि भारि ॥  
 हिंडोल साल विलोकि सब अंचल पसारि पसारि ।  
 लागीं असीसन रामसीतहिं सुख समाज निहारि ॥ ४ ॥  
 भूलहिं भुलावहिं ओसरिन्ह गावैं सुगौंड मलार ।  
 मंजीर-नूपुर-बलय-धुनि जनु काम-करतल तार ॥  
 अति भचत स्रमकन मुखनि विधुरे चिकुर विलुलित हार ।

तम तडित उडुगन अरुण विधु जनु करत व्योम विहार ॥ ५ ॥  
 हिय हरषि वरषि प्रसून निरखति विबुध-तिय तन तूरि ।  
 आनन्द जल लोचन, मुदित मन, पुलक तन भरिपूरि ॥  
 सब कहहिं अविचल राज नित कल्यान मंगल भूरि ।  
 चिरजियौ जानकिनाथ जग 'तुलसी' सजीवनि मूरि ॥ ६ ॥

राग सूहो—पद ११

कोशलपुरी सुहावनी सरि सरजू के तीर ।  
 भूपावली-मुकुटमनि नृपति जहाँ रघुवीर ॥  
 पुर नर नारि चतुर अति धरमनिपुन रत-नीति ।  
 सहज सुभाय सकल उर श्री रघुवर पद प्रीति ॥

श्री रामपदजलजात सबके प्रीति अविरल पावनी ।  
 जो चहत सुक सनकादि संभु विरंचि मुनि मन भावनी ॥  
 सबहीं के सुंदर मंदिराजिर राउ रंक न लखि परै ।  
 नाकेस दुर्लभ भोग लोग करहिं न मन विषयनि हरै ॥१॥  
 सब ऋतु सुखप्रद सो पुरी पावस अति कमनीय ।  
 निरखत मनहिं हरत हठि हरित अवनि रमनीय ॥  
 वीरबहूटि विराजहीं दादुर-धुनि चहुँओर ।  
 मधुर गरजि घन वरषहीं सुनि सुनि बोलत मोर ॥  
 बोलत जो चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने ।  
 खग विपुल पाले बालकनि कूजत उड़ात सुहावने ॥  
 बकराजि राजति गगन हरिधनु तडित दि सि दिसि सोहहीं ।  
 नभ नगर की सोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं ॥२॥



गृह गृह रचे हिंडोलना महि गच काँच सुठार ।  
 चित्र विचित्र चहूँदिसि परदा फटिक पगार ॥  
 सरल विसाल विराजहीं विद्रुम-खम्भ सुजोर ।  
 चारु पाटि पटी पुरट की भरकत मरकत भौर ॥  
 मरकत भँवर डाँड़ी कनक मनि-जटित दुति जगमगि रही ।  
 पटुली मनहुँ विधि निपुनता निज प्रगट करि राखी सही ॥  
 बहुरंग लसत वितान मुकुतादाम सहित-मनोहरा ।  
 नव सुमन माल सुगंध लोभे मंजु गुंजत मधुकरा ॥३॥  
 भुंड झुंड भूलन चली गजगामिनि वर नारि ।  
 कुसुँभि चीर तनु सोहहीं भूषन विविध सँवारि ॥  
 पिकवयनी मृगलोचनी सारद ससि सम तुंड ।  
 राम सुजस सब गावहीं सुसुर सु सारंग गुंड ॥  
 सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघरनि बाजहीं ।  
 बहु भाँति तान तरंग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं ॥  
 अति मचत छूटत कुटिल कच छवि अधिक सुंदरि पावहीं ।  
 पट उड़त भूषन खसत हँसि हँसि अपर सखी झुलावहीं ॥४॥  
 फिरि फिरि भूलहिं भामिनो अपनी अपनी वार ।  
 विबुध विमान थकित भये देखत चरित अपार ॥  
 वरषि सुमन हरषहिं उर वरनहिं हरि गुन-गाथ ।  
 पुनि पुनि प्रभुहिं प्रसंसहीं जय जय जानकिनाथ ॥  
 जय जानकीपति विसद कीरति सकल-लोक-मलापहा ।

सुरवधू देहिं असीस चिरजिव राम सुख संपति महा ॥  
 पावस समय कछु अवध बरनत सुनि अधौघ नसावहीं ।  
 रघुवीर के गुनगन नवल नित 'दासतुलसी' गावहीं ॥५॥

श्रीमानदासजी-पद १२

भूलत नृपति किशोर किशोरी ।

विपिन अशोक सुभग सरयू तट हरित भूमि चहुँओरी ॥  
 मध्य महामण्डप भूलन को मणिमय सुभग बन्यो रो ।  
 तामधि भूलत प्रीतम प्यारी संग सखीगन कोरी ॥  
 प्रीतम चारुशिला दिशि राजत 'प्रिया' सिय ओरी ।  
 शान शृंगार सजे नव नागरि नागर रंग भरौरी ॥  
 सन्मुख श्रीमैथिली इसारे लीला सखिन कियोरी ।  
 कमला चन्द्रकलादि रंगीली वीण मृदंग सज्यो रो ॥  
 कोउ गावति कोउ नृत्यति थिरकत राग मलार सुहोरी ।  
 अति आनन्द उमंग तरंगन 'मानदास' सुख सोरी ॥

श्रीनारायणाचार्यजी 'मुनीश'-पद १३

भूलै नवल हिंदोरे, पिय प्यारे संग बनि ठनि श्यामा ॥  
 स्तन जड़ित अति रुचिर हिंदोरा तामें रचना अनेक द्रुम सावन  
 के कुंज बिच, बाजत मृदंग आदि गावति सखी समूह,  
 कोटि काम रति धामा ॥ शीतल सुगन्ध मन्द वायु के  
 प्रसन्न तहँ, बेरि बेरि आपत बलाहक के घुन्द, नान्हीं  
 नान्हीं बुन्दियत मरतन के समय, छवि अति शोभित  
 सियरामा ॥ मुनीश को नवाय ईश को मनाय के 'मुनीश'



बार-बार विनय करत करजोरी-जोरी, नृपति किशोर  
औ किशोरी जू आनन्द रहैं, यह हमार मनकामा ॥

श्रीपर्वतदासजी—पद १४

आली री भूलत राजकुमार ॥

चहुँओर तरुणी मन्द गमनी सज्यो सुभग सिंगार ।  
खम्भ रुचिर कदम्ब के बेलना मयार सुद्वार ॥  
कनक पटुली जड़ित हीरा जड़े सुभग सुनार ।  
सहज सहजा भूमि गावैं किंकिणी भनकार ॥  
राग साधे विकट गति सुर सप्तताल सम्हार ।  
सोहनी आसावरी अरु भैरवी केदार ॥  
मालती मल्लार कौशिक कान्हरो असवार ।  
बजत मुचंग मृदंग वीणा वेणु अरु कठतार ॥  
मेह वरषै रस भरे रस फूल बारम्बार ।  
लाल से लपटात प्यारी डरपि अति सुकुमार ॥  
छवी युगलकिशोर की लखि लेति अलि बलिहार ।  
चिरजिवो 'पर्वतदास' पति सब जगत प्राण आधार ॥

श्रीकृपासखीजी—पद १५

भोंका दीजै सम्हारि के मोरी सारी न लटके ।  
ई सारी मिथिला से आई चाँद सूरज दोउ भटके ॥  
सबन कुँज द्रुमडार कँटीलो कहीं छोर जनि अँटके ।  
'कृपासखी' इनकी चंचलता नैननि में कछु खटके ॥

श्रीकृपानिवासजी—पद १६

गुमानी भूलन की रितु आई ।

सावन सरिस सुहागिनी के सुख साजन संग सुहाई ॥  
 प्यारे प्रीतम प्रेमनगर सौं नीकी वस्तु विसाई ।  
 पावस पैठ काम कंचन सौं कामिनी करत कमाई ॥  
 सूख सुरेश भये अब दानी पल-पल घन बरषाई ।  
 संमत मास पपीहा बोलत तिनकी प्यास मिटाई ॥  
 कहत सिया सुन्दर बालम तुम दूर करौ निठुराई ।  
 'कृपानिवास' आस प्यारी की मिलि रसरंग मचाई ॥

पद १७

भूलन पधारो जी म्हारो राज ।

कारी पीरी घटा घन उमड़ि घुमड़ि आये बिजुली चमकत आज ॥  
 सुनि बानी रससानी प्यारे चले भूलन के काज ।  
 'कृपानिवासअली' की जीवन गरे लाग तजि लाज ॥

पद १८

भूलो जी भूलो जी राम रस के हिंडोरे  
 रस के खंभ रसीली डारी रस के बने हिंडोरे ॥  
 रस रस गावत रस उपजावत रस के बने घनघोरे ।  
 'कृपानिवास' रसीली सखियाँ रस बस करति निहोरे ॥

पद १९

रंग मानी जू रंग मानी ! थारी रमक भूलन सुखदानी ।  
 श्यामसुन्दर म्हारी छतियाँ धड़कै नैनन बरसत पानी ॥



मदन मनोरथ उपजत हिय सों पिय सों सिय बतरानी ।  
‘कृपानिवासी’ हँसि रस सानी रघुवर उर लपटानी ॥

पद २०

धीरा भूलो जी धीरा भूलो ! म्हारी छतियाँ धड़कि काँई हूलो ।  
वार छूटिगै हार टूटिगै गिरिगै अंग दुकूलो ॥  
राम रसिक रस सहजक लीजै नाजुकता समतूलो ।  
‘कृपानिवासी’ कहत छबीली छयल मया जनि भूलो ॥

पद २१

तेरी बांकी भुलनि पर वारी रे  
भूलन जोर हिया बिच कसकत मानहु हूल कटारी रे ॥  
नैन कटाक्ष वान धनु भृकुटी जुलफन जाल सुधारी रे ।  
‘कृपानिवासी’ भुलनि मन लीता रहि गई ठाढ़ि की ठाढ़ी रे ॥

पद २२

भूलत सियावल्लभ लाल ।  
लाल कंचन खंभ सुन्दर ललित डांडी लाल ॥  
लाल भूषण अंग झलकत लसत चीर सु लाल ।  
लाल दोउ के बदन सुन्दर अधर बीरी लाल ॥  
लाल सखियाँ लाल गावैं सब झुलावैं लाल ।  
मोर हंस चकोर कोयल भनत बानी लाल ॥  
लाल रीझत लाल ऊपर परस्पर सब लाल ।  
‘कृपानिवास’ सुलाल जोड़ी निरखि नयन निहाल ॥

पद २३

भुलावत राम रसिक पटरानी ।

कर गहि डोर चकोर दगन करि चितवत चन्द्र लुभानी ॥  
 नाह नेह को निरखि नागरी नैनन में मुसुकानी ।  
 'कृपानिवास' विलासिनि प्यारी प्रीतम को रस दानी ॥

पद २४

आज डोल रसिकमणि भूलहीं ।

मणिगन जटित पुरट वर खंभा विशेष मोमति भूलहीं ॥  
 मिथिलापुर सुरधाम हरन दुति मधु रितु बहुविधि फूलहीं ।  
 रमणी वृन्द चहूँदिशि राजत पिय प्यारी अनुकूलहीं ॥  
 जहाँ मणि मुकुट जानकी दुलहिनि राम नवल दिन दूलहीं ।  
 'कृपानिवास' महा छवि सागर नैन मीन रस कूलहीं ॥

पद २५

सियराम दोऊ वर भूलते ।

गावत तान मान रस होरी विष्णु रमा कौ तूलते ।  
 श्रीकमला विमलादि भूलते निरखि हरषि विन शूलते ,  
 'कृपानिवास' अली मन भावन पीवत यह रस मूलते ॥

पद २६

महल मधारो नैना आलस भरे ।

लोचन फेरि हेरि हँसि नागर मनमथ पाँव परे ॥  
 भूमकि चले जनु मदन भूमते सखियन बाँह धरे ।  
 छूटत छवि की छाया अछा चढ़ि मधुर गान उचरे ॥



बरसत सुमन सुगन्ध फुहारे सेज भवन उधरे ।

‘कृपानिवास’ श्रीजानकीवल्लभ रैन सैन सु ढरे ॥

श्रीरामसखेजी-पद २७

सखी री सावन आयो राघोजी रच्यो है हिंडोल ।

देखिये तो जाय प्रमोद बन मणिमय जड़ित हिंडोल ॥

सखन सहित तहँ भूलत पहिरे नील रंग चोल ।

‘रामसखे’ लाल मिलन को हिय बिच मदन कलोल ॥

पद २८

भूलत नवल दशरथ लाल ।

सरयू तीर प्रमोदबन में लिये संग सिय बाल ॥

अरुण मणिमय हेम डांडी रतन खंभ विशाल ।

गुही रेशम डोरि मोतिन पटुली जटित प्रवाल ॥

लखि विचित्र हिंडोल विमला नटति दै करताल ।

हेरि हरि मुख देति भोंका परी छवि के जाल ॥

प्रेम बश लखि गही प्रीतम बोलि वचन रसाल ।

‘राम सखे’ विलोकि या रस को न होत निहाल ॥

श्रीरामचरणदासजी-पद २६

हिंडोले भूलत लाडिली लाल ।

नील सघन पल्लव तरु शोभित जनु वितान घन माल ।

गरजहिं मधुर-मधुर पिय मन लै कोकिल शब्द सुराल ॥

वर्षत मेह भरत तरु अमृत बोलत मोरि रसाल ।

श्री सरयू उमगति उज्ज्वल जल रहरि उठत मनो जाल ॥

त्रिविध पवन निन्दक मारुत चल पट फहरात सुलान ।  
 पद कर भूषण तड़ित नखत शशि निन्दत धनु सुरपाल ॥  
 बहु सखि संग संग भूलत हैं बहुत भुलावति बाल ।  
 गावहिं मधुर लाल मन मोहैं करहिं विविध रस ख्याल ॥  
 मनहुं मदन रति के व्याहन कहैं साजि सकल निज जाल ।  
 लाल विहार देखि बन फूल्यो विसरि गयो सब हाल ॥  
 यह रस रासि रसिक कोइ सखि सोइ निशि दिन रहत निहाल ।  
 'रामचरण' यह छाँड़ि कहै कछु कारिख तेहि मुख भाल ॥

पद ३०

हिंडोले भूलत सिया रघुनन्द ।

चलु री सखी नैनन फल लीजै देखि देखि दोउ चन्द ।  
 सावन घन घमण्ड भुकि आयो मधुर-मधुर भरि घोरे ।  
 मधुर मधुर मृदंग सहनाई बोलहिं नाचहिं मोरे ॥  
 भूलहिं रघुवर जनकनन्दिनी सखियाँ भुलावहिं जोरे ।  
 भूलहिं भूलि जाहिं सरयू में भुकि-भुकि छुवहिं हिलोरे ॥  
 अति सुन्दर बन बन्यो हिंडोरा संग समाज सब भूलैं ।  
 इत उत भुकि भुकि भूलत हिंडोरे मारहिं गेंदन फूलैं ॥  
 भूलहिं संग भुलावहिं बहु प्रिय मधुर मधुर स्वर गावैं ।  
 'रामचरण' नभ सुरतिय नाचहिं गाय सुमन भरि लावैं ॥

पद ३१

हिंडोरे भूलत कौशलचन्द ।

बाजहिं बाजन मधुर गान ध्वनि दशों दिशि होत अनन्द ॥



सरयू तीर सुभग शृङ्गार बन ललित परन फल फूले ।  
 गुञ्जहिं भ्रमर मधुर स्वर कोकिल बोलहिं पिय अनुकूले ॥  
 फूलन केर विचित्र हिंडोरा लसत फूलमय डोरी ।  
 फूलन के युग खंभ मनोहर रघि पचि मदन सच्योरी ॥  
 फूल मुकुट पट लसत राम के फूलन के सिय सारी ।  
 नख शिख लौं फूलन के भूषण दम्पति अंग सँवारी ॥  
 फूल तरंग उठत सरयू की फूल वरषि घन घानी ।  
 'रामचरण' सखि सब शृङ्गार किये फूल गानमय बानी ॥

श्रीप्रियासखीजी-पद ३२

अब चलु भूलन प्यारे पियरवा, गरजन घुमरन लागे बहरवा ।  
 नान्हीं-नान्हीं बूँद पवन पुरवैया सरयू सरित तहँ लेत लहरवा ॥  
 रमकि भ्रमकि अलि नाचन लागी बाजन लागे ताल तवरवा ।  
 'प्रियासखी' सब सुरंग बसन रचिरतन जडित तहँ रंग मंदिरवा ॥

पद ३३

भूलन पधारौ जी श्याम सुजान ।  
 अतर चुचाती अलकैं सोहैं हरत मदन कौ सान ॥  
 रंग महल ते निकसैं दोऊ कोटि उदै जनु भान ।  
 कोउ नाचत कोउ यंत्र बजावत कोउ उचरत मृदु तान ॥  
 कोउ कर चँवर छत्र कोउ लीन्हैं कोउ लिये पानन दान ।  
 'प्रियासखी' भुज अंशन दीन्हैं बतियाँ करत लगि कान ॥

पद ३४

भुरुन्दा तेरी अंग-अंग माधुरी जोर ।

सुरंग पाग मोतिन की कलंगी हँसि बोलनि चितचोर ॥  
 भृकुटी कुटिल नैन रतनारे हेरनि बंक मरोर ॥  
 'प्रियासखी' दोउ अवधबिहारी वलिहारी तन तोर ॥

पद ३५

री आली भूलत दोउ मनभावन, सुन्दर रूप सोहावन ।  
 दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी सावन तीज सोहावन ॥  
 भोंका देत परस्पर दोउ मिलि पियत अधर रस पावन ।  
 अलक भलक अली मन ललके सुरंग वसन चित चावन ॥  
 अलि गुन गावति यंत्र बजावति काम तान उपजावन ।  
 'प्रियासखी' सरयू तट कुंजें बन प्रमोद सुख दावन ॥

पद ३६

भूलत राजकैशोर री, अलि निरखि दृगन की कोर री ।  
 दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी अंग-अंग छवि चितचोर री ॥  
 नान्हि नान्हि बुन्दियन बरसिं मेहरवा बिजुरी चमकै जोर री ।  
 पियजू के भीजै पचरंग पगिया सियजू के वसन निचोर री ॥  
 बन प्रमोद के ललित लतन में बोलत मोर चकोर री ।  
 चहुँदिशि अली खड़ी गुन गावैं मेघ मलार मरोर री ॥  
 नागरि नाम लिवावति पिय कौ सिय जू हँसी मुख मोर री ।  
 'प्रियासखी' दोउ राज-दुलारे नव जोवन के जोर री ॥

पद ३७

हिंडोरे भूलत सिय सुकुमारी ।  
 रघुनन्दन मृदु मंजु कंज कर भोंका देत सम्हारी ॥



चन्द वदन पर अतकैं भूतकैं मनु नागिन सी कारी ।  
 ललित कपोलन भूमक भूलकैं ललकैं लाल निहारी ॥  
 सावन घटा घुमड़िघन बोरैं कोउ सखि देत मृदंग टंकोरी ।  
 नृत्यत सहजा प्यारी कोउ सखि लेत तान सुखकारी ॥  
 छूटत अतर गुग्गुलु फुहारी 'प्रियासखी' बलिहारी ।

श्रीसरयूसखीजी-पद ३८

पिय हमारी भूलन की रितु आई ॥  
 बिजुरी चमकत घन गरजत है पावस खबर जनाई ।  
 दादुर बोलत मोर भिंगारत पपीहा शब्द सुनाई ॥  
 हरी हरी भूमि सुहावन लागत पवन चलत पुरवाई ।  
 रसिक शिरोमनि राजकुँवर बर भूला देउ झुलाई ॥  
 मैं भूलौं था भोंका देउ पिय संग सखी हवाई ।  
 'सरयूसखी' यह बात सुनी पिय उर आनन्द न समाई ॥

पद ३९

भूलन पधारौ अवध विहारी ॥

रूप रासि गुन शील उजागरि संग सिया सुकुमारी ।  
 चहुँदिशि सखी सहेली संग में गावत राग मलारी ॥  
 बिजुरी चमकत घन गरजत है घटा घुमड़ रही कारी ।  
 मनी जटित भूला पर बैठे उर आनन्द अति भारी ॥  
 तरु तमाल संग कनकलता मनो छवि सिंगार मनहारी ।  
 'सरयूसखी' लखि लखि यह शोभा कोटिन रजिपति बारी ॥

पद ४०

रंगीले पिया प्यारी दोउ भूलन खरे ।

अंग अंग भूषन सजे मनोहर दोउ गलबांह धरे ॥  
 अलबेली अलकै मुख ऊपर चितवन चित्त हरे ।  
 सहे वसन चुवत रंग भीनै रतिपति मान हरे ॥  
 मनिन जटित कंचन के खंभा डांडी रतन जरे ।  
 'सरयूसखी' अलिगन चहुँ गावत उमगत सप्त सुरे ॥

पद ४१

हिडोले भूलत हैं पिय प्यारी ॥

पीत वरन पीताम्बर पिय कौ नील वरन सिय सारी ।  
 दिये गलबांह बैठे रंग भीने घन दामिनि अनुहारी ॥  
 गावत राग मलार मनोहर सखी ठाढ़ी सुकुमारी ।  
 'सरयूसखी' सिय पिय की छवि पर कोटिन रतिपति वारी ॥

पद ४२

सखी सब भूलन को मिल आई ।

अंग अंग भूषन सजे मनोहर लागत परम सुहाई ॥  
 गजगमनी मृगसावक नयनी शोभानिधि छवि छाई ।  
 चन्द्रकला कहि राजकुँवर तुम सिय कौ देउ झुलाई ॥  
 हम भूलैं तुम भोंका देउ पिय रतिपति मान लजाई ।  
 'सरयूसखी' सिय पिय छवि निखरत आनन्द उर न समाई ॥

पद ४३

तनक तुम धीरे भूलौ लाल ।



डरपत हैं सिया अति सुकुमारी रमक हिंडोरना की चाल ॥  
 दामिन सी दमकत चहुंदिशि तै शोभित हैं बहु बाल ।  
 उमड़ि घुमड़ि घन बरसन लागौ गावत गीत रसाल ॥  
 नील पीत पट सोभित दोउ तन मानहुं छवि के जाल ।  
 नख शिख भूषन सजे मनोहर झलकत मोतिन माल ॥  
 जरकस पाग पिया सिया सिर सोहत तुरा कलंगी हाल ।  
 सीस चन्द्रिका फूल मनोहर बेंदो शोभित भाल ॥  
 रंग महल बिच जुगल हिंडोरा शोभा बनी हैं विसाल ।  
 'सरयू सखी' सब पुरजन ठाढ़े निरखत होत निहाल ॥

पद ४४

रंगीले तेरी भूलन है अति प्यारी ॥

भूलन झुकन हँसन लालन की चितवन नैन कटारी ।  
 श्याम गौर दोउ अंग मनोहर रूप राशि उजियारी ॥  
 कहत सखी तुम धीरे भूलौ डरपत सिया सुकुमारी ।  
 'सरयूसखी' ये युगल कुँवर पर कोटिन रतिपति वारी ॥

पद ४५

जरा भूलो न लाला हमारे संग ।

तुम प्रीतम हम प्यारी बनो हैं तुम दीपक मेरे नैना पतंग ॥  
 तुम रसिया हम आली छत्रीली लागो है नेह पिया तुम्हरे अंग ।  
 'सरयूसखी' भूलन को निकसी बाजै मृदंग तहँ उठै तरंग ॥

श्रीयुगलप्रियाजी-पद ४६

हिंडोरे भूलैं श्री जानकी जान ॥

युगल प्रकाश कुञ्ज कंचनमय विपिन प्रमोद लतान ।  
 श्याम बदन पर जुलफै छोड़े मन्द मन्द मुसुक्यान ॥  
 प्यारी संग समाज अलीगन लेत नई नई तान ।  
 'युगलप्रिया' वारत तन मन धन करति निछावरि प्रान ॥

पद ४७

रसिक दोउ भूलत सरयू तीर ।

रघुनन्दन अरु जनकनन्दिनी श्यामल गौर शरीर ॥  
 राजत छविमय रतन हिंडोरा तापर बोलत कीर ।  
 गावहिं छवि अवलोकि प्रेम भरि चहुँदिशि सखिन की भोर ॥  
 बाजत वीन मुचंग उवंग मृदंग ताल अति धीर ।  
 'युगलप्रिया' अति सुख बरसत जब लेत तान गंभीर ॥

पद ४८

किशोरी संग भूलत नवल किशोर ।

दशरथनन्दन जनकनन्दिनी सुन्दर श्यामल गौर ॥  
 सरजू तीर सुखद प्रमोदवन विश्वभूमि शिरमौर ।  
 तामधि मणिमय रचित हिंडोरा लसत हेममय डोर ॥  
 चन्द्रकला सखि हरषि झुलावति विमला ढोरति चौँर ।  
 'युगलप्रिया' यह मधुर केलि लखि सुधिबुधि सब भई भोर ॥

पद ४९

पिय सांवरे सलोने भूला भूलो ।

जैसी ये रंगभरी सिय प्यारी अलिगन त्यों सम तूलो ॥  
 तैसी ये रंगमहल छवि अद्भुत वन प्रमोद सुख मूलो ।



श्रीसरयू मणि जटित घाट दोउ कंज प्रफुल्लित फूलो ॥  
सुनत हिंडोर कुंज ढिग आये पिय प्यारी दिल दूलो ।  
'युगलप्रिया' के जीवन धन दोउ सदा रहो अनुकूलो ॥

पद ५०

अलि फूलन हिंडोरे भूलैं जनक किशोरी ।  
फूलन की चौकी राजैं फूलन की डांड़ी भ्राजैं,  
फूलन को छतुरी सोहै फूल खंभे डोरी ॥  
फूलन के तकिया प्यारी फूलन बिछौना वारी,  
पिय अंस भुजधारी राजत जोरी ॥  
फूलन सिंगार किये अलिगन लखि जीयै,  
गावति सरस राग प्रमुदित गोरी ॥  
विपिन प्रमोद बागे फूल कुञ्ज अनुरागै,  
'युगलप्रिया' चकित लखि तृन तोरी ॥

पद ५१

सबहिं चलोरो भूला भूलैं, श्याम रंग हिंडोरे ॥  
सरयूतीर सुखद मणि महलैं, अतर गुलाब सुगंधन चहले,  
बन प्रमोद चहुँओरे बोलत, कोकिल मोर चकोरे ॥  
कंचन खंभ जड़ाऊ राजैं, छतुरी डांड़ी अद्भुत भ्राजैं,  
पटुली रंग विरंग विराजैं, निरखतहीं चित चोरे ॥  
मन्द मन्द मुसुकावत प्यारे, प्यारी के अंशन भुजधारे,  
'युगलप्रिया' करसों करजोरे, रतिपति को मद छोरे ॥

पद ५२

सबहिं झुलावो री हिंडोरे, अलवेली राजकुमारी ॥  
 सावन तीज सोहावन राजे, विविध भांति के भूषण साजे,  
 अंगन प्रति कोटिन रति बारिय, प्राण करौं बलिहारी ॥  
 कमला विमला चँवर दुरावै, गान कला सुमृदंग बजावै,  
 चन्द्रकला कछु तान सुनावै, लाल देत करतारी ॥  
 सुख समुद्र श्रीजनकदुलारी, रधुनन्दन की प्राण पियारी,  
 'युगलप्रिया' तन मन धन वारी, बारि बारि डारी ॥

पद ५३

हिंडोरे कुँवर कुँवरि भूलै । मेरो हियरा लखि फूलै ॥  
 अतिहिं सुघर उपमा न पैयत वर भलोइ कहत कवि मति न लहत  
 जहँ चिन्तामणि भूमि द्रुम भूमि भूमि रहि छवि, श्रीसरयूकूलै ॥  
 अतिहिं सोहाई माई अवध लोगाइ आई तेहि समता को रति  
 रंचक न पाइ निज, परिकर सम तूलै ॥ गावैं सु बजावैं अनुराग  
 को बढ़ावैं राग रागिनी जमावैं प्राण प्राणनि रिझावैं लाल  
 चन्द्रकला दिशि हेरि अति सुख पावै, सियप्यारी सुख मूलै ॥  
 भूला को लगाई मणि जटित प्रवाल भाई द्रुमन सोहाई पटुली  
 लगाई सुखदाई, रेशम रजु मूलै ॥ 'युगलप्रिया' झुलाई दंपति  
 रसिकराय भोंका दै मुदित मन सुख न समाई अनुपम छवि  
 छारति काम को लजाई' ये दोउ रसिया दिन दूलै ॥

पद ५४

दशरथ जू के छैला हो राज भूला भूलो ।



तू तो रंगीला पिया हौं तो रंगीली और रंगीली सखी समतूलो॥

रंगभरी सरयू उमड़ी है रंग विपिन सब फूलो ।

‘युगलप्रिया’नवरङ्ग साज सब लखि प्रीतम अनुकूलो ॥

श्रीजनकराजकिशोरीशरणजी ‘रसिकअली’-पद ५५

हिंडोला आज अनोखो रंग ।

सावन तीज सुहागिनि सियजू भूलत प्रीतम संग ॥

कनकभवन आन्दोलकुंज बिच छाई तान तरंग ।

विमला कमलामणिकलादिक भोंका देत उमंग ॥

सारंगी स्वर मण्डल वीणा भाँभ मृदंग उपंग ।

आनंद छाये बजावत अलि बहु कोउ गति लेत सुदंग ॥

इत गरजत घन उमड़ि घुमड़ि नभ चमकत दामिनि संग ।

‘रसिकअली’ सिय पिय विलास लखि मोहे रती अनंग ॥

राग सोरठ-पद ५६

राज रङ्ग मानो चढ़ि नवल हिँडोरना ॥

सावन की तीज आजु रीझि रीझि गावैं अलि,

तान रङ्ग छावैं मृदु मृदङ्ग टकोरना ॥

उवटि अन्हाय सोंधो अञ्जन फुलेल पान,

वसन सुरङ्ग मणि भूषण सजोरना ॥

इत घन घटा घोर दामिनी दमङ्के जोर,

चहुँदिशि बोले मोर चातक चकोरना ॥

विपिन प्रमोद शोभा देखि देखि मन लोभा,

पावस द्रुमन गोभा नव छवि छोरना ॥

‘रसिकअली’ के प्राण प्यारे रघुलाल सिधा,  
रमक भमक भूलै हूलै चित चोरना ॥

राग मल्हार-पद ५७

भूलत रसिकमणि रघुनन्द ।

संग सिय अलवेलि नागरि वदन छवि बहु चन्द ॥  
स्तन जड़ित हिँडोलना लखि सूर शशि द्युति मन्द ।  
‘रसिकअलि’ अलिगन भुलावत मगन छवि के फन्द ॥

राग-सूहो ठुमरी-पद ५८

हिँडोले आली भूलै युगल किशोर ॥

पीत नील अम्भोरुह से तनु छवि मकरन्द न थोर ॥  
अरस परस रस छके छवीले रति मनमथ चितचोर ।  
जनकलली रघुलाल सलोने धन दामिनि द्युति जोर ॥  
विपिन प्रमोद मही हरियाई द्रुम फूले चहुँओर ।  
बोलत विहँग सोहावने सखि चातक मोर चकोर ॥  
तैसेइ सजल जलद नभ छाये त्रिजुरी चमक चहुँओर ।  
शीतल मन्द सुगन्ध पवन हिय बाढ़त मदन मरोर ॥  
छूटे कच कम्पत तन प्यारी प्रीतम रंग भकोर ।  
सूहे वसन सुहावने तन मचकन घेरत छोर ॥  
नाचत गान करत पिकवयनी छाये मृदंग टँकोर ।  
‘रसिकअली’ लखि युगल रूप रस नहिं लागत दृगकोर ॥

पद ५९

हिँडोले भूलत प्यारो प्यारी ।



नव यौवन गुन रूप नये दोउ रघुवर जनकदुलारी ॥  
 अरुन वसन वर लसत दोउन तन मनि भूषन छविकारी ।  
 इत प्यारी की हलत चन्द्रिका पिय कलँगो छवि भारी ॥  
 मचकै लेत हिचकि दोउ गति सों पग नूपुर भनकारी ।  
 गावत अली मलार राग रुचि सोउ गति लेत सुधारी ॥  
 कनकभवन मुद मंगल शोभा नित उछाह रसकारी ।  
 'रसिकअली' वारत तन मन धन निरखि निरखि बलिहारी ॥

पद ६०

गावै रस भरी तान, प्यारो प्यारी को झुलावै ॥  
 कनक भवन में कनक हिंडोरा रवि शशि ज्योति लजावै ।  
 चहुँदिशि ललित वितान बादले भालरि झुमका सुहावै ॥  
 इत घन गरजत रिमिझिमि वरषत मृदु मृदंग धुनि छावै ।  
 'रसिकअली' सिय प्रीतम ऊपर वार वार बलि जावै ॥

श्रीविश्वनाथसिंहजी-पद ६१

हिंडोरे भूलत भरि अनुराग ।  
 सियजू की भीजत सुरंग चून्दरी सुभग राम शिर पाग ॥  
 गावत राग मलार परस्पर छवि छहरत बन बाग ।  
 'विश्वनाथ' छवि निरखत हरषत सरसत सरस सोहाग ॥

श्रीजानकीरसिकशरणजी 'रसमाला' ध्रुपद-६२

आजु री निहारु सखी दम्पति आनन्द भरे,  
 ललित हिंडोरे भूलै सोभा सरसाए हैं ।  
 सुरंग वसन मणि भूषण लसत अंग,

अंगन निहारि रति कामहू लजाए हैं ॥  
छूटी अलकावली सु दर्पन से गण्डन पै,  
मुखकंज हेरि मानौ भौर भीर छाए हैं ।  
वीरन सों लाली मुख बोलत रसाल बैन,  
नैन सैन पाइ 'रसमाला' हू झुलाए हैं ॥

पद ६३

भूलत सिय पिय आज हिंडोरे ।

घन गरजत विजुरी अति चमकत बरसत रिमझिम बोलत मोरे ॥  
ज्यों ज्यों प्रीतम रमक बढ़ावत सिय डरपत पकरत पट छोरे ।  
'रसमाला' विमलादि सखी सब नाचत थेइ थेइ बोलत मोरे ॥

पद ६४

हिंडोरे भूलत सिय प्यारी ।

सरयू तीर हिंडोल कुंज बिच सुरतरु को डारी ॥  
प्रीतम रमक बढ़ावत गावत करि अलाप चारी ।  
डरपति लली दसन रस लागहि हँसति सखी सारी ॥  
बैठी पिय भरि अंक लीन सिय बड़े प्रमोद भारी ।  
'रसमाला' यह रस विनोद लखि रतिपति बलिहारी ॥

पद ६५

हिंडोरे भूलत युगल किशोर ।

श्याम गौर मनहरन ललन दोउ अंग अंग अलि चितचोर ॥  
भूषण वसन सरस रस छवि लखि उमगत जोवन जोर ।  
चरवत पान परसपर दोऊ निरखत दृग की कोर ॥



हँसि हँसि अली मुदित मन गावहिं भोंका दै दुहुँओर ।  
'रसमाला' छवि निरखि दुहुन की वारति काम करोर ॥

पद ६६

हिंडोरे भूलत राजकुमार ।

अंश धरे भुज जनकलली के गावत मेघ मलार ॥  
वोरी देत ललन हँसि सियमुख निरखत अंग उदार ।  
तैसेहिं सिया खवावति पिय को निरखि वदन सुखसार ॥  
सिय के भूषण लाल सँवारत सियजू पिय उरहार ।  
'रसमाला' दम्पति छवि निरखति ठाढ़ी अली अपार ॥

पद ६७

हिंडोरे भूलति जनकलली ।

प्रीतम के संग कनक हिंडोरे भोंका देति अली ॥  
कुसुमी वसन पहिरि मणि भूषण पिय संग लगति भली ।  
मनहुँ नील पंकज के ढिग एक फूली चम्पकली ॥  
भूलत आप झुलावत सखियाँ विहँसत छैल छली ।  
'रसमाला' पिय वदन चन्द छवि निरखत मति न चली ।

पद ६८

हिंडोरे भूलत राजिव नैन ।

संग लिये सिय को अलवेली बोलत मधुरे बैन  
कबहुँ पान खवावत सिय को सिय पिय को सुख दैन ।  
भोंका लेत निरखि मुख की छवि होत दुहुन मन चैन ।  
विमलादिक चहुँओर सखी सब भोंका दै सुख दैन ।

‘रसमाला’ मधुरे सुर गावहिं निरखि वदन सुख ऐन ॥

पद ६६

तनक तुम धीरे लाल भुलावो ।

डरपति हैं सुकुमारि किरोरी डोरी मधुर हलारो ॥

रचि वीरी निज करन खरावो शोतल विजन डुलावो ।

अपने नैन चकोरन सियमुख इन्दु सुधा छवि प्यावो ॥

सोरठ गौंड मलार सोहावन मधुर सुरन कछु गावो ।

‘रसमाला’ तुमहूँ संग भूतो नैना सकल करावो ॥

पद ७०

हिंडोरे भूलत सिय रघुवीर ।

श्याम गौर अभिराम राम सिय संग सखिन की भीर ॥

अंग अंग भूषण सजे मनोहर पहिरे नूतन चीर ।

चर्वत पान हँसनि चितवनि लखि उठति मनोभव पीर ॥

गावहिं गीत अली विमलादिक भोंका दै अति धीर ।

‘रसमाला’ दम्पति छवि ऊपर वारिय तन मन हीर ॥

पद ७१

रंग भीने पिया प्यारी दोउ भूलत हिंडोर ।

सब सखियाँ झुलावैं गावैं लखि तृण तोर ॥

उत पगिया जड़ाउ शिर कलँगी सजोर ।

इत चन्द्रिका झुकी है थिर दामिनी उजोर ॥

सोहैं मोतिन की माल उर वसन उजोर ।

कल कानन कुंडल जुलफन की मरोर ॥



मुख पान की ललाई छाई दशन उजोर ।  
 मन हरन बुलाक नक बेशरि हिलोर ॥  
 दोउ करत परस्पर बतियां न थोर ।  
 नेह भरी प्यारी चितवनि लखित किशोर ॥  
 घन मधुर मधुर धुनि गरजत घोर ।  
 चलती है पुरवाई वरषत थोर थोर ॥  
 द्रुम बोलत पपीहा पिक करती है सोर ।  
 इत सरयू उमड़ि तैसी लेति हैं हिलोर ॥  
 दोउ आनन्द के कंद रहे भूलते बहोर ।  
 हँसि हँसि निरखत 'रसमालिका' की ओर ॥

श्रीदम्पतिअलीजी—पद ७२

भूलत सियवर राज हमारे ।

अंशन बांह परसपर धारे, भनन भनन नूपुर भनकारे ॥  
 शिरन क्रीट चन्द्रिका सँवारे, कोटि भानु शशि निन्दनिहारे ।  
 मुक्तामाल गले बिच धारे, घन दामिनि बिच दमकत तारे ॥  
 श्याम गौर छवि अमित अपारे, नील पीत अम्बरन सँवारे ।  
 कुण्डल श्रवन भूमका न्यारे, छूटे अलक वदन सुकुमारे ॥  
 गरजत वरषत बूंद फुहारे, पपिहा पिउ पिउ करत पुकारे ।  
 भोंका देत अलीगन सारे, 'अलिदम्पति' मन मोद अपारे ॥

श्रीकाष्ठजिह्वास्वामी 'देव' पद ७३

श्रीसियजू की समता पावन का चाहसि द्वै दिन के सावन ॥  
 नित करुणा रस धारा वरषति सिय हिय ताप नसावन ।

तू ऊपर को ताप नशावै सोउ कबहूँ तरसावन ॥  
 पंक बढ़ावन तूँ सियजू तो जग को पंक बढ़ावन ।  
 गरजवन्त तूँ सिय अलगरजिन जन की गरज पुरावन ॥  
 तेरे घनश्यामहिं दक्षिन को मारुत प्रवल उड़ावन ।  
 सियजू के घनश्याम अकम्पन हिय अनुराग बढ़ावन ॥  
 सिय दामिनि घनश्याम राम जू मिलिकै भये सोहावन ।  
 'देव' सार अब निसरिहिं जैसे परत दूध में जावन ॥

पद ७३

देखो राम बने जनु सावन, सिय लगी रंग बढ़ावन ॥  
 सियवर की मोतिन की माला सो वग पाँति लजावन ।  
 इन्द्रधनुष सिन्दूर सिया को घन रस को बरषावन ॥  
 पछिलो पौन सो सन्त विचारी श्याम घटा प्रगटावन ।  
 रवि बिनु कवि बुध मिलिकै लागे रस की झड़ी लगावन ॥  
 सियजू उत्तर दिशि की दामिनि राम सरूप लखावन ।  
 चमकिं भमकिं सो निज दासन के अन्तर जोति जगावन ॥  
 ब्रह्मदेवहूँ यह सावन को करत निरन्तर ध्यावन ।  
 सियाराम जू जनम-जनम को जिय की जरनि मिटावन ॥

पद ७५

अवध बाग जस नन्दन तहँ ऊँचो श्रीखण्ड ।  
 रतन हिंडोला तहँ परयो जामें कंचन दण्ड ॥  
 जगमग रतन अनेकन बाग बग कंचन पीठ ।  
 नाद विन्दु मण्डल लसै जहँ पहुँचत नहिं दीठ ॥



तापर सियवर राजत जैसे दामिनिवन्त ।  
 दोउ दिशि प्रेम भुलावत साजत सुरत इकन्त ॥  
 राग समय मण्डल बँध्यो भरन लगे रस बूँद ।  
 रोम रोम रस भीनत मिटे ताप दुख द्वन्द ॥  
 दोउ परस्पर अमिय से बनि रहे गर के हार ।  
 सुमनन की वर्षा भई गरजनि की बलिहार ॥  
 वह कंकन वह शिर पटा वह मोतिन की माल ।  
 इन्द्र धनुष मण्डल बन्यो पीत हरित अरु लाल ॥  
 श्रवण पुनर्वसु चौकड़ा नित सावनहि जनाव ।  
 देखि मोर मन हरषित पहुँची जड़ित जड़ाव ॥  
 या जोड़ी पर वारों अपने तन मन प्रान ।  
 पूरन मण्डल मचि रह्यो बाजत 'देव' निशान ॥

पद ७६

आज दोऊ भूलत रंग भरे, सजि सब साज हरे ॥  
 हरित कुंज घन लता हरी हैं तरुवर हरित फरे ।  
 हरित भूमि नभ हरी हरीमय पंखी हरित चरे ॥  
 हरित हिंडोला हरित बाग में हरित डोर जकरे ।  
 हरित वसन भूषण औ आसन चामर हरित ठरे ॥  
 हरित सखी दोउ ओर भुलावति मेघ राग उचरे ।  
 दोउ किशोर तेहि मध्य लसत हैं हरित छत्र शिर धरे ॥  
 पीत श्याम आपस में मिलिकै हरित रंग उघरे ।

कोयल कीर मोरगन के मिस देखहि 'देव' खरे ॥

पद ७७

राम हिंडोरे भूलत सियजू की करुणा भलक परी ॥  
 तिनकी का गति होइहैं जेहि दिशि रघुवर पीठ करी ।  
 पियहिं सिंगारन के मिस उठि उठि सिय तहँ दीठ धरी ॥  
 प्रभु ते गिरे फूल दल महि पर सिय लखि मोद भरी ।  
 महि सरूप में तुम का करिहौ सत्ता रूप खरी ॥  
 वाम जनहुँ कहँ तारन कारन आप वाम दिशि अरी ।  
 सुभग सर्वतोभद्रासन पर बैठी सो न टरो ॥  
 मुक्त भये विरक्त गुन याते मुक्ता परत भरी ।  
 'देव' दृष्टि से यह रहस्य लखि मति पद मांह ठरी ॥

पद ७८

ललित अति कुंजन की घन घटा । जाहि देखि दुख हटा ॥  
 जाको रंग नील लहरत नित जस जमुना रस चटा ।  
 रंग २ के पक्षी बोलैं मोर शोर करि रटा ॥  
 लता तरुन से लिपटी जहँ तहँ विद्या निगमनि छटा ।  
 वेदन ही में तत्त्व रहत जस लखि न परत अटपटा ॥  
 लली लाल के नित विहार जहँ काहु सुकृत नहिं अटा ।  
 तोनों ताप न जाय सकत तहँ मनहुँ उपासन हटा ॥  
 घन रस वरषत पवन चलत जहँ सुख समाज तहँ ठटा ।  
 'कुंज देव' सौं प्रेम नहीं तौ धिग भगवा धिग जटा ॥



पद ७६

भले दोउ लालै लाल लसै ।

मानहुँ दोउन के अन्तर के प्रगट राग विकसै ॥  
 लाल बाग में लाल डोर से लाल हिंडोले कसै ।  
 लाल सखी कर फूल लिये हैं बहुत सुगन्ध बसै ॥  
 लाल वसन भूषण औ आसन लाल चँवर हुलसै ।  
 लाल लली तेहि मध्य विराजत पान खाय विहँसै ॥  
 लाल छत्र मण्डल शिर सोहत दोऊ काम सरसै ।  
 रंग लाल की या लाली लखि 'देवन' को मन फँसे ॥

श्रीअवधअलीजी-पद ८०

सजनी भूलत श्यामा श्याम ।

सरयू तीर प्रमोद बन में राम सिया सुख धाम ॥  
 रतन जटित वर कनक हिंडोला शोभित जग अभिराम ।  
 सावन श्याम घटा झुकि आई जहँ तहँ दमकत दाम ॥  
 बोलत मोर चकोर कोकिला चातुक रटत ललाम ।  
 बजत मृदंग ताल सारंगी सखि गावत गुण ग्राम ॥  
 शुभगाजू झुलावत निरत सहजा वाम ।  
 'अवधअली' प्रिय प्रीतम छवि पर वारिय रति शतकाम ॥

श्री जन तुलसीजी-पद ८१

भूलत दोउ रघुवर रंग भरे ।

दशरथ सुत अरु जनक नन्दिनी कनक भवन पधरे ॥

रतन जड़ित मणि बन्यो है हिंडोरा कंचन खम्भ हरे ।  
 विमलादिक सखि रीझि भुलावैं उर आनन्द भरे ॥  
 युगल रूप की शोभा निखरत रतिपति लाज मरे ।  
 यही पियूष पियत 'जनतुलसी' नयनन ओट करे ॥

श्रीयुगलानन्यशरणाजी "हेमलता"-पद ८२

रमन ऋतु आई आली ॥

चटकोली चूंदरी चारु प्रिय पहिरिए खुशहाली ।  
 चहुँदिशि दमक रही दामिनि दुति गरजन धनमाली ॥  
 श्रीअवधेश लूलन भुलवाइये नव भूलन डाली ।  
 'युगलअनन्यअली' बलि जाइये लखि छवि मतवाली ॥

पद ८३

सजनी सावन सुख सरसावन ॥

कारी रसवारी प्यारी घटा दशदिशि दुति दरसावन ।  
 सोहत सौदामिनी पीत पट छवि फवि हिय हरसावन ॥  
 मधुर मधुर गरजन सुंदर रव उज्ज्वल बन वरसावन ।  
 'युगलअनन्यअली' भूलन निज प्रेम प्यार परसावन ॥

पद ८४

सावन सज सखियन मन भावन ॥

लोनी लतन तरे भूला हिय हरन सुरति उपजावन ।  
 अरुन अजूब वसन पहिरन पिय प्यारी उर उमगावन ॥  
 भूलन भूमकि चमकि चितवनि दृग दम्पति विरह बहावन ॥



‘युगलअनन्य’ अली अवली विन दाम विकी लागि दावन ॥

पद ८५

पावस प्रेम प्रगट पुर विमला विमल बहार ॥  
 श्री सरजू तट सोहन मोहन महल विहार ।  
 मणिमय भूलन भलकहीं वरसत घन रस सार ॥  
 बोलत कल कोकिल बन नाचत मोर उदार ।  
 उठत उछाह सहित तर लहर तरंग अपार ॥  
 सजि सजि भूषण अंग अंग अरुण वसन हिय हार ।  
 सखिन समेत सियावर भूलत पगि प्रिय प्यार ॥  
 गावहिं गीत मधुर धुनि सोरठ सरस मलार ।  
 सुनि सुनि सुख सरसत दुति दरसत दाम हजार ॥  
 अवध अनूप रहस सुख सावन सु गुन अगार ।  
 ‘युगलअनन्यशरण’ नित निरखिय नैन पसार ॥

पद ८६

वरसत घन सुख सरसायो ।

भूलत लली लाल सरयू तट अघट सु रस दरसायो ।  
 बोलत विहंग सु रंग रंग अनुराग उमंग लसायो ॥  
 दुति दामिनि भामिनि सु राग सुनि नीरस नेह नसायो ॥  
 हरित भूमि द्रुम इन्द्र वधुन सह सरस सु हित हरषायो ।  
 ‘युगलअनन्यअली’ सावन मनभावन पद परसायो ॥

पद ८७

भूलन प्यारी लागे हो सिय श्याम सजन सुखदाई ।

आस पास रस रास सहचरी गावहिं गीत सोहाई ॥  
 फूल्यो फवित सुमन मनमोहन सोहन विपिनि निकाई ॥  
 भूल्यो मदन सवाम सु छवि तकि छकि सुधि बुधि विसराई ॥  
 उमड़्यो सरस सु घन सुन्दर वर व्योम बून्द बरसाई ॥  
 बोलहिं मधुर मरोर मोर रव सब जिय जौक जगाई ॥  
 श्री सरयू सुचि लहर कहर हर शहर बहर छवि छाई ॥  
 'युगलअनन्यअली' भूलन भुकि भांकत सुख न समाई ॥

पद ८८

आई री भूलन की बहारें ।

शुलवाइये सिध श्याम राम घन दाम वरन निज नैन निहारे ॥  
 बारहमास आस सुन्दर तरु सफल अमल कर विशद विहारे ॥  
 चहुँदिशि दमक चमक अनुपम रति श्रीसरयू सुचि लहर हजारे ॥  
 कोकिल कीर कपोत सु रव सुनि होत हरष मन मति गति पारे ॥  
 'युगलअनन्यअली' अनुछन मुद महा प्रमोद विनोद बहारे ॥

भूपताल-पद ८९

ललित ललि लाल अलि भूलने भूलहीं ॥  
 सरयु तर तीर मणिमहल मोहन मदन ,  
 मध्य परिकर निकर सुकर रुचि हूलहीं ॥  
 युगल उत्साह चित चाह पंकज कली ,  
 सु ऋतु रवि निरखि हिय हरषि फवि फूलहीं ॥  
 गान तर तान सुख खान दशदिशि श्रवन ,  
 सुनि सु धुनि 'यूग्म सखि' विकी विनु मूलहीं ॥



ख्याल-पद ६०

भूलने लगे लाल लली जू ।

श्री सरयू तर तीर कुंज कमनीय मध्य मुद मोद थली जू ॥  
फूली ललित लता गुंजे मधु पीवत मधुप उछाह भली जू ।  
विविधि रंग बन सरस सोहावन बरसि रहे रसिकन अवली जू ॥  
गावहिं कल कोकिल कलापि सिय श्याम सुयश संग सुभग अली जू ।  
'युगलअनन्य' श्याम श्यामा छवि निरखि खिली हिय कंज कली जू ॥

पद ६१

सरस सावन सुन्दर सोहैं । भ्रमक भूलत छवि मन मोहैं ॥  
विपिनि प्रमोद मोद विशद विनोद देत लेत चित चोरि कल कुसुम  
सुरंग बोर चहुँओर शोर भौर मोरहू नचत घनश्याम जलद जोहैं ॥  
मधुर मंजीर मन रमन सु वीण धुनि सुनि सुनि होत हिय हरष  
तरषवर बाढ़त न सुधि दोहैं ॥ 'युगलअनन्य' अली अवली  
अजूब खूब गावैं गुन ऊब से रहित महबूब दूब दामिनी दमक  
चष चमक चपल चारुचित मन मतो पोहैं ॥

पद ६२

आज झुलाइहौं पिय तोको ।

हिय अभिलाष लाष भांतिन से है जीवन धन मोको ॥  
चंचलता चातुरी चलन चष चारु चरित अवलोको ।  
लैहौं ललित लाह लोयन लखि चखि रति रस दुति दोको ॥  
हिलि मिलि हलन ललन लोयन बर सुनि सजिहौं सुख थोको ।  
'युगलअनन्यअली' निबछावर करि दैहौं सब लोको ॥

पद ६३

भूला भूलो रसिक रघुलाल सिया ॥

सुखमा भरी सरी सरयू तट निरखत फूलत सखिन हिया ।  
 उमगत उर उमगावत दोउ मिलि हँसत हँसावत प्राणप्रिया ॥  
 बोलहिं शकुन सोहावन भावन जनु रतिपति बहु रूप किया ।  
 'युगलअनन्य' ललित भूलन लखि निज जस रस गुन वारि दिया ॥

पद ६४

भूलो भूलो हिंडोले आज रसिक रघुराज लला ॥  
 सरस समीर सुगंध बहत वर विहरत काम कला ।  
 सघन गगन घन दाम दमक दुति दश दिशि हृदय दला ॥  
 भाव भरी सहचरी चाह चित चमकति चन्द्रकला ।  
 'युगलअनन्यअली' आलस को औसर कौन भला ॥

पद ६५

आली दृग देखु भूलन छवि प्यारी ।

भूलत भ्रमक रमक रस बस वर वल्लभ अवध विहारी ॥  
 प्राण प्रिया हिय लाय लाड़िली लोयन लाह लहारी ।  
 पावत परम प्रभा पालन पन तन मन धन बलिहारी ॥  
 रिझवावहि रिझवार नेह निधि नाज भरी नव नारी ।  
 'युगलअनन्यअली' दिग दिन मुद मोद उदित उर वारी ॥

पद ६६

साजन भूलन की विमल बहार प्यार सज साजन ।  
 साजन हो भूलिये भ्रमकि हिंडोरे नवल रंग बोरे,



घन घुमड़ि चलत चहुँओर, प्यार सज साजन ॥  
 साजन हो प्यारी सुरंग अंग सारी छटा अनियारी,  
 वारी जावो हजारन वारी, प्यार सज साजन ॥  
 साजन हो गावहिं गीत पुनीत रीति रस केली,  
 उर उमगि उमगि अलवेली, प्यार सज साजन ॥  
 साजन हो 'युगलअनन्य' अकेली अली तरसाती,  
 मात्ती विरह ब्यथा बहु भाँती, प्यार सज साजन ॥

पद ६७

नव नागर नेह नहाये भूलत भूलना हो राज ।  
 सावन सुमन सनेह सोहावन अंग अंग मनमथ रति उपजावन,  
 छावन सुछवि बहावन हरदम हूलना हो राज ॥  
 रूप अनूप प्रभा चहुँओरी, दमकि रही दामिनि दुति गोरी,  
 थोरी वयस किशोरी कोउ तिल तूलना हो राज ॥  
 छाये व्योम सघन घन दरसे सुधा सार बूंदें वर वरसे,  
 अग जग जीवन हरषे सरयू कूलना हो राज ॥  
 'श्रीयुगलअनन्यअली' करजोरे छन छन नाजुक नाह निहोरे,  
 निरखो नैनन कोरे न कबहुँ भूलना हो राज ॥

पद ६८

बदन वर विलशत भूलन बीच ।  
 कोटि कलाकर कांति निछावर सुधा सहस गुन सींच ॥  
 दामिनि दाम विशद वामा वर चमकहिं निपट नगीच ।  
 श्री मिथिलेश सुता सुकुमारी जीवन पलकन बीच ॥

चन्द चकोर मोर घन सम दोउ हो रहे प्रेम बगीच ।  
 'युगलअनन्यअली' भूलन छवि निदरत कवि रवि खीच ॥

पद ६६

भूलें दोउ रसिया भूलन बांकी ॥  
 पगे परस्पर प्रीति रीति रस बनी अनोखी भांकी ।  
 उघरत मोद मनोरथ पल पल रहत नहीं तिल ढांकी ॥  
 गावहिं गीत सनेह सनी सखी युगल सु छवि छन छांकी ।  
 'युगलअनन्यअली' भूलन लखि चपल चातुरी थाकी ॥

पद १००

भूलत प्यारी झुलावें प्यारो ॥  
 मधुर मधुर करकंज मंजु गहि रेशम रजु सुकुमारो ।  
 नैनन निरखि नवेली विधु मुख मंद हँसनि नृपवारो ॥  
 मुरझि रहे अंग अंग रंग रस सुरभनि अगम निहारो ।  
 'युगलअनन्यअली' दोउ नेहिन ऊपर सर्वस वारो ॥

पद १०१

भूलें रसिक शिरमौर भूलत रसरासी हो ।  
 बाढ़त विविधि विनोद रहस रति खासी हो ॥  
 निरखिये नैन नवेली अली चहुँपासी हो ।  
 होय रही बेहोश प्रेम रस प्यासी हो ॥  
 लाड़िली लाल लोनाइ लहर ललिताई हो ।  
 फैलि रही दिशि दसहुँ कला कलिताई हो ॥



छैल छवीली जोरी रंग रस बोरी हो ।  
 भूलिये कलप करोरी चाह नहिं थोरी हो ॥  
 'हेमलता' अलि प्यारी युगल करजोरी हो ।  
 मांगत मृदु मुशक्यान मधुर मुख मोरी हो ॥

पद १०२

साजन सहित सिय भूले भूमि भूलना ।  
 उपमा के कारण तिलोक तिल तूल ना ॥  
 रही व्योम चपला चमकि घन थूलना ।  
 सखिन समाज सोहैं सजे साज फूलना ॥  
 गावैं गीत मधुर मलार अनुकूलना ।  
 'युगलअनन्यअली' चाह चित फूलना ॥

पद १०३

हँस्यो हिय भूलना सिय प्यारी ।  
 अति अनूप मणि महित मनोहर झुलवत अवध विहारी ॥  
 छन छन छवि निरखत हरषत प्रिय बरषत दृग वर वारी !  
 'युगलअनन्यअली' दम्पति पर बार बार बलिहारी ॥

पद १०४

भूला भूलो विचारि के सुकुमारी न सिसिके ॥  
 हौ सब विधि नागर आगर वर अडर होत केहि हिसिके ।  
 सिरस सुमन हूँ से नाजुक तन रतन अनूपम किसिके ॥  
 लीजे ललित लाह लोनी लखि रस रस भोंकन मिसिके ।  
 'युगलअनन्यअली' भूलन विन सब सुख मोदक विशिके ॥

पद १०५

धीरे दीजे झुलाय जू रसमाते रसीली ।  
 नेह निकेत निगाह करत किंत कोमल कलित कसीली ॥  
 छन छन नैन सैन निरखो नित बिधु वर बदन हँसीली ।  
 'युगलअनन्यअली' गावें गुन अद्भुत गुनन गसीली ॥

कजरी-पद १०६

भूले भूलन भूमकि छवि निधि लली लाल ।  
 उर उमगि उमगि भूमकत मुद माल ॥  
 भूले भवन भरोस भान जीवन जहान ।  
 फूले लोचन कमल निरखत युग भान ॥  
 खुले सरस सुचित्त हित हिय हुलसान ।  
 भयो रसिकन हीय जग तिनक समान ॥  
 महा मोद उत्साह सुखनिधि उमगान ।  
 हिय 'युगलअनन्यअली' शौक सरसान ॥

पद १०७

भूलो भूमक हिंडोरे दोऊ दृग चित चोर ।  
 महा मोद उमगत तकि सरयू हलोर ॥  
 सखी सरस सलोनी गीत गावें चहुँओर ।  
 रीझि रहे रससिन्धु हेरि नैनन की कोर ॥  
 सुचि शीतल समीर घनघोर मोर शोर ।  
 सुनि सुभग सरोद सचकित काम जोर ॥  
 भोंका अजब अजूब खूब रंग रस बोर ।



जोहि 'युगलअनन्यअली' देति तन तोर ॥

पद १०८

मन मेरो मोह्यो जानकी जीवन को हिंडोर ।  
 नाना रंग मणि मण्डित अजूब दुति डोर ॥  
 पट प्रेम रस भीजे अंग अंग चितचोर ।  
 छवि उठत तरंग मानो सरयू हलोर ॥  
 उर उमगि उमगि सखि गावैं चहुँओर ।  
 पिक चातक विचित्र धुनि नाचि रहे मोर ॥  
 भोंका भमक भमाक लली लालन सजोर ।  
 मति भेरी विकी कलित कटाक्षन की कोर ॥  
 फूल्यो विपिन प्रमोद भौर मत्त मची शोर ।  
 जोहि 'युगलअनन्य' मोद मिट्यो मोर तोर ॥

गजल-पद १०९

सावन के दिन मैं शौक से भूला भुलाइये ।  
 कुल काज लाज साज सबी विधि भुलाइये ॥  
 तजिके फिकर फरेब फरक सबसे होय के ।  
 उत्साह चाह चैन की खाने खुलाइये ॥  
 सजिके सिंगार हार हजारों उमंग से ।  
 सजनी सखी सहेली सलोनी बुलाइये ॥  
 श्री जानकी जीवन की अदा ऐश को लखिके ।  
 सब तौर 'लताहेम' छटा छवि छुलाइये ॥

पद ११०

भूलन भमक भमाक की जाहिर जहूर है ।

निरखो नजर नवीन से निज नेह नूर है ॥  
 लावन्यलता लोल ललित लाज को तजिके ।  
 लपटी ललित ललाम मधुरतर सरूर है ॥  
 तर तान गान मान भान शान को तजिके ।  
 गावें नवीन नागरी आनन्द पूर है ॥  
 रसिकों के हरष हेत इह सावन सोहावना ।  
 वरषे विशद बहार सुधा बूंद रूर है ॥  
 जिसका न दिल लगा कभी भूलन के भोंक में ।  
 पण्डित गुनी ज्ञानी सबी सबतौर कर है ॥  
 चपला चमकि चमकि के चपकती है मेह में ।  
 मोहन मनोज मान मथन मुद मयूर है ॥  
 नाचे नवीनी नागरी खुश दिल रहस भरी ।  
 जिनकी छटा घटा को निरखि दंग हूर है ॥  
 बेखुद किया मन मेरा इह भूलन ने क्या कहूँ ।  
 इस : सुख विना 'अनन्य' सबी बात धूर है ॥

पद १११

खुश लगता है सबतौर से भूलन का भुलाना ।  
 भूलेन भुलाये मुझे अंगों का डुलाना ॥  
 मनमोहने सोहन लली लालन सनेह से ।  
 भीने विहार प्यार निरखि होश भुलाना ॥  
 छन छन में हाव भाव विलच्छन त्रिकासिके ।  
 देना अलीन मोद कलित गाय तर ताना ॥



अनुराग की नदियां बही हर तरफ रंगीली ।  
हिय 'हेमलता' फूलि के तन में न समाना ॥

पद ११२

भुलावो आज प्रीतम को सखी भूला भूलक लखि के ।  
फुलावो वाग दिल दायम सरस सूरति सजन चखि के ॥  
मोवारक मास मन रौशन सुभग सावन सोहावन है ।  
सघन घन दरस दिन दूनी दमक दामिनि दृगन लखि के ॥  
सियावर नेह रसभीनी ललित तर तान नित गावैं ।  
लता नव 'हेम' हिय हारी सु छवि प्यारी हिये रखि के ॥

पं० श्रीउमापति त्रिपाठीजी 'कोविद'-पद ११३

पिया लखु हो सावन सु बहरिया ।

धीर समीर नीर वरसत अति बसि गये सबुज शहरिया ॥  
भूला भूलिये भूलिये मति पिय करिये नित कचहरिया ।  
'कोविद' मोद विनोद महा रस जल थल बहत डहरिया ॥

पद ११४

लाल लली भूलैं भूमकि भुलनमां ।  
बन उपवन निन्दत नन्दन बन  
पूरि रह्यो फलि फलन फुलनमां ॥  
सुर निरखत अति दशन अधर धरि  
छवि कवि भारति जितन तुलनमां ।  
'कोविद' तन मन भूषण वसन सब  
करत निछावरि ऊपर हुलनमां ॥

श्रीशीलमणीजी-पद ११५

भूमकि झुकि भूलति सिय प्यारी ।  
 प्यारी भूमकि भूमकि झुकि निरखत हँसनि नेह वारी,  
 सावनी सारी मनहारी ॥

हार हमेल गरे गजमुक्ता चन्द्रहार धारी,  
 छबीली छवि में मतवारी ॥

‘शीलमणी’ रघुराज लाल को भाग लखो भारी ॥

पद ११६

लिये भूलैं छबीले सुघर धनियाँ ।

मंद हँसनि मुखचन्द प्रकाशित दशरथसुत रघुपतिरनियाँ ॥

घूँघट बीच अनोखी चितवनि सुभग उरोज कसे तनियाँ ।

‘शीलमणी’ नव रंग रँगीली जोरी सुभग सब सुखदनियाँ ॥

पद ११७

देखो देखो री हिंडोरा भूलैं जनक लली ।

एक ओर लली भूलैं एक ओर लालन अति सुंदर अति रमक रली ॥

नोलकमल से नवल लाड़िले सियाजू बनी जैसे चम्पकली ।

तरुतमाल से नवल रसिकवर ‘शीलमणी’ सिय स्वर्णबली ॥

श्रीसरयूदासजी “सुधामुखी”-पद ११८

प्यारी भूलन पधारो झुकि आई बदरा ।

सजि भूषण वसन अँखियन कजरा ॥

मान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली ।

तू तो परम सयानी मिथिलेश की लली ॥



देखो अवध ललन पिया आगे हैं खड़े ।  
रस वर्षे "सुधामुखी" जब पायन पड़े ॥

पद ११६

धीरे धीरे से झुलावो मेरी प्यारी ललना ।  
सिया अति सुकुमारी भोंका भारी भल ना ॥  
यह रूप की निकाई बिनु देखे कल ना ।  
सखी चाहती है नैना यह लागे पल ना ॥  
श्रम सींकर सुहाई वेसर मोती हल ना ।  
कहै "सुधामुखी" गाय पिया मन छल ना ॥

पद १२०

भूमकि भूलत सिय रघुराई । विमल वरषा ऋतु बनि आई ॥  
कोटि रति काम से ललाम रसधाम राम पिय घनश्याम सिय  
दामिनी दमक तामें अति अभिराम गज मोतिन के दाम सु  
बलाकन की छवि छाई ॥ दादुर चक्र चकोर भूषण को शोर  
आली मूरि मूरि मोर सी नचति चित चोरि चोरि तोरि तोरि  
हान गाई ॥ मेहदी नखन वीरवधून की भीर धुनि मधुर मृदंग  
घन गरज अनंग जल वरषि वरषि हिय करषि करषि "सुधामुखी"  
सरि सरसाई ॥

पद १२१

भूलन पर मान करी सिय प्यारी ॥  
करि मुख विमन भूलन से उतरी बैठी आई द्रुम कुंजे ।  
प्यारे उतरि मनावन लागे मानत नाहिं दुलारी ॥

पिय बोले सुन प्राण पियारी कौन सी चूक हमारी ।  
 हमरे तौ तुम प्राण जीवन धन तुम सम और न नारी ॥  
 तुव मुखचन्द्र सुधा के आशिक नैन चकोर हमारी ।  
 तुव मुखकमल भ्रमर मेरे मन होत कबहुँ नहिं न्यारी ॥  
 लै विजना पिय मुख पर दौरे करत वियार सम्हारी ।  
 तब हँसि उठी “सुधावदनी” सिय मिलि भरि भुज अँकवारी ॥

श्रीयुगलअलीजी-पद १२२

श्यामा श्याम की भुलनि मेरे मन अटकी ।  
 लखि ललित लसनि सो सुरंग पट की ॥  
 भोंका भ्रमकि भुलावै गावै मुरि मटकी ।  
 सुख सरस रसीली छवि चष अटकी ॥  
 रस भीनी प्रीति युगलअली के घट की ।  
 सोहि सकल सु साज सरयू के तट की ॥

श्रीरघुवरशरणजी-पद १२३

सावन लागु सुहाई हो पियवरवा ॥

मनसिज घेरि घटा नभ छाये रस बरसत भरिलाई ।  
 पिउ पिउ कोकिल मोर पुकारत सुनि सुनि जिय तरसाई ॥  
 कुसुमित विपिन प्रमोद लता तरु सननन चलु पुरवाई ।  
 भुलिहौं मैं आज रसिकमणि तोहि संग प्रीतम प्यारे, ‘रघुराई’ ॥  
 दोहा—सजि सावन सोभित भये, सिय सियवल्लभ लाल ।  
 कनक थार सजि आरती, करहि अवधपुर वाल ॥



आरती-पद १२४

आरती करु सखि श्यामसुन्दर की ।

मनमोहन प्रीतम सियवर की ॥

मदन दम्भ के खम्भ गड़े हैं, कनकदण्ड मणि रतन जड़े हैं ,  
पटुली धुति जगमगित अड़े हैं, तहँ बैठे दोउ सुखसागर की ॥  
दिनकर सम शिर क्रीट धरे हैं, चन्द्र ज्योति चन्द्रिका परे हैं ,  
तरविन कुण्डल झलक भरे हैं, नासामणि बुलाक छविधर की ॥  
ताल पखावज बीण बजत हैं, चन्द्रकला सुभगाजू नचत हैं ,  
थेड़ थेड़ थेड़ चहुँओर मचत है, रोभत नवल रसिक नागर की ॥  
भूलत सिय 'रघुवर' सरसत हैं, भ्रमकि झुलाय सखिन हरषत हैं ,  
कुसुमन भरि सुरतिय वरषत है, जै जै कहि दोउ सुखमाकर की ॥

राग ईमन-पद १२५

भूलन लखि सखिया भ्रमकि चलु रे ।  
गगन घन गरजै सुनत जिय लरजे ,  
मदन हिय तरजे उमंग छाई रे ॥  
झुकाई भुरि बदरी भिगाई सहो चुनरी '   
सो गावो राग कजरी सावन आई रे ।  
भूलहिं सिय प्यारी जू झुलावैं प्यारे राघो जू ,  
नचति सब सखियां सो ताताथेई रे ॥

राग पूर्वी-पद १२६

नई नई गोरिया सो करिकै श्रृंगार सब ,  
भूलन चली हैं नव सावन उमंग भरि ॥

लहँगा सो कटि देश किंकिणी अनूप वेश ,  
 ओढ़नी कुसुम रंग मोतिन किनारी जरि ।  
 चोटिया गुहीए भाँति रतन की लागी पांति ,  
 नैनो में काजर गले हीरन की पंच लरि ॥  
 बादर घुमड़ि आये विजुरी चमकि छाये ,  
 नान्हीं नान्ही बुंदिया भ्रमक भ्रम भ्रम भरि ।  
 कोकिला कुहुक जागे मोरिला नचन लागे ,  
 पपिहा बोलन लागे पिउ पिउ करि करि ॥  
 ओसरी ओसरी भूलैं पिय प्यारी को भुलावैं ,  
 गावैं राग सुहव मलार तान धरि धरि ।  
 उड़त वसन खसि पड़त भूषण महि ,  
 हँसि हँसि 'रघुवर' देत हैं सुधारी करि ॥

गजल-पद १२७

क्या मजा सावन की सखि मौशिम जो आई है ।  
 दशरथ का बांका छैल ने भूला लगाई है ॥  
 जरकस को चीरा शोश पै कलँगी झुकाई है ।  
 जुलमी जुलुफी जैसी मानो नागिनि जगाई है ॥  
 केशर की चन्दन भाल में कुण्डल सोहाई है ।  
 नैनो कटारी मारि कै घायल बनाई है ॥  
 क्या छटा 'राघव' की बनी नैना लोभाई है ।  
 दशरथ कुँवर के हाथ में तन मन ठगाई है ।



गजल-पद १२८

सुनरी सखी एक बात मैं तुमसे कहौं प्यारी ।  
 भूला लगी दिलदार की सावन हुई जारी ॥  
 मोरों पुकारैं बाग में कोयल कुहुक मारी ।  
 पिउ पिउ पपीहा बोल के मेरी जिगर फारी ॥  
 भूलैं सलोने सांवरे सिय संग सुकुमारी ।  
 गावैं सखी सब रेखता रस की तरहदारी ॥  
 जबसे भनक मैंने सुनी भूलन बहरदारी ।  
 नहिं चैन पड़ती है मुझे छिन छिन फिकरदारी ॥  
 करते न हैं हम पर सखी 'राघव' निगहदारी ।  
 गई हमसे सखी पिउ की कसुरदारी ॥

पूर्वी-पद १२९

भूलन की ऋतु आई सजन ,  
 संग भूलो री मोरी सजनी ।  
 बेंदी माल दृगन भरि अंजन ,  
 मोतियन मांग सँवारि फूल सम फूलो री ॥  
 सजि श्रृंगार सब साज सँवारहु ,  
 गावहु नइ नइ तान सान यह खूलो री ।  
 चलत पवन गरजत घन सावन ,  
 रघुपति ढिग चलु आज काज सब भूलो री ॥

चंचरीक-ध्रुपद १३०

भूलत अवधेश लाल लीन्हे संग सीय बाल,

बन प्रमोद सघन कुंज पुंज सखिन सोहैं ।  
 कूजत कलकण्ठ मोर गुंजत भल भनकि भौर,  
 वरषत घन गरजि थोर मरुत मनहिं मोहैं ॥  
 भूषण रव भ्रमभ्रमात सुरंग बसन गमगमात,  
 छम छमात छवि अनूप रति मनोज मोहैं ।  
 बोलत मृदंग भाल निरत सखि देहिं ताल,  
 लूटहिं सुख नव रसाल 'रघुवर' मुख जोहैं ॥

राग खम्माच-पद १३१

अवल्लोको सखी राज हिंडोरे ॥

हेम जड़ित मणि खंभ रचो रे, मोतिन गुहि सुठि रेशम डोरे ।  
 पटुलि भलक जगमग चितचोरे, बैठे तापर युगल किशोरे ॥  
 सावन सजि गरजत घनघोरे, कुहु कुहु कुहुकत कोकिल मोरे ।  
 नान्हि नान्हि बुं दियन वरषत थोरे, पवन चलत पुरवाई भकोरे ॥  
 बजत मृदंग सितार तँबूरे, तुम तननन सखि तानन तोरे ।  
 निरतति चन्द्रकला रसबोरे, चहुँदिशि उचरत थेइ थेइ थेइ रे ॥  
 भूलत सिय 'रघुवर' दोउ जोरे, हलरत लट जुलफन की मरोरे ।  
 छवि छहरत फहरत पट छोरे, नेवछावरि रति मदन करोरे ॥

ठुमरी-पद १३२

बाँकी भूलनि तिहारी मन मोहैं रे ॥

सिया प्यारी अलवेली गलबांह दिये टेढ़ी पगिया सुभग शिर सोहैं रे ।  
 'रघुवर' प्यारे बड़ी अँखियाँ कटीले तेरी कल न परत बिनु जोहैं रे ॥



पद १३३

हिंडोले भूलैं श्री लाडिली लाल ॥

गौर वरन मिथिलेशनन्दिनी श्यामल दशरथ लाल ।  
लाल भूषण अंग भलकत पहिरे वसन सुठि लाल ॥  
लाल रुचिर श्रीखण्ड तरुतर लगो है हिंडोले लाल ।  
लाल सखी दोउ ओर भुलावहिं गावहिं गीत रसाल ॥  
लाल मनोहर जोरी अनुपम सखा सखी तस लाल ।  
लाल छटा निरखत सखे 'रघुवर' भई दोऊ अँखियाँ निहाल ॥

राग विहार-पदः १३४

कदमतर भूलत दशरथ लाल ॥

लाल घटा भुकि गरजत वरषत दामिनि दमकत लाल ।  
लाल बाग कुसुमित तरु शोभित बोलत कोकिल लाल ॥  
लाल सखी भुकि भमकि भुलावहिं फहरैं वसन सुठि लाल ।  
लाल लाल सब साज बाज लिये भूलत सिय रघुलाल ॥

कहरवा-पद १३५

मेरी प्यारी सियाजू हिंडोले भूलैं लाल री ।

लाल महल में लाल हिंडोला लाल लाल सब बाल री ।  
लाल लाल सब सौज लिये कोइ छरी फूल लिये लाल री ॥  
लाल चन्द्रिका शीश विराजै करनफूल युग लाल री ।  
लाल नासिका बेसरि शोभै छवि बुलाक अति लाल री ॥  
लाल कंचुकी सारी कुसुम रंग लाल गले मणि माल री ।  
कंकण किंकिणि लाल विराजै भाल विन्दु इक लाल री ॥

लाल सखी दुहुँओर झुलावैं मन्द मन्द गति हाल री ।  
भूलहिं 'रघुवर' प्यारी सियजू देखि रती उर शाल री ॥

कहरवा-पद १३६

मेरा बांका समलिया हरे रंग भूलत आज रे ॥  
हरित महल में हरित मणिन में हरित हिंडोला आज रे ।  
हरे हरे भूषण सब साजे भूलत श्री रघुराज रे ॥  
हरित सितार सारंगी वीणा हरित ताल छवि छाज रे ।  
हरित सखी सब निरत करत हैं हरित पखावज बाज रे ॥  
हरित भूमि सब तरुवर हरि हरि हरित कीर खग बाज रे ।  
हरित मोर भवनन पर नाचत हरित गगन घन गाज रे ॥  
हरित हरित 'रघुवर' छवि लखि करि काम कोटि शत लाज रे ।  
हरित छटा अवलोकि गगन ते कुसुम वरष सुरराज रे ॥

पद १३७

तनिक धीरे भूलो जी राजकिशोर ॥  
घनन घनन घूमि बादर घहरत विजुरी चमके चहुँओर ।  
चन्द्रबदनि सिय थर थर कांपति डरपि गहति पट छोर ॥  
बड़े बड़े बूंदन बरसत सरसत सुरंग बसन भीने मोर ।  
अरजो न मानहु 'रघुवर' प्रीतम कस कठोर चित तोर ॥

पूर्वी-पद १३८

बिनती लाल मोरी मान ,  
ठहर भोंका भूलो हो मोरे प्राण ।



कत वरजौ कछु समुझहु नाहिन ,  
मारहु नैनो की सान बान सम तूलो हो ॥  
निपट निदरदी पीर नहिं जानत ,  
चितवन मृदु मुसुकान प्राण जनु घूलो हो ।  
विनय सुनहु प्रीतम रघुनन्दन ,  
तजहु अनोखी चाल साल अब भूलो हो ॥

बरवा-पद १३६

सुनिये सजन रगरी रे । तोरे संग ना झुलिहौं कजरी ॥  
भूमकि भूमकि भर सावन बरसै भोजि गई चुन्दरी रे ।  
लह लह लह लह चलु पुरवैया कांपत तन सगरी रे ॥  
टुटिगो हार फुलन के गजरा मोतियन की तिलरी रे ।  
अतिशय भोंक झुलावहु रसिया गिरि गई नथ दुलरी रे ॥  
रसिक शिरोमणि 'रघुवर' तुम से लगी है प्रेम फँसरी रे ।  
दैं गलबांह मिलहु अब बालम इतनी अरज हमरी रे ॥

खेमटा-पद १४०

कैसे झुलिहौं बलमुआँ सावन रगरी ॥

गरजि-गरजि घन जिय तरसावत निकसि चलत भोजि गई सगरी ।  
झुकि भोंकहु पिय बात न मानहु मुरुकि गई नाजुक अंगुरी ॥  
कदम डार मोरी चुन्दरी उरझि रही सुरुभन दे पिय गैहौं कजरी ।  
यह विनती मानिय पिय 'राघव' नित नित झुलिहौं मैं तोरे संगरी ॥

पद १४१

कदम डार मोरी सारी लटक रही कैसे के झुलिहौं सावनमां ॥

एक वैरी मोरी कदम डार भई दूजे पुरवाई पवनमां ।  
 चलत भुकोर अलक मोरी छूटि गई आई हौं नई गवनमां ॥  
 भुकि भोंकहु पिय बात न मानहु गिरि गई कर से कंगनमां ।  
 हौं सुकुमारि कमर लचि जैहैं फिरि कैसे जैहौं भवनमां ॥  
 टूटि गयो हार गले मोतियन की तिलरी में लगी फुदनमां ।  
 निपट निठुर प्रीतम 'रघुवर' तुम लखहु न मेरी बदनमां ॥

खेमटा-पद १४२

मैं जानी सजनी सावन अब जैहैं ।  
 भूलि लेहु प्रीतम नागर संग ना तो करमीजि पछितैहैं ॥  
 यह सुख साज समाज सोहागिनि फिरि न अनत कहूँ पैहैं ।  
 सुमिरि सुमिरि यह छवि 'रघुवर' की छिन छिन विरह सतैहैं ॥

विहाग-पद १४३

लाल मोरी अँखियाँ नींद भुकि आई ।  
 अब जनि भूलो रसिक शिरोमणि नींद सों नैन पिराई ॥  
 भोंका दे न सकति सखियाँ सब भुकि भुकि खसति घुमाई ।  
 चन्दमन्द दुरि हेरत हिरणी मोतियन माल सिराई ॥  
 करत शोर चहुँओर मोर पिक रजनी के अन्त जनाई ।  
 कहति जनकजा सुनो पिया 'रघुवर' भूलन देहु थँभाई ॥

कवित्त-परस्पर-सम्बाद

चकई ना बोले श्याम बैठ क्या बोल बोले,  
 कोकिल अकुलानी कहीं कोकिली बिछूनी है ।  
 दीपक की मन्द ज्योति तेलहू ते पूर नहिं,



जागत पुरी के लोग तश्कर निगरानी है ॥  
 घंट घहरानो कहीं अवध घर पूत भयो,  
 चिरैयाँ चहचहानी कहीं अहिनो डेरानी है ।  
 जान दो तो जान दो न जान दो तो सांची कहो,  
 सूरज की किरण श्याम देखो दरसानी है ॥

श्रीज्ञानाञ्जलीजी-पद १४४

रसिया ना मानै सजनी भूलत मन न अघाय ।  
 सोवति सजनी अपने भवनवाँ औचक मोहि जगाय ॥  
 बन प्रमोद कुंजन कुंजन में नित उठि भूलत आय ।  
 'ज्ञानाञ्जलि'सिय पिय संग भुलिहौं अभय निशान बजाय ॥

पद १४५

भूलत रसिक श्यामा श्याम ।

श्रीजनकनृपनन्दिनी रघुनन्द आनन्द धाम ॥  
 नवल घन तन श्यामसुन्दर तड़ित द्युति सिय वाम ।  
 युगल छवि अवलोकि भुकि भुकि काम करत प्रणाम ॥  
 चहूँदिशि घन घेरि आये चपल दमकत दाम !  
 मधुर मृदु ख कोकिला धुनि सुनत मन विश्राम ॥  
 अति अनूप हिंडोलना छवि सखिन को अभिराम ।  
 'ज्ञानाञ्जलि'सिय लालमुख छवि निरखि पूरण काम ॥

पद १४६

नवल दोउ भूलत अलिगण साथ ।

नवल सखी सम वयस अतुल छवि लखि रति मदन लजात ॥

नवल हिंडोल कुंज द्रुम फूले त्रिविध पवन सरसात ।  
 नइ नइ तानन दोउ मिलि गावत मंद मंद मुसुकात ॥  
 नवल वसन भूषण अंग सोहैं लखि छवि दृग न समात ।  
 'ज्ञानाअलि' सुख वरणि न आवै शिथिल भयो सब गात ॥

श्री हनुमानशरणजी 'मधुरअली'—पद १४७

अवध सैंयां भूलन की ऋतु आई ।

सरजू तीरे रचौ हिंडोरा सिय सुकुमारि बुलाई ॥  
 सुनि सुख मानि लाल दशरथ को हेरत मृदु मुसक्याई ।  
 'मधुरअली' मुखचन्द विलोकत आनन्द उर न समाई ॥

पद १४८

बदरवा अरुण रंग छाये, गरजि वारि बरसाये ॥  
 अरुण पोशाक अरुण मणि भूषण अंगन सुभग सुहाये ।  
 चटक चाँदनी लाल लगी है लालै फरश बिछाये ॥  
 तापर भूला बन्यो मनोहर लाल सी साज सजाये ।  
 तेहिपर लसत नवल दोउ सियपिय रतिपति लखत लजाये ॥  
 लाल वसन अलियन अंग राजत तेइ सब गाय झुलाये ।  
 'मधुरअली' लाली छवि बांकी देखि नयन फल पाये ॥

पद १४९

नवल दोउ भूलत हरे हरे, छवि सिंगार भरे ॥  
 सरयूतीर हरित कुंजन बिच तरु तमाल के तरे ।  
 हरित बितान तन्यो ता ऊपर हरित मोफरस परे ॥  
 तापर हरित हिंडोर मनोहर देखत मनहिं हरे ।



हरित पाग बागो सो हरित है भूषण मणिन हरे ॥  
 वसन विभूषण हरित रंग क्या सिय अंग भूषित करे ।  
 हरित पोशाक सखिन अंग साजे मेघ मलार उचरे ॥  
 त्रिविध समीर बहत सुखदायक रंग फुहार भरे ।  
 हरित छत्र शोभित सुषमानिधि हरित सो चामर धरे ॥  
 'मधुरअली' लखि हरित छटा सब निज हिय मांहि धरे ॥

पद १५०

भूलन की क्या छवि छाई हो ।  
 करि सिंगार सुभग सुषमानिधि जनकलली रघुराई हो ॥  
 चन्द्रकला सुभगादि अलीगण राग मलारहिं गाई हो ।  
 'मधुरअली' मुखचन्द युगल लखि तृण तोरत बलिजाई हो ॥

पद १५१

दैं गलब्राहीं भूलैं दोउ आज ।  
 सरयू तीर तमाल कुंज में जनकलली रघुराज ॥  
 काह कहूँ सखि कहत बनै ना कोटिन सुख के साज ।  
 'मधुरअली' सब तजि संग झुलिहौं छांड़ि लोक कुल लाज ॥

पद १५२

भूलत लाड़िली रघुवीर ।  
 रतन जड़ित हिंडोलना सुचि सुभग सरयू तीर ॥  
 करहिं गान मलार अलिगन स्वर सुखद गम्भीर ।  
 नचत थेइ थेइ मोर गति लै मोद उमग शरीर ॥  
 समय लखि सुर सुमन वरषत जलद वरषत नीर ॥

‘मधुरअली’ समीप पंखा लिये करत समीर ॥

पद १५३

सिय पिय दोनौ भूमकि भुकि भूलै ।  
भोंका देत परसपर हँसि हँसि फहरत अरुण दुकूलै ॥  
तिरछी तकनि सांग सी हूलै होत अलिन उर शूलै ।  
‘मधुरअली’ आनन्द के मारे प्रेम विवश सुधि भूलै ॥

पद १५४

भुकि भूलै हिंडोरे लाल लली ।  
नील कमलसम छवि प्यारे की सिय छवि सुन्दर चम्पकली ॥  
आस पास सब सखी सलोनी गावहिं राग मलार भली ।  
अति मनहरन युगल जोड़ी को देखि जियत नित ‘मधुरअली’ ॥

श्रीशिवदयालजी-पद १५५

तनिक मनहरनी चलू यहि ओर ।  
जित उनयी पुनीत सरयू तट श्याम घटा घनबोर ॥  
महाराज ठाढ़े मग जोहत साजे नवल हिंडोर ।  
दामिनि दमकि रमकि छवि छहरत बोलत दादुर मोर ॥  
यों सुनि स्वामिनि वेगि सिधारी सजि तन सुरंग पटोर ।  
‘शिवदयाल’ दम्पति मिलि हरबै विहँसि चितै दग-कोर ॥

श्रीरघुराज सिंह जी-पद १५६

चलिये सांभ समय पिय भूलन ।  
आयो सावन प्रेम सोहावन फूलि रहे सगरे बन फूलन ॥  
मोर शोर चहुँओर मनोहर हारत भूमि मै यमुना कूलन ।



‘श्रीरघुराज’ प्रिया भीतम लखि सखि लूटै सुख लूट अतूलन ॥

पद १५७

आये हो, सिय रघुनन्दन लै सखि वृन्दन भूलन चाये ॥  
शिर पुहुप मुकुट सुमाल पुहुप सु पुहुप कुण्डल कान है ।  
कटि भुज चरण सब पुहुप भूषण कछु न जग उपमान है ॥  
सब अलिन अंगन पुहुप अभरन बसन बेष विराजहीं ।  
सिय सजी पुहुप सिंगार राजति रुचिर सखिन समाजहीं ॥  
आनन्द छाये ॥ १ ॥

पन्ना पदिक पटुली जटित गजमणि मही मण्डित करें ।  
नीलक सुखंभ दराज बेलन पुहुपराज छटा छरें ॥  
भँवरो विभावित मण्डित माणिक इन्द्रमणि कलसावली ।  
जरकस वितान निशान भालरि मुकुट की भलकावली ॥  
सरयू तट भाये ॥ २ ॥

चहुँओर घहरत धोर घन वर्षत सु हरषावन हियो ।  
सब ठौर मोर मचाइ शोर शिखीन सुख पूरण कियो ॥  
नव विटपवल्ली हरित वरन विशाल तालन पै लगी ।  
नव दूव इन्द्रवधू विराजहिं मनहुँ विधि चूनरि रंगी ॥  
सर भरि आये ॥ ३ ॥

सखी गहे वीण मृदंग मुरज उपंग मंजु बजावहीं ।  
धूरिया गोंडहु सर मेघ मलार रागिनि गावहीं ॥  
सुखकन्द भूलत मन्द मन्द सुचन्दबदन सोहावहीं ।

कोऊ विजन बीजहिं बाल कोउ 'रघुराज' चँवर चलावहीं ॥  
जन्म फल पाये ॥ ४ ॥

पद १५८

सरयू के तीर गड़ो हिंडोलना भूलत सीताराम आली ॥  
मन्द मन्द वरषत घन बूंदन, भरत मनहुँ कलिका नव कुन्दन,  
हरित वरण आराम आली ॥ छिन छिन दिशनि दीपति दामिनियां,  
भूमकि भुलाय रही कामिनियां, पिय छवि दृग आराम आली ॥  
'श्रीरघुराज' शोक सब बिसरो, पूरण भयो मनोरथ सिंगरो,  
आनन्द आठोयाम आली ॥

पद १५९

दोऊ भूलत हिंडोरे राम सिया । सजनी उर बोंवत प्रेम बिया ।  
उमड़ धुमड़ आये बादरवा मोरवा मंजुल शोर किया ॥  
शोक नशावन सुख सरसावन सावन गावन लागी तिया ।  
'श्रीरघुराज' भूमक भूलन में वीण बजावत सीयपिया ॥

पद १६०

सिय के पिय की छवि देखैं ।

भूलि रहे सरयू सरि तीर मचाय आनन्द अलेखैं ॥  
उड़ैं अलकैं लहि पवन प्रसंग मुखें छहरैं पट पीतहिं संग,  
मनो शशि पै चलिजात भुजंग निवारत दामिनि पेखैं ॥  
कोमल बूंद भरैं घनवृन्द, पीताम्बर अंचल कर अरविन्द,  
परस्पर वारत सिय रघुनन्द हँसैं दोउ आनन्द वेखैं ॥  
आवत जात हिंडोल सुहात, प्रभा शित श्याम छटा छहरात,



सु सावन गाय लखैं सखिवात तजैं 'रघुराज' निमेखैं ॥

भूपताल-पद १६

भरत भर भर सलिल भकरि भोंकन लगी ।  
 सघन घन घुमड़ि घहरत सु छहरत घटा, छनक छवि छिति  
 मिलति मनहुँ आनन्द पगी ॥ ललित लहरत ललिन उड़त  
 अंचल अमल, मनहुँ छहरत कुसुम धनु धुजा जै रंगी ॥  
 सरयु तट विकट हिंडोल विरचित पुरट, खचित मणि माणिकनि  
 मुकुति भालरि भगी ॥ डहर डहरत शिखी सुखित शिखिनीन-  
 युत, करत धुनि मधुर जलधरन संग में सगी । परम कमनीय  
 सिय पीय सिय संग भूलत सु फूलत हरष हेरि रति सगवगी ।  
 सखी कोउ मचति कोउ नचति कोउ रचति, गति लचति कोउ  
 लंक उर प्रीति की दगदगी । सुखद सावन सुहावन सु रस  
 रास मधि, चहत 'रघुराज' युग-चरण की लग लगी ॥

रूपक-पद १६२

सरयू के तिरवा गड़ो हिंडोरवा भूलत रघुवर जानकी ।  
 वरषत बदरवा हरि हियरवा मनहुँ लर मुकुतान की ॥  
 सखि दिपत आनन भरि दिशानन लेहिं तानन धूरिया ।  
 पल्लवित कानन निरखि भानन सुख वितानन पूरिया ॥  
 प्रीतम भुलावैं सुरंग छावैं बहु बजावैं बाजने ।  
 दग छवि छकावैं पिय हँसावैं हुलसि कहि कहि साजने ॥  
 पट अरुण सोहत मनहिं मोहत देव जोहत जकि रहैं ।  
 चढ़ि जात आवत गगन भावत कुसुम भरि लावत जहैं ॥

अवधेश राजकुमार राजत सहित सखिन समाज हैं ।  
जग काज तजि छवि लाज लखि बलिजात जन 'रघुराज' हैं ॥

पद- १६३

भूलत कुंजन भीजि रहे दोउ ।

पिय मृदु वैननि मोहि गई सिय, सिय मृदु वैननि मोहिरहे सोउ ॥  
सिय भक्तकति हरि करनि सँवारति, सिय के कर पकरत विहँसत ओउ ।  
'श्रीरघुराज' छकी सब सखिया अँखियाँ में नहिं पलक करैं कोउ ॥

श्रीसियरसिक अलीजी-पद १६४

भूलैं नवलरसिक रंग भीने दोऊ आज ।  
फूली कमल कली सी मृगनयनी की समाज ॥  
घिरी सधन घटा सी छवि रघुकुल राज ।  
संग सोहैं सिय प्यारी लखि दामिनीहूँ लाज ॥  
वन्यो विपिन प्रमोद सब सुषमा को साज ।  
'सियरसिकअली' के हिये यहि छवि छाज ॥

पद १६५

सिय सजि सावन तीज सजन संग भूलैं हो ।  
सजि सुरंग पोशाक सखी सम तूलैं हो ॥  
गावहिं राग मलार श्रवण सुख मूलैं हो ।  
कानन कल कमनीय काम लखि भूलैं हो ॥  
किशलय कोमल धनु अशोकवन फूलैं हो ।  
विकसे कमल कल नीर सरयू के कूलैं हो ॥  
'अलिसियरसिक' भुलाये दोऊ दिन दूलैं हो ॥



पद १६६

भूलत नवल दम्पति आज ।

नवल नागरि रूप आगरि चलीं भूलन काज ॥  
 नवल वसन सुरंग नव तन नवल भूषण साज ।  
 नवल नव घन घेरि आये नवल घुरि-घुरि गाज ॥  
 नव मुचंग मृदंग वीणा विविध बाजन बाज ।  
 गान तान तरंग मेघ-मलार सहित समाज ॥  
 नवल नीर गंभीर निर्मल सरित वर शिरताज ।  
 सरयु तट बट निकट मणिगिरि रमत सिय रघुराज ॥  
 नवल शोभा द्रुमन गोभा हरित तृण छावि छाज ।  
 'सीयरसिकअली' भुलावति नवल भूलनि राज ॥

पद १६७

भूलत सरस सरयू तीर ।

आज री गुण आगरी सिय नागरी संग भीर ॥  
 सागरी रस रूप रमनी सजि सुरंगी चीर ।  
 पागरी शिर लाल राजै बाहु बाजू हीर ॥  
 परसपर चितवनि मनोहर हरत रसिकन पीर ।  
 'सीयरसिकअली' भुलावति बहत धीर समीर ॥

धुरिया मलार-पद १६८

अब घन घमण्ड नभ छाये ।

पवन चलत पुरवाई सननननन चम चपला चमकाये ॥ बजत  
 मृदंग गरज जलधर की, झिझी झनकारैं मानो धुनि नूपुर की,

मेढ़क ताल बजाये ॥ नटत मयूर थिरकि थररररर, तासु शिखण्ड  
 फरकि फररररर, राग मलार उचार चातकन, कोकिल कल स्वर  
 गाये ॥ विपिन प्रमोद मदन मन लोभित कुसुमित लता ललित  
 तरु शोभित, निरखि ललन मन भाये ॥ 'अलीसियरसिक' नवल  
 ऋतु निरखत, उर उमंग दम्पति दिल करषत, सुख सरसत  
 बादर भुकि वरषत, पावस रहस रचाये ॥

श्रीश्यामसखेजी पद १६६

दशरथ राजदुलारे सिया संग भूलैं हो ॥  
 सरयू किनारे सुहाई कदम जुरि छहियाँ हो ।  
 ताहि तर भूलैं हिंडोरा दिये गलबहियाँ हो ॥  
 एक ओर जनक किशोरी सखिन संग सोहैं हो ।  
 एक ओर राघो विहारी लली मुख जोहैं हो ॥  
 प्यारी की लट पिआ जुलुफन भूलत अरुभैं हो ।  
 अचल रहैं 'सखेश्याम' कबहुँ नहिं सरुभैं हो ॥

पद १७०

मैं तोरे संग ना भूलौं बालम जियरा गइल घबराय ।  
 अतिशय भोंक भुलावत रसिया वेसर गइल हेराय ॥  
 अँचरा फरकि फरकि महि लोटत गूँथे लट छिटकाय ।  
 'श्यामसखे' मोरी अँगिया भीजि गई बेनियां दीजै डोलाय ॥

पद १७१

भूमकि भुलौंगी सैया तोरे संग ऋतु सावन की बहार ॥  
 सरयू किनारे नई नई गछिया रे जहँ रचे मदन बजार ।



रमकि बहत पुरबइया रे बुन्दन परत फुहार ॥  
 धरि धरि तोरे गलबहियाँ रे गाऊँगी राग मलार ।  
 'श्यामसखे' कदम जुरि छहियाँ रे नित नई करिहौँ बहार ॥

श्रीजानकीवरशरणजी 'प्रीतिलता'—पद १७२

पिय लागो सावन मास आस यह मेरी ।  
 चलि भूलैँ विमल हिंडोर गले भुज गेरी ॥  
 भये हरित वरन वर भूमि सोहावन लागै ।  
 फूलैँ फूलैँ विपिन प्रमोद मोदमय वागै ॥  
 गुंजत मधुकर करि शोर मोर मन रागै ।  
 भल समय सुखद अवलोकि निठुर पन त्यागै ॥  
 शुक्र चातक कोयल हंस कोकिला टेरी ॥ पिय० ॥  
 सुनि प्राण प्रिया वर वैन नैन लखि प्यारी ।  
 गहि अंक रंक ज्यों सुधन मोद लहि भारी ॥  
 चलो मेरी जीवन जीव सकल सुखकारी ।  
 श्रीचन्द्रकलादिक सखी सुसाज सम्हारी ॥  
 आयो सरयू वर तीर घटा घन घेरी ॥ पिय० ॥  
 विद्रुम नगमणि रचि हेम अनूपम भूला ।  
 तेहि बैठे सिय महबूब खूब अनुकूला ॥  
 सखि भुकि भुकि भूमकि भुलाय पाय प्रिय दूला ।  
 नभ विबुध बधू बहु हरषि वरषि रही फूला ॥  
 सुखकन्द मन्द मुसुकाय सिया तन हेरी ॥ पिय० ॥  
 पट पीत नील फहराय लपटि अरुभानी ।

सुरभावत सिय पिय विहँसि नहीं सुरभानी ॥  
 दोऊ नील पीत मिलि हरित रंग प्रगटानी ।  
 सखि गावें हरे हरे गीत हेरि सुखमानी ॥  
 प्रीतम तमाल तरु 'प्रीतिलता' लपटेरी ॥ पिय० ॥

पद १७३

जित देखो घटा तित छाय रही ।  
 बिच दामिनि दुति दमकाय रही ॥  
 अंबर घेरि रहे चहुँदिशि शुचि रुचि छवि बन बरसाय रही ।  
 पूषन पूषन अदा अदूषन भूषण धुनि सरसाय रही ॥  
 चन्द बिन्दु अरविन्द कन्द मुद लखि मति गति सकुचाय रही ।  
 तार तार तारापति लाजित साजित साज सजाय रही ॥  
 अलि अवली अलवेलि सकेली केलि वेलि विगसाय रही ।  
 दम्पति 'प्रीतिलता' सखि सम्पति गुरु करुणा दरसाय रही ॥

पद १७४

भलित भलमलित भुकि भूमि दोऊ राजहीं ।  
 नीरजा तीर श्रीजनकजा संग मिलि धीर रघुवीर हिंडोल सुख  
 साजहीं ॥ बजत बर बाजने छाजने मेघ धुनि शोर घनघोर  
 पिक मोर मन गाजहीं । अरुण बर वसन खुश रंग रंगी लसे  
 'जानकीवर' सहित छैल छवि छाजहीं ॥

पद १७५

परसपर भूलन छवि हेरैं, सुहँसि हँसि दोउ भुज गर गेरैं ॥  
 बैन चैन ऐन सम अनत लखैन कहूँ आनन्द के दैन दोउ लैन



मन मैं हर, चातकी चकोरी मोरी गोरी चहुँओरी शोरी, सिय  
सिय-पिय टेरै ॥ श्याम गौर गात नील पीत पट फहरात छवि  
छहरात बात बहत त्रिविध शुभ, परसि परसि रस सरसि बरसि  
मानो, घन दामिनि घेरै ॥ अवध सरयू तीर हीर मणि छिति  
मिति मिलित परेश पर परम प्रकाश नित, निगम अगम गुरु  
करुणा सुगम 'प्रीतिलता' सिय-पिय मेरै ॥

पद १७६

लली लालन दोउ संग भूलै, परसपर केलि करत फूलै ॥  
सरयू तरंग घनघोर शोर चहुँओर बाजत मृदंग मुरचंग चंग दंग  
होत, ढंग देखि औरहीं उमंग देव बधू सब, लाज साज भूलै ॥  
कोकिला की कूक सुनि चकित चकोर चारु मार रति सारस  
अधीर पीर कीर कल, कामिनी कमल दल अमल सुगंध सार,  
हारि मानि हूलै ॥ 'जानकीसुवर' संग सुघर अधर लाल चाल  
सु रसाल बाल पहिरि सुकण्ठ माल, भूषण विसाल लाल  
वसन रसन जाल, जड़ित युगल तूलै ॥

पद १७७

चलोरी २ मोरी संग की सहेली सिय पिय भूलत भुलनमां ॥  
निरखति विपुल व्योम सुरवामा हरषित वरषि फुलनमां ।  
सिय मुख शशि पिय नैन चकोरी यह छवि नाहीं भुलनमां ॥  
श्रीचन्द्रकलादि अली अलवेली दुहूँदिशि हूलत हुलनमां ।  
गान तान सखि प्राण सजीवन हिये की हरत शुलनमां ॥  
सिय सिय पिय हँसि दिये गलबहियाँ पटतर कहूँ न तुलनमां ।

‘प्रीतिलता’ दोऊ जीवनधन सब सुख के हैं मुलनमां ॥

पद १७८

हेरो हेरो सिया छवि आज पिया संग भूलि रही ॥  
निरखि निरखि सुखकन्द चन्दमुख हरषि सरस सुख पाय,  
अपनपौ भूलि रही ॥ प्रीतमहूँ अवलोकि प्रिया छवि निज मति  
गति सरसाय, महा मुद मूलि रही ॥ श्रीचन्द्रकला श्रीचारुशिला-  
दिक दुहुँदिशि शौक बढ़ाय, भूमकि भोंका भूलि रही ॥ नव  
नागरि सिय पिय नव नागर दगन रही छवि छाये, सु ‘प्रीतिलता’  
फूलि रही ॥

पद १७९

भूलै रमकि भूमकि प्रमुदित तन मन ॥  
सिया सोम बट छाहीं पिया दिये गलबाहीं,  
शोभा वरणि न जाहीं कहाँ दामिनी सुघन ॥  
साजे साजन सुरंग अंग अंगन उमंग,  
मृदु सरयू तरंग भली उठै छिन छिन ॥  
नभ विबुध बधूटी कुसुमाञ्जलि छूटी,  
सब दग फल लूटी जुटी लखै एक तन ॥  
सखी भूमकि भुलावै पिया प्यारी मुसुकावै,  
बलि बलि बिकि वारै सब लाल रतन ॥

पद १८०

पिया धीरे से भुलावो सुकुमारी प्यारी हैं ॥  
नव सत साज साजे, लखि रति मति लाजे,



अंग अंग छवि भ्राजे, सु डरत भारी है ॥  
 बहै त्रिविध वयारी, नभ घटा घनकारी,  
 वर बरस फुहारी, फहरत सारी है ॥  
 सिया स्वामिनी जू मोरी, प्यारे देखो गहि डोरी,  
 सखी कहत निहोरी, निठुराई धारी है ॥  
 सुनि जानकीसुवर पिया, पायन सु परि,  
 'प्रीतिलता' फूलि करि, तन मन वारी है ॥

पद १८१

भूला भूलो सही मेरे प्राण प्यार से भोंको ना ।  
 जब पिय भोंका देत भ्रमकि से डरति सिया सुकुमारि लाल  
 तुम रोको ना ॥ जस महाराज कुमार कुंवर तुम अधिक लली  
 सुकुमारि लाल भ्रमभोरो ना । 'प्रीतिलता' अलि रसिक शिरो-  
 मणि बसिया सरयू कूल लाल मुख मोरो ना ॥

पद-१८२

भूलैं दोउ साजन साज हिंडोर ।  
 रंग रहस अनुराग रसीले हँसत हँसावत प्रिय मुख मोर ॥  
 भोंका देत लली लालन जब प्रीतम रस बस करत निहोर ।  
 'प्रीतिलता' अनुराग राग सुनि भुलत भुलावत ह्वै गयो भोर ॥

श्रीव्यंकटरमणसिंहजी-पद १८३

सु प्यारे जू भूलन की रितु आई भ्रमकि भुकि भूलो भूलन ।  
 सु प्यारे जू कुसुमित विपिन प्रमोद चलो श्री सरयू कूलना ॥  
 सु प्यारे जू सब गावें मंगल गीत सखी सब करति कलोलना ।

सुप्यारे जू 'व्यंकट' हिय परम हुलास निठुर बातें जनि चालना ॥

पद-१८४

कदमतर भूलत अवध विहारी ।

सुन्दर बन प्रमोद सरयू तट अजब छटा छविधारी ॥

संग सखिन के रमकि बढ़ावत मारत नयन कटारी ।

'व्यंकट' किमि कहि सकत युगल छवि कोटि मदन रतिवारी ॥

श्रीसियारामशरणजी 'नवलप्रिया'-पद १८५

प्यारी चलो न भूलन पिय रस बरसे ।

तुम दामिनी वरण पिय घन दरसे ॥

यह लखन सरस छवि दृग तरसे ।

दै सबहीं ललित सुख विधु कर से ॥

चली लली जू भूलन सुनि सखि वच से ।

लखि 'नवलप्रिया' के बड़भाग फल से ॥

पद १८६

चलो देखन जाऊँ री भूलत भुलना ।

श्रीसरयू तट कुंज मनोहर कुसुम जहाँ बहुविधि फुलना ॥

रघुनन्दन श्रीजनकनन्दिनी लखि छवि रति मनसिज भुलना ।

श्याम गौर वर वरण सरस अति घन दामिनि उपमा तुलना ॥

नख शिख भूषण वसन सोहावन अंग अंग ललित सुधरि खुलना ।

'नवलप्रिया' छवि देखि मगन भई लाज कानि गति सुधि कुलना ॥

पद १८७

देखो देखो री भूलत मिथिलेश दुलरी ।



संग बहिनि अमित सहचरि सगरी ॥  
 नव वयस नवल अंग रंग चूँदरी ।  
 दृग अंजन तिलक हल नथ बेसरी ॥  
 भोंका अरस परस देति मति अगरी ।  
 शुभ तड़ित चमक वरषत बदरी ॥  
 लखि मोहि रमा शारद गौरी रति री ।  
 लखि 'नवलप्रिया' केवड़ भाग फल री ॥

श्रीअवधमणीजी-मलार-पद १८८

भूलत सिय नागरि नागर वर ।  
 सावन सघन निकुंज हिंडोले,  
 छिन छिन ललकि ललकि लागत गर ॥  
 हरे हरे परसत सरसत तन,  
 कंज कलिन्ह कर काम कलभ कर ।  
 भोंका देत चिबुक गहि किलकत,  
 चंचल चख जनु मदन वारि चर ॥  
 बाजत यंत्र जाल करतालन,  
 बाल सम्हारि उचारि सप्त सुर ।  
 गावति मेघ मलार 'अवधमणि',  
 लखि रतिपति गये विसरि कुसुमशर ॥

श्रीरसिकप्रियाजी-पद १८९

सहचरि हरषि भुलावैं भूलत राम सिया ।  
 रंगमहल बिच रंग हिंडोला मणिमय जड़ित किया ॥

तैसोइ मणिमय भवन सोहावन राजति अमित तिया ।  
अंश दिये भुज भिरखि मगन मन वारति 'रसिकप्रिया' ॥

श्रीकृष्णरामजी-पद १६०

ए दोउ भूलत सरयू तीर ।

चन्द्रवदनि श्रीजनकनन्दिनी श्याम वरण रघुवीर ॥  
हरि हरि भूमि लता भुकि आई बोलत चातक कीर ।  
सुंदरि सखियाँ मलार अलापत आनन्द उमग शरीर ॥  
गृह गृह ते बनिता बनि आई पहिरे कुसुम रंग चीर ।  
'कृष्ण राम' छवि निरखि दुहुँन की वारत मणिगण हीर ॥

श्रीजनरघुनन्दनजी-पद १६१

अहो लाल धीरे भूलो लाड़िली डरै छे ।  
लाड़िल डरै छे अंग उधरै छे मोती लड़ लुढ़कि परै छे ॥  
अति सुकुमारि भार यौवन के मृगनयनी चमकि परै छे ।  
'जनरघुनन्द' सियापिय छवि पै पलक सों पवन करै छे ॥

श्रीरूपरसिकजी-पद १६२

सिया जू हो भूलत फूल भई ।

फूली फूली फूल हिंडोले अनुकूली अधिकई ॥  
प्रीतम प्राण झुलावत छवि सों शोभा निरखि नई ।  
'रूपरसिक' रस छके हैं परस्पर मोनत नहिं तृपतई ॥

श्रीराम मीतजी-पद १६३

इतनी अरज मोरी मानो तनिक धीरे,  
भूलो हो मोरे प्राण ॥



भोंकत हो रोकत नहिं प्रीतम,  
तकि तिरछी मुसुकान सान हिय हूलो ।  
अरज करत नित वरजो न मानत,  
'राममीत' चित आनो बान यह भूलो ॥

पद १६४

भूलन भोंक सँभार कमर,  
लचि जैहैं हो बाँके यार ।  
कस कठोर चित तोर मोर सुन,  
छूटि जैहैं कच भार, हार टुटि जैहैं हो ॥  
वरज मान यह अरज 'राममित',  
कहि कहि राजकुमारी, हमार जिय जैहैं हो ।

पद १६५

हिय कशकत भूलन भोंक सही नहिं जाती ।  
पिय सिसकति सिय सुकुमारि दरद नहिं आती ॥  
लखि लली अली सब भली खड़ी पछताती ।  
कोऊ कहत चली मुख मोरि मोरि मुसुकाती ॥  
कह्यो राजकुमार न सुनो यार यहि भाँती ।  
तन कोमल कमल की कली कठोर की छाती ॥  
जिय डरपि लपटि पट पकड़ि गले लपटाती ।  
तन कम्पति कहति न कोइ इन्हैं समुझाती ॥  
तनि धीरे भूलो बेपीर कमर लचि जाती ।  
ऐसो 'राममीत' निरमोहि न मोहि सुहाती ॥

श्रीकामदमणीजी-पद १६६

भूलत लाड़िली नृप लाल ।

लाल विपिन प्रमोदवन में लगी भूलन लाल ॥  
 लाल डाढ़ी लाल पटरी लाल खम्भ विशाल ।  
 लाल मणिमय बन्यो आसन लाल तापर लाल ॥  
 लाल सखि चहुँओर राजित सौज लीन्हें लाल ।  
 लाल ललि छवि देखि हरषित देत मधुरी ताल ॥  
 लाल मोर चकोर बोलत लाल लाल रसाल ।  
 लाल मणिमय हार हलके लाल ही बनमाल ॥  
 लाल नासामणि विराजित श्रवण कुंडल लाल ।  
 लाल सारी जड़ किनारी और वेसर लाल ॥  
 लाल नथ नासा सियाजू की लाल पहुँची लाल ।  
 लाल सावन रितु सुहावन लसत अवनि सु लाल ॥  
 लाल सरस वयार पुरवा परत वारि सु लाल ।  
 लाल 'कामदमणि' भुलावत जनकजा रघुलाल ॥

पद १६७

भूलन पर भूले दोउ रसमाते ॥

प्रीतम छैल छवीली सीता पान खवावत खाते ।  
 विपिन प्रमोद कुंज सरयू तट ललित लता लहराते ॥  
 मणिमय नवल विचित्र हिंडोरा लखि शशि अमित लजाते ।  
 'कामदमणि' हिय नित्य वसे दोउ मन्द मन्द मुसुकाते ॥



श्रीसीतारामशरणजी 'रामरसरंगमणी'—पद १६८

पिय लखो हो सरयू की बहरिया ।

धार भरित अति प्यार हरित तट लेती ललित लहरिया ॥  
सावन घन गरजत बरसत सुख सरसत अवध शहरिया ।  
भूलहु चलि 'रसरंगमणी' अब तजि रघुवीर गहरिया ॥

पद १६९

सरयू के कूल विरचित भूला, भूलत सिया रघुराज आली ॥  
रिमझिम रिमझिम बरसत बदरा, भीजत सिय सारी पिय चदरा,  
जलकन मुखन विराज आली ॥ लै कर पट रघुवर पटरानी,  
विहँसि परस्पर पोछत पानी, लखि सब सुखी समाज आली ॥  
गावैं सखी सुहावन सावन सुनि 'रसरंगमणी' मनभावन,  
अति आनन्दित आज आली ॥

पद २००

सखि सुखित सरयू कूल सिय रघुवरहिं भूमकि भुलावहीं ।  
सजि हेम हीर हिंडोर युगल किशोर केलि खुलावहीं ॥  
कोउ गाय तान तरंग तरल उमंग रंग रचावहीं ।  
कोउ नचहिं सब अंग लचहिं बाज बजाय मोद मचावहीं ॥  
कोउ वाम विहँसि ललाम लली सों लाल नाम लेवावहीं ।  
सिय लजहि बैन न कहहिं पिय तन नयन सैन बतावहीं ॥  
अलि लहहि अति आनन्द सिय रघुनन्द छवि मन भावहीं ।  
चिरजीव 'मणिरसरंग' जोरी रंगनाथ मनावहीं ॥

पद २०१

धीरे धीरे हो भुलावो मेरे बांके बलमां ।  
 भोंकाभोंको जनि जोर छैला छाके छलमां ॥  
 अस कहि सिय डरी लपटानी गलमां ।  
 मानो मिली सुर सरित जमुन जलमां ॥  
 लागी गावन सुहावन सुकण्ठ कलगां ।  
 करै पवन पिय प्यारी पगे नयना पलमां ॥  
 बसे ऐसे सीताराम जाके हिष थलमां ।  
 धन सोइ 'रसरङ्गमणी' भूमि तलगां ॥

पद २०२

ये हो मोरे प्राण धीरे भूलो भूला ।  
 प्रीतम मम जिय डरत भरत बहु बेंदी के गूहे फूला ॥  
 फिर परिहौ पायन मन भावन रोपिहौं जबहीं मान को भूला ।  
 'मणिरसरङ्ग' कहैं सिय पिय सों रमकहु राज कुँवर अनुकूला ॥

पद २०३

भूलत सिया रघुवर लाल ।  
 लाल मणिमय ललित भूलन लाल खंभ प्रवाल ॥  
 लाल भूषण वसन तन उर लाल मणिके माल ।  
 लाल वीरा लसत आनन बहत वचन रसाल ॥  
 लाल ललना छवि विवश भे लाल छवि वश वाल ।  
 लाल लली सुखमा निरखि 'रसरङ्गमणी' निहाल ॥



पद २०३

भूलत राम सिय मन हरे ॥  
हरे भूषण वसन सजितन बाहु अंशन धरे ।  
हरे विपिन प्रमोद तरुगण वेलि फूले फरे ॥  
हरे मोरी मोर बोलत नटत घन धुनि करे ।  
हरे पिय रघुनन्द रमकत प्रीति फन्दन परे ॥  
हरे हँसि मृदु वचन बोलत सरस दोउ सुख भरे ।  
हरे श्यामल गौर मिलि 'रसरङ्ग' निज जन करे ॥

पद २०५

भूलत राम सिया रस रसिकै ।  
रस भरि गाय गवावत हिलि मिलि हिय सरसावत हँसिकै ॥  
खात खवावत पान पान करि अधर सुधा रस फँसिकै ।  
रस भूलनि 'रसरङ्गमणी' यह निरखत हियो हुलसिकै ॥

पद २०६

भूलत युगल फूल हिंडोल ।  
फूल ते सुकुमार अंगन धारि फूल निचोल ॥  
फूलनै की चन्द्रिका शिर फूल मुकुट अमोल ।  
फूल के सिय पिय करन अवतंश मिलित कपोल ॥  
पहिरि नख शिख फूल भूषण लसत करत कलोल ।  
फूलि लोचन लखत छवि 'रसरङ्गमणी' अतोल ॥

पद २०७

भूलत सिय स्वामिनि महरानी ।  
श्रीमहराज कुमार भुलावत सजि सनेह सनमानी ॥

प्रीतम प्रीति प्रवल लखि प्यारी पगि प्रमोद मुसक्यानी ।  
लखि 'रसरङ्गमणी' दुहुँ अखियाँ छवि सुखसिन्धु समानी ॥

भूपताल-पद २०८

भूलि रहे रामहिय हरित सिय मनहरी ।  
हरित घन भरत जल हरित महि वाग भल,  
हरित तरु वेलि अति ललित फूली फरी ।  
हरित हिंडोल सजि हरित भूषण वसन,  
श्याम तन गौर मिलि हरित दुति अनुसरी ॥  
हरित रस भरित हँसि हरषि मुख निरखि दोउ,  
रमकि रहे जमकि रस केलि कौतुक करी ।  
हरित ऋतु चरित पद गाय 'रसरंगमणि'  
चहत सियपीय पद प्रीति उर निर्भरी ॥

पद २०९

भुकि भुकि सीताराम सु भूलैं ।  
सावन सरयू तट प्रमोदवन घन वरसत अनुकूलैं ॥  
कल कामिनी कछोटा कसि कसि दोउ दिशि हँसि हँसि हूलैं ।  
मिलि मलार गावत सिय पिय सखि सुनि सुर तिय तन भूलैं ॥  
अंचल माल सुधारि सनेही लखि चंचल दृग फूलैं ।  
प्यारिहु अलक सँवारि लहै 'रसरङ्गमणी' मुद मूलैं ॥

पद २१०

आली री को भूले इन संग ॥  
नाजुकता न बिलोकत पर की भोंकत अधिक उमंग ।



रसिकराज कहवावत पै नहि आवत रस गति ढंग ॥  
 पिय करजोरि निहोरि हँसायो छायो प्रेम उत्तंग ।  
 'मणिरसरंग' राम सिय अंगन बारत अमित अनंग ॥

पद २११

अरज मानो जो अरज मानो, प्यारे मधुर सु रमकनि ठानो ।  
 भोंकन सों कसकत हिय हमरो खसकत पट परिधानो ॥  
 रसिकराय कहवाय पाय यश अस रस रीति न भानो ।  
 'मणिरसरंग' कहैं सिय पियजी कस न मया मन आनो ॥

पद २१२

काहे न धीरे भूलहु प्यारे ।

सुकुमारी स्वामिनी हमारी सियजू डरहि अपारे ॥  
 कमकहि भुकहि कमकि भोंका लहि भरी रूप रस भारे ।  
 सुनि 'रसरंगमणी' हँसि रमकत पिय सिय सुरुचि सम्हारे ॥

श्रीरामवल्लभाशरणजी 'युगलविहारिणी'—पद २१३

अपने मैं गुरु को भुलैहौं नव नेह हिंडोर ॥

रचिहौं विमल वर भूषण विमल वर भूषन, पूषन छवि जोर ।  
 सुचि खम्भ अदंभ के प्यारे अदंभ के प्यारे, चितरंभ के चोर ॥  
 अवध अवधि निरवधि की अवधि निरवधि की, सरि नेह सुजोर ।  
 मरुवा अमन मन मानिक अमन मन मानिक, सुठि नेह सुडोर ॥  
 पटरी प्रतीति सुप्रीति की प्रतीति सुप्रीति की, तेहि बिच गुरु मोर ।  
 हिय गगन श्यामवन वरसै श्यामवन वरसै, नाचैं मन मोर ॥

प्रेमा परा अलि अवली परा अलि अवली, गावैं सुजस अथोर ।  
‘श्रीयुगलविहारिणी’ के प्रभु, विहारिणी के प्रभु, भव बंधन छोर ॥

गजल-पद २१४

आज श्रीसद्गुरु मेरे भूलन पै बैठे भूलते ।  
देखि दासों के हिये पंकज कली से फूलते ॥  
रस रसिक श्री जानकीवर लेत रस रस रसहि को ।  
देत भक्ति सु प्रेम रस जेहि पाय जन जग भूलते ॥  
नेह मेह सु बरसते सुख सरसते साली सु हिय ।  
पद परसते छवि दरसते त्रयताप जेहि निरमूलते ॥  
सम दमादि विज्ञान ध्यान अमानतादिक गुण महान ।  
गंभीर धीर सु सिंधु पर उपमा न कहूँ कोउ तूलते ॥  
बोलनि हँसनि चितवनि चखनि जनमन रखनि रुचि सुचिसदा ।  
चित बसत ‘युगलविहारिणी’ नित स्वामि कबहुँ न भूलते ॥

पद २१५

भूलन विच विलसत श्रीगुरुदेव ।  
ललित अलाप निरत मधुरे स्वर सुर नर किन्नर सेव ॥  
नाना भाँति निभृत भूपावली चमकत चन्द्रकलेव ।  
‘रामवल्लभाशरण’ एक मुख उपमा कहत लजेव ॥

गजला-पद २१६

चलि देखिये मनिकूट पै सखि आज सुखकी लूट है ।  
ललि लाल अलि भलि वृन्द लै अवली सु जूटै जूट है ॥  
तरु तरुन श्याम तमाल पिय सिय प्रीतिलता वितान में ।



भूलन प्रिया प्रीतम निरखि अति वदन रति पद छूट है ॥  
यह युगल विमल विहार श्रीगुरु प्यार प्रद सद सदन पर ।  
चहुँओर रसिक चकोर माते पिवै छवि रस घूँट है ॥

पद २१७

ए दोऊ भूलत बने ठने ।

सिया प्यारी पिय के रंग राची पिय सिय रंग सने ॥  
यह दंपति की छवि संपति लहि सखियाँ सनेह घने ।  
परसि अंग रस बरसि रहीं रस बस करि मन अपने ॥  
विपिन प्रमोद लतान वितान कितान महान तने ।  
ता बिच 'युगलविहारिणि' के प्रभु लखि सुर जयति भने ॥

पद २१८

हिंडोरे पिय प्यारी राजैं, लखि रतिपति लाजैं ॥

कनक भवन मनि जटित विचित्र चित्र विविध वरन सुख करन  
हरन मन, त्रिविध पवन मुद कौन बखानै सखि अजब छटा  
छाजै ॥ पिय पीत पट सिय चूँदरी चटक चारु नख सिख  
विमल विभूषन सुहिय हार, गावैं कल कोकिल लजैनी मृगनैनी  
अली, साज वाद्य बाजै ॥ भुकि भुकि भोकेँ अवलोकेँ लली  
लाल बाल रोकेँ पल दृग कोकि कोकेँ शोकेँ जोकेँ जुत,  
'युगलविहारिणी' रस बस दोऊ, असज साज साजैं ॥

पद २१९

सिय प्यारी अति सुकुमारी पिया के संग भूलैं हो ॥

हरित मणिन के खम्भ दम्भ हर हरित डोर रेशम जगमग कर,  
 हरित जरीन बिछे पटरी पर हरित अवनि सुखमाकर, सरजू कूलै  
 हो ॥ हरित चन्द्रिका मुकुट विराजै कुण्डल तरिवन हरित सु  
 छाजै, हरित हार हीरन हिय आजै निरखि मदन रति लाजै,  
 हरित दूकूलै हो ॥ प्यारी पिय सुखचन्द निहारै प्यारे प्रिया  
 मुखचन्द निहारै, 'युगलविहारिणि' तन मन वारै, एको पल न  
 विसारै, दोउ मुद मूलै हो ॥

पद २२०

भूलै जानकी सुजान आज हरित लतान ।  
 वर विपिन प्रमोद मोद तन्यो है वितान ॥  
 दोऊ साजे हरो साज हरी हरी मुसुकान ।  
 हरी हरी सखि गावै हरी हरी राग तान ॥  
 हरी हरी दूब खूब महबूब भलकान ।  
 हरी हरी भरी सरजू तरंग सुख खान ॥  
 प्रेमप्रभा प्रेमलता छटा भयो है मिलान ।  
 लखि 'युगलविहारिणी' को सुख भो महान ॥

पद २२१

हिंडोरे भूलत श्रीजानकीवाग ।  
 दुहुँदिशि सखियाँ मुदित भुलावै अंग अंग भरि अनुराग ॥  
 विविध वितान लतान मनोहर तरु प्रफुलित फल लाग ।  
 अलि अवली गुञ्जरित भली विधि रहस विवस रस पाग ॥  
 श्रीसिय मोहनि कुंज मनोहर पूरित प्रेम तड़ाग ।



‘युगलविहारिणि’ प्रभा प्रसारति निरखत जन बड़भाग ॥

ध्रुपद-मलार-पद २२२

आयो री सावन सुहावन पिय प्यारी के हिय सुख छावन ।  
सरयू तीर सुखद कुंज साज साजि भूलन की अलिगन भूमकि  
लागीं झुलावन ॥ कोउ बजावती मृदंग कोउ उवंग वीण स्वर सो,  
कोउ निरत करन लागी सावन गावन ॥ ‘युगलविहारिणी’  
उछाह सिन्धु की तरंग सद्गुरु कृपा सुचन्द नित लागीं बढ़ावन ॥

श्रीकौशलकिशोरशरणजी ‘कान्तिलता’-पद २२३

श्रीसतगुरु के सदनमां हो पिय भूलैं भुलनमां ।  
संग लिये मिथिलेश दुलारी श्रीसरयू के कुलनमां ॥  
देव वधू सब नाचहिं गावहिं हरषत वरषै फुलनमां ।  
उपमा खोजि खोजि कवि हारे कतहूँ न मिलत तुलनमां ॥  
‘कान्तिलता’ के जीवन धन दोउ सब सुख के हैं मुलनमां ।

पद २२४

सदा भूलो मेरे दिलवर बड़े उत्साह नया ।  
जियो युग-युग प्रिया प्रीतम यही है चाह नया ॥  
लता वितान वनप्रमोद तीर सरयू के,  
हिंडोला अति विचित्र मणिनमय तैयार नया ॥  
अनेक यंत्र बाजते मृदंग वीणादिक,  
अलापती हैं गानकला सजे साज नया ॥  
यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन की,

बैठे भूलन पै दिखाते रहो मुखचन्द नया ॥  
 यही अभिलाष 'कान्तिलता' श्रीसियाजू की,  
 बढ़े दिन दिन सदा सनेह सुख सुहाग नया ॥

श्रीमौनजी पद - २२५

सावन सुहायो सुख नवल हिंडोलना में,  
 भूलैं मन भावन के संग मन भावनी ।  
 नवल नवेली राजें नवल श्रृंगार साजे,  
 बांसुरी मृदंग वाजे गावें कल ग्रामिनी ॥  
 गाजें घन मंद मंद पवन झकोरें दै दै,  
 अति अनुराग में झुलावें गज गामिनी ।  
 प्यारी घन घोर सुनि पिया से लिपटि जात,  
 'मौन' घन साँवरी घटा में सोहैं दामिनी ॥

पद २२६

सावन समाज साजि राजे पिया प्यारी आज,  
 संग में सहेली भूला भूमकि झुलावती ।  
 चन्द्रमुखी वाला वृन्द नवल सिंगार साजे,  
 दामिनी प्रभा सी अंग अंग दरसावती ॥  
 बांसुरी मुर्चङ्ग वीन मजीरा मृदंग बाजै,  
 सप्त स्वर माधुरी मल्हार तान गावती ।  
 द्रुमन लता नवेली मंजरी बितान छाये,  
 फूली फुलवाई मकरन्द चुमकावती ॥



डोले रसमाते मन मदन मिलिन्द वृन्द,  
 गुञ्जत सुहाये लता लूम लूम आवती ।  
 मधुर मयूर कल कोकिला कपोत कीर,  
 विहंग अनेक धुनि मुनियाँ सुनावती ॥  
 पिऊ-पिऊ पपीहा विरहिनी को मारे वान,  
 कोकिला की कूकै मानो मदन जगावती ।  
 शीतल सुगन्ध मन्द पवन झकोरे देवै,  
 सरयू हिलोरै दोउ कूल चली आवती ॥  
 भूमि हरियाई बीर बहूटी सुहाई मानो,  
 मेहदी रचाई रितु शोभा सरसावती ।  
 घुमड़ घटान घन झमकि झलान बूँदैं,  
 दामिनी लहू कै हूकै हूलसी मचावती ॥  
 मन्द मन्द गाजै घन गगन निशान बाजै,  
 देवन की वाला फूलमाला वरसावती ।  
 पीत पट प्रीतम ओढ़ावै मन भावनी को,  
 प्यारी मन भावन को चून्दरी ओढ़ावती ॥  
 प्रेम रस पागे अनुरागे अंग अंग दोउ,  
 दै दै गल बहियाँ प्यारी हँसति हँसावती ।  
 लै लै कै बलैयाँ सखि पैयाँ परै वार-वार,  
 सुखमा निहार मन मुदित सिहावती ॥  
 सुखमा समान कहूँ उपमा न खोज पाई,  
 अंग प्रति कोटि काम कामिनी लजावती ।

भूलन विहार सुख शेषहूँ न गाय सकै,  
 'मौन' की कहै को पार शारदा न पावती ॥

पद २२७

दोऊ भूलैँ मिलि भूला भुकि भूमि-भूमि ॥  
 शीतल सुगन्ध मन्द पवन झकोर लेत, सुखमा सुहाई सर  
 नन्दिनी हिलोर लेत, घन गुमड़ाई उमड़ाई अमड़ाई, चपला  
 की चमक आई धूमि-धूमि ॥ बाग वन बेली तरु कदम तमाल  
 पुञ्ज, मालती सुहाई मानो मदन बनाई कुञ्ज, फूली फुलवाई  
 अमड़ाई उमड़ाई मानो, मिलत परस्पर लूमि-लूमि ॥  
 गुञ्जत मिलिन्द रसमाते उनमत्त डोलैँ, कोकिला कपोत कीर  
 विहंग अनेक बोलैँ, दादुर अलापैँ पिय पपिहा कलापैँ, रटि-रटि  
 के मचाई बड़ी धूमि-धूमि ॥ विपिन प्रमोद वन दशहूँ दिशान  
 सोहैँ, विमल विचित्र अवलोकि मुनि मन मोहैँ, शोभा अधिकाई  
 वीरवहूटी सुहाई हरियाई-हरियाई छाई भूमि-भूमि ॥ सावन समाज  
 साजैँ सुमुखि सुनैनी राजैँ, मंजीर मुचंग वीन मधुर मृदंग वाजैँ,  
 बांसुरी बजावैँ गावैँ मधुर मलार तान, नचत मोर गन धूमि-धूमि ॥  
 कदम की डारी भूला रेशम की डारी डोर, किशोरी किशोर  
 दोऊ भूलत मचकि जोर, गलभुज दीन्हैँ 'मौन' आनन्द न थोर,  
 मुसुकात परस्पर चूमि-चूमि ॥

श्रीसियाशरणजी 'प्रेमअली' पद २२८

जय रहे अवधेश ललन मिथिलेशलली की जय रहे ॥



पिया साँवरो सोहैं घटा सिय दामिनी सी छा रही ।  
 बातैं मधुर रस रहस के आनन्द जल बरषा रहे ॥  
 अति रंग भरे भूलैं दोऊ दोउ ओर सखियाँ झुलावहीं ।  
 भोंका सरस भुकि भूमि भूमि भूषण भमाभम बज रहे ॥  
 चहुँओर से नागरि खड़ी बाजे सु मधुर बजावहीं ।  
 कोई तान लेत तरंग सी चातकि मयूरि सी ह्वै रही ॥  
 तिरछी नजर हँसि हेरि हेरि फुल गेन्द की चोटैं चले ।  
 'श्रीप्रेमअली' यह चाहती नित नयन में छाये रहें ॥

श्रीरामशरणदासजी-पद २२६

नई सावन नई मेरो साँवरो नई सिया युगलकिशोर ।  
 नई-नई डरिया कदमतर नई-नई रेशम डोर ।  
 नई-नई सखियाँ झुलावन आई नई भूलैं राधो चितचोर ।  
 नई-नई भूषण वसन राजे नई-नई नयनन कोर ॥  
 नई-नई चातक भणत वाणी नई-नई दादुर शोर ।  
 नई-नई पुरवा रमकि बहे नई मेघवा घनघोर ॥  
 नई-नई बुंदिया परन लागी नई-नई बोलत मोर ।  
 नई-नई सरयू बढन लागी नई-नई दिशा घनघोर ॥  
 नई-नई विपिन प्रमोद शोभा नई-नई चित के चकोर ।  
 नई-नई 'रामशरण' दोऊ नई-नई रस में बोर ।

पद-२३०

नए रसिया नई सावन नई सिय नवल हिंडोल ।  
 नई-नई अंग सजि भूषण नये पट नवल निचोल ॥

नई-नई गच्छिया सुमन नई नई-नई अलिगन डोल ।  
 नई गुंजन स्वर मोहत श्रुति सुनि नई-नई बोल ॥  
 नई-नई त्रिविध बयरिया बहत रमकि चित्त डोल ।  
 नई-नई चन्द्र वदनि सिय पिय संग करत कलोल ॥  
 नए घन उमड़त घुमड़त भहरत बुन्द अतोल ।  
 दोउ लपटत गर लागत परसत विहँसि कपोल ॥  
 नई-नई सरयू लहरिया लहरत नव रस धोल ।  
 नई अलि वीण बजावत गाये राग अनमोल ॥  
 मुख नई पानन विरिआ देत हरषि सखि गोल ।  
 नये हिय 'रामशरण' दोऊ निवसहिं रसिक अमोल ॥

पद २३१

भूलत जनकजा रघुलाल ।

सरयू पुलिन प्रमोद वन जहँ ललित कंज प्रवाल ॥  
 लाल डांडी लाल पटरी लाल खम्भ रसाल ।  
 लाल भाड़ी लाल डारी लाल कृत्रिम जाल ॥  
 लाल लाड़िली लाल शोभा लाल मणि की माल ।  
 लाल चहुँदिशि ठाढ़ि सखी सब निरखि नैन विशाल ॥  
 लाल भूमि प्रमोदवन में लाल कदम कमाल ।  
 लाल ललित लुनाई लखि लखि 'रामशरण' निहाल ॥

पद ३३२

भोंकवा न दीजै राघो कमर लचकिजैहँ टुटि जैहँ गरवा के हार रामा ।  
 आई गयो सावन उमरि आये मेघवा विजुली चमके बहुबार रामा ॥



सरयू किनारे प्यारे रच्यो हैं हिंडोलना झुलवत प्राण आधार रामा ।  
 डरपि डरपि कहैं सिय शशि वदनो सुनि एत राजकुमार रामा ॥  
 अवध वागवर सघन कुंज में नित नई होत बहार रामा ।  
 हरे हरे चहुँदिशि अबनी विराजै बुंदन परत फुहार रामा ॥  
 'रामशरण' पिया निठुर भयो कस गुनन के आगार रामा ।  
 सिसकि-सिसकि भणै जनक लड़ै तो मानो तो बतियाँ हमार रामा ॥

पद २३३

झूलन की झाँकी अजब बनी है प्यारी संग झूलै पियरवा रे ।  
 साँवली सुरतिया पै गोरी सिया सोहति अँखियनमें सोहैं कजरवार रे ॥  
 भूषन बसन राम सिय राजत रति अनंग छबि छोरवा रे ।  
 सरयू तीर प्रमोद विपिन में हरि लीन्हों मेरो हियरवा रे ॥  
 घन गरजे चमकै दामिनियाँ सुनि-सुनि बोलत मोरवा रे ।  
 नान्हीं-नान्हीं बुँदिया परत भूमि पर धीरे-धीरे बहत समीरवा रे ॥  
 'रामशरण' दम्पति सुखमा लखि नैनन बहै जलधरवा रे ।  
 झूलन की झाँकी में चित नहिं जाको जनु झूँकत कुरुर सियरवा रे ॥

पद १३४

तेरी बाँकी झूलन पर बलिहारी ।

बाँकी सी खम्भन बाँकी सी डाँड़ी बाँकी सी पटुली मनहारी ॥  
 बाँकी सी रन्ध्रजाल तामें शोभित बाँके बेलनमाँ सुघरकारी ।  
 बाँके से पोताम्बर सुठि शोभित बाँकी सी नील विमल सारी ॥  
 बाँके से क्रीट मुकुट शिर राजै, बाँकी सी चूरामणि न्यारी ।  
 बाँके से श्याम गौर पिया प्यारी 'रामशरण' के हिया फारी ॥

पद २३५

रमकि रमकि भूलें नवल हिंडोलना सावनकी आई है बहार रामा ।  
 चलिये तो जाय श्रीअवध नगरमें, जहाँ लगे मदन बजार रामा ॥  
 पिया-पिया-पिया-पिया रटत पपीहा, मोरवा करत पुकार रामा ।  
 चात्रिक कीर चकोर भणित बाणी भिंगुर भंभाकार रामा ॥  
 सरयूतीर सघन कुंजन में जुरि आई कदमकी डार रामा ।  
 हरे-हरे चहुँदिशि अवनि विराजे बूंदन परत फुहार रामा ॥  
 गलबहियाँ दीन्हें पिया प्यारी भूलत प्राण अधार रामा ।  
 'रामशरण' दोऊ रूप मगन भये निज उर विहरें हमार रामा ॥

पद २३६

सरयू किनारे कदम जुरि छहियाँ रसिया हिंडोला लगौले बा ॥  
 सिया पिया रूप माधुरी दरसे कोटि मयंक लजौले बा ।  
 श्याम अंग भीने पट भलकत जुलफन फुलेल लगौले बा ॥  
 राजकुमार सुकुमार छत्रीले जुवतिन पर जदुआ चलौले बा ।  
 'रामशरण' दोउ रूप रंगीले सावन के मौज देखौले बा ॥

श्रीमधुपूदनाचार्यजी 'मधुपअली' ध्रुपद-पद २३७

गरजत मतंग मतवारे मेघ कारे कारे दामिनी दमंकत चमंकत ।  
 प्रफुलित प्रमोदवन कुंजकुंज आलीगन हिंडोल साज साजि हिय  
 उमंगत ॥ पीय प्यारी को रिभावती मृदंग गमकावती भनंक  
 भाँक सनक स्वर ताल तमंकत । 'मधुपअली' परमानन्द लखि  
 लखि छवि होत दंग दम्पति रस भूलन भमंकत ॥



ध्रुपद-केदार-पद २३८

सियवर भूलै भूमि भूमि ।

भ्रम-भ्रम-भ्रम दै दै-दै भोंक, दै दै-दै भोंक मृदंग वीणा  
आदि बाजैं लय सों स्वर सितार । नाचहि गावहि अलिगन  
सरस राग सावन, हरषि निरखि छवि को करति जै-जै-जैकार ॥  
गरजत घन अति घुमंक बिच बिच दामिनि दमंक, छाड़ रख्यो  
अमित रंग वनप्रमोद मध्य भार । पिय को रमक प्यारी की  
ओर प्यारी की रमक पिया की ओर, 'मधुपअली' छवि पै  
जात बारि-बारि॥

पद २३९

जित देखो तितै दोऊ भूला भुलै ।

श्याम गौर सुखमा अथोर बहु काम वाम उपमा न तुलै ॥  
साज सावनी सजि मनभावत छवि रवि लखि हिय कमल फुलै ।  
दम्पति सुख सम्पति उछाह भरि दिये गलबाँह सु मोद मुलै ॥  
अवध स्वामि श्रीसतगुरुसदनहिं अवलोकिय सरयू के कुलै ।  
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि ग्रन्थित जिय सो ग्रन्थी बिनु श्रमहिं खुलै ॥  
निगम नेति करुणा निकेत गुरु शरण किये हिय हरन शुलै ।  
युगल विहार बहार 'मधुपअली' लली लाल भली भाँति जुलै ॥

श्रीराजबहादुरजी-पद २४०

छवि छाई चहुँ धाई ऋतु पावस भली,

भूलै हेम के हिंडोरा राम जनकलली ।

पिय भ्रमकि भुलाई सिय बेसरि हली,

श्रम सीकर सुहाई मुख कमलकली ।  
 जब सिय सिसकानी तब बोली हैं अली ॥  
 भोंका दीजिये सम्हारि सुकुमारि मैथिली ।  
 अवध आनन्द लूटो गलिय गली,  
 'राज' थोरे दिन बाकी ढेर गयो हैं चली ॥  
 ( 'राज' हिय अभिलाष सिय कृपा से फली )

श्रीसियालालशरणजी 'प्रेमलता' पद २४१

सियजू भूलि रहीं बगिया में दशरथराजकुमर के संग ॥  
 नख शिख सजे सिंगार अनूपम लखि छवि लजहि अनंग ।  
 चहुँदिशि खड़ी नवल ललना गण गावहिं भरी उमंग ॥  
 वीणा वेणु सितार सारंगी मंजीरा सु मृदंग ।  
 ताल तमूरा किंकिणि नूपुर वाजि रही मुरचंग ॥  
 भोंका देहिं भ्रमकि प्रमुदित मन पट फहरात सुरंग ।  
 दादुर कीर कोकिला बोले नाचत मोर सुढंग ॥  
 रिमझिम रिमझिम मेहा बरषै चढ़ि रहि सरजू तरंग ।  
 सुरतिय निरखि सुमन बहु बरषै हरषित उड़हिं विहंग ॥  
 'प्रेमलता' यह रसिकन सम्पति युग-युग रहे अभंग ।

पद २४२

हिंडोरना में भुलि रहे सियलाल ।  
 मैं सरयू जल भरन गई री, निरखत भई बेहाल ॥ १ ॥  
 कहा कहूँ छवि अनुपम आली, सुखमा को जनु जाल ।  
 चहुँदिशि सघन लता तरु शोभित, संग मुग्ध बहु बाल ॥ २ ॥



पाकर जम्बु कदम्ब बकुल बट, श्याम तमाल रसाल ।  
 फूलित फलित ललित तरुवर सब, त्रिविध समीर सुलाल ॥ ३ ॥  
 बोलत मोर मेघ नभ घोरत, चोरत चितहिं सुकाल ।  
 गावहिं अली मलार मनोहर, मुदित नचहिं दै ताल ॥ ४ ॥  
 दम्पति परम प्रसन्न परस्पर, भूलहिं गर भुज डाल ।  
 अवलोकहिं सुर चढ़े विमाननि वरषहिं सुमन सुमाल ॥ ५ ॥  
 बार-बार मुसिकाय बिलोकत, सिय मुख जनरूचि पाल ।  
 'प्रेम-सलता' अलि करहिं आरती, साजि सु कंचन थाल ॥ ६ ॥

श्रीहरिजनजी-पद २४३

भये उनींदे नयन ललन अब भूलन ते उतरे ॥  
 आलस बस अंग-अंग शिथिल सब मतवारन्ह निदरे ।  
 भुकि-भुकि जात उभकि भोंकन्ह ते कहूँ अति भुकि न परे ॥  
 अलिगनहूँ सब स्रमित भई अति ज्यों त्यों काज सरे ।  
 'हरिजन' स्वामिनि रैन गई बहु चलि अब सैन करे ॥

श्रीसियामोहनीशरणजी 'मोहनीअली' २४४

चलो देखें सिया रघुवीर भुलनमाँ भूलि रहे ।  
 रहि-रहि भोंका देत अली सब उड़त सुरंग रंग चीर ।  
 भोंकन में अलकैं भुकि भूमत मनहुँ अमर की भीर ।  
 मन मृग 'मोहनि' को बेधत है नैन तीर बेपीर ॥

पद २४५

पड़ल हिंडोरा देखो कदम की डारी रामा, हरि-हरि भूलि

रहे अवध विहारी रे हरी ॥ रहि-रहि भोंका मारैं श्रीजनक-  
दुलारी रामा, हरि हरि गावैं सखीजन सुकुमारी रे हरी ॥  
अलकै बदन पर भूमैं घुँघुरारी रामा, हरि हरि उदै मानो चन्दा  
घन टारी रे हरी ॥ 'मोहनी' कहति यह अरजी हमारी रामा,  
हरि हरि हिये बसो दोऊ पिय प्यारी रे हरी ॥

पद २४६

आजु तो अवध सैयाँ भूमकि भुलाऊँगी ।  
मीठी-मीठी तान गाय मन्द-मन्द मुसुकाय,  
भोंकन को मारि हिय सुख न समाऊँगी ॥  
लट सुरमैहौँ उरमैहौँ मन आपनो री,  
कंठ सों लगाय हिय तपनि बुझाऊँगी ॥  
पान को पवैहौँ ताको उगिलन पैहौँ आली,  
'मोहनी' वदन लखि सुख न समाऊँगी ॥

पद २४७

साजन धीरे-धीरे भूलो प्यारी डरपति हैं भारी ।  
अतिशय भोंका देहु न लालन सिया हैं सुकुमारी ॥  
थहरैं अंग लहरि लट मुख पै फहरैं पट सारी ।  
'मोहनिअली' बिहँसि रघुनन्दन गलबहियाँ डारी ॥

पद २४८

नवल दोऊ भूलत नवल हिंडोर ॥  
नवल नागरी भूमकि पैंग को मारति भुकि भूकभोर ।



नवल वसन नव तन में राजें नवल सुरंगी छोर ॥  
 नवल कुंज सुन्दर द्रुम छहियाँ नचत नवल बनमोर ।  
 नवल तान नव नवला गावति नवल सप्रेम भूकोर ॥  
 नवल दामिनी जनक लड़ैती नव घन अवध किशोर ।  
 'मोहनि' प्रेम छके दोउ भूलत नवल नेह रस बोर ॥

पद २४६

बलिहारी श्रीचन्द्रकला की ।

भुलुवा भूमकि भुलावति मृदु हँसि रस घतियन की करत चलाकी  
 चंचल हार वार संग अरुभत भुकि भुकि भोंकन की छवि बाँकी  
 सिय मन 'मोहनि' सरस सहेली अलवेली श्रीअवध लला की

पद २५०

तजु अब मानिनी प्रिय मान ॥

चलहु भूलन भूमकि भूलन मारि पिय दृग सान ।  
 उमड़ि बादर घुमड़ि छाये करत कोकिल गान ॥  
 उतै प्रीतम विवस ठाढ़े कुंज पुंज लतान ।  
 चौकि छिन छिन बाट जोहत लगत मनसिज बान ॥  
 चटक मृदु मुसुकाय सुंदरि नवल दृग ललचान ।  
 चली नवल निकुंज 'मोहनि' मुरि नवल भुव तान ॥  
 भूमकि भोंका मारि भूलन लगी नवल सुजान ।  
 छिटकि नव छवि रही चहुँदिशि नवल भुज अरुभान ॥

पद २५१

भूला भूलो मेरी प्यारी वारी जनकदुलारी ना ।

सुठि सुकुमारी रूप उजारी राजकुमारी ना ॥  
 चाल गयन्द मन्द बोलनि पिय मन रिझवारी ना ।  
 'मोहनि' भ्रमकि तिहारी भूलनि पै बलिहारी ना ॥

पद २५२

भूला भूलो मेरे प्यारे दशरथ राज दुलारे ना ।  
 सुठि सुकुमारे प्राण अधारे अँखियन तारे ना ॥  
 अलक सुधारे जुलुफन वारे रस मतवारे ना ।  
 हिय रिझवारे 'मोहनि' प्यारे दृग रतनारे ना ॥

पद २५३

सखि आज भूलनवाँ लालहिं भ्रमकि भुलैहौं ।  
 हँसि हँसि के मधुरी मधुरी तान सुनैहौं ॥  
 लखिके बाँकी मुसुकान अधिक सुख पैहौं ।  
 रहि रहि के भोंका देइ मलारहिं गैहौं ॥  
 बिखरी अलक निज कर सों जाइ बनैहौं ।  
 अपने वश में हँसि सिय पिय को करि लैहौं ॥  
 लखि के छलिया छवि व्याकुल दृगन जुड़ैहौं ।  
 कहैं 'मोहनिअली' ललकि पिय कण्ठ लगैहौं ॥

पद २५४

भूलत श्वेत हिंडोरा राम ॥

श्वेतहि चँवर लिये सखि ठाढ़ी श्वेतहि रूप ललाम ।  
 श्वेत सिंगार पिया प्यारी को लाजत कोटिक काम ॥



श्वेत जड़ाउ जड़े खम्भन में संगमरमर के धाम ।

‘मोहनिअली’ निरखि दोउ मूरति बेगि विकी बिन दाम ॥

श्री सद्गुरुरामशरणजी मधुरलता पद-२५५

भूलत भूकभोरत निडर पिया ॥

सावन प्रथम अवधपुर भूलन प्रभु सयान लड़िका हैं सिया ।

लम्बि लम्बि पेंग भूलो जनि रघुवर हम डरपति तुम निडर जिया ॥

प्रभु मुसुकात निहारि सखिन तन ए हारी हम जीत लिया ।

‘मधुरलता’ दूसर सावन लौं प्रभु हरिहौ तब हँसैगी सिया ॥

पद २५६

भुलावो लाड़िले निज रानी, परम प्रेम जिय ठानी ॥

नेह नाह को निरखि नवेली अतिशय जिय सुख मानी ।

मृदु मुसुकाय लोभाय छयल मन गहि कर सो पिय पानी ॥

वैठि परस्पर हेरत दोउ छवि चितवन अमृत सोनी ।

गलबहियां दै भूलन लागे कहि कहि मधुरी बानी ॥

देखि छटा कृतकृत्य अलीगण बिनहीं दाम बिकानी ।

‘मधुरलता’ सजि साज नचत ढिग पियपर भई दिवानी ॥

पद २५७

लिये भूलैं रसीले सुघर गोरी ॥

श्याम वदन पर जुलफैं छोड़े लखत विहँसि अलियन ओरी ।

मारत नैन बान तकि तकि के विवश भई सब लखि जोरी ॥

जो जहँ रही सो तहीं विवश भई छूटि गई कर से डोरी ।

‘मधुरलता’ लखि भई बावरी फिरति जगत ते मुख मोरी ॥

पद २५८

भूला भूलैं छवीले रसीले पिया ॥

मणिमय ताज सुभग शिर सोहैं नागिनि जुल्फ डसायो हिया ।  
 कुण्डल कान नयन वर बाँके नाशामणि बिनु मोल लिया ॥  
 अधर लाल मुसुकान माधुरी काहि कहौं जो जखम किया ।  
 'मधुरलता' नख शिख लखि शोभा पिय हिय तन मन अरपि दिया

पद २५९

भूलत दोउ रसिया आलस माते ।

कहुँ सिय पिय पर कहुँ पिय सिय पर भुकि उठि पुनि मुसकाते ॥  
 तोड़त वदन लेत अँगड़ाई छनहीं छन जमुहाते ।  
 पिय कच सिय श्रुति फूलन अँटके हँसि हँसि दोउ सुरभाते ॥  
 प्रेमालस में छके छवीले गलबहियाँ लपटाते ।  
 'मधुरलता' ते धन्य धरातल जे यह छवि हिय ध्याते ॥

श्रीरामकिशोरशरणजी 'रसमोदलता' पद-२६०

सरयू कूले भूमकि दोउ भूलैं ।

अलकें आइ रहीं मुख ऊपर हुमकि हुमकि दोउ हूलैं ॥  
 दोउ मुखचन्द्र चकोर होइ दोउ निरखि निरखि दोउ भूलैं ।  
 हँसि हँसि पेंग बढ़ावत दोऊ श्याम गौर सुखमूलैं ॥  
 नई नई केलि करत भूलन पर रसिकन मन अनुकूलैं ।  
 यह 'रसमोद' अनूपम अदभुत इन सम और न तूलैं ॥

पद-२६१

तनिक धीरे भूलो हो बाँके यार ॥



तुम तो अपने सुख चाहत हो दलकत हृदय हमार ।  
हम नाजुक तुम प्रबल कठिन हो ताके कछु न विचार ॥  
तुम तो अपने सुख विहवल हो प्रबल मदन के धार ।  
सुनि प्रीतम लिपटाय हृदय लागि 'रस' बस तन न सम्हार ॥

पद २६२

भूलत प्यारे राजदुलारे भ्रमकि भुलावत गोरी गुजरिया ।  
आज हिंडोरे भूलत सिय पिय रिमझिम बरसत कारी बदरिया ॥  
पड़त फुहार पीत पट भींजत जनकलली जू की सुरंग चुनरिया ।  
क्रीट मुकुट लट कुँवरि सँवारत चिकुर चन्द्रिका पिय मन हरिया ॥  
रमकि भ्रमकि पिय पेंग बढ़ावत भुकि भुकि जात कदम की डरिया ॥  
श्रीजनकलली सरयू जल परसत नभ से होत सुमन की भरिया ।  
कवहुँ भ्रमकि पिय सिय को भुलावत गावत मोद भरिराग कजरिया ।  
'रस' बरषत जब करत चकोर दृग सखि छवि लखि जावें बलिहरिया ॥

श्री सियारामशरणजी 'मधुरीलता' पद-२६३

घनश्याम घुमड़ि घन आयो री ।

कटि पट पीत दामिनी दमकैं कीरति घन घहरायो री ॥  
पूरव पवन प्रेम पुरवइया मिथिला भरी लगायो री ।  
सुकृती शशि सम्पन्न पाय रस नृपति शालिफल पायो री ॥  
अर्क जवाश विनास शोक भयो अलि चातक सुख पायो री ।  
पिय तरु लता ललित रुचि 'मधुरी' उरकि अधिक छवि छायो री ॥

पद २६४

हिंडोरे श्वेत सु भूलत राम ।

श्वेत चाँदनी फरस श्वेत सुठि श्वेत मणिनमय धाम ॥  
 रजत श्वेत मणि जटित खम्भ गुण मणि मरुवा मणि दाम ।  
 पटुली श्वेत चन्द्रमणि चमकत लसत दाम घनश्याम ॥  
 श्वेताम्बर सिय सुभग सुतन में गौर वर्ण अभिराम ।  
 श्वेत श्रृंगार सखिन सब साजे भूषण श्वेत ललाम ॥  
 छत्र श्वेत युग चँवर चलावति चन्द्रमुखी वर वाम ।  
 फूले श्वेत सुमन वन उपवन गुंजत मधुप तमाम ॥  
 श्वेत सु कीर हंस पारावत पढ़त पीय सिय नाम ।  
 शोभा सार श्वेत लखि 'मधुरी' श्वेत भयो रति काम ॥

पद २६५

लसत दोउ श्यामा श्याम हिंडोर ।  
 विद्युत छटा छनहिं छन छहरति छिति छावति छवि छोर ॥  
 श्याम रंग रस बोर डोर कल भूलत श्यामल गोर ।  
 श्याम घटा घनघोर मोर पिक शोर करत अति जोर ॥  
 श्याम तमाल लता नव कुंजन भूमि भुकी चहुँओर ।  
 सुरन हरषि वरसत कुसुमांजलि 'मधुरी' मोद न थोर ॥

पद २६६

भांकी भलामल भलकै भूलत भकभोर ।  
 अलियाँ भुलावै भोकै भुलावै भोकै, भमकत चहुँओर ।  
 भीनी भरै घनवारी भरै घनवारी, हरषै मन मोर ॥  
 'मधुरी' सु भुकि भुकि भाँकै, सु भुकि भुकि भाँकै, छवि पर तृणतोर ॥



पद २६७

भूलत प्राण वल्लभ लाल ।

रंगभरि सब सब संग भूलत अंग फूलत हाल ॥

वदत सखियाँ सब परस्पर करत रस बस ख्याल ।

नाम पिय को लेहु प्यारी हँसत दै दै ताल ॥

माण्डवी कहि भरत पोषक करत जग प्रतिपाल ।

उर्मिला कहि वेगि वेधत लक्ष्मन की चाल ॥

कीर्तिपति श्रुतिकीर्ति गावति करत उर अरिशाल ।

लेहु पिय को नाम सिय जू वेगि करहु निहाल ॥

आदि रा पुनि अन्त म मृदु रमन रसिक रसाल ।

कहति सखियाँ हम न मानब चारु चतुरी चाल ॥

भनत 'मधुरी' रंग वरषत भरत मानस ताल ।

चित्त करषत मोद सरसत शालि हरषत बाल ॥

श्रीविदेहजाशरणजी 'प्रेममोद' पद २६८

आजु सावन बीज सुहाई ॥

मणिपरवत पर जनक किशोरी पियसंग भूलन आई ।

तरु रसाल में नवल हिंडोरा जगमगात छवि छाई ॥

अलिगन भूलि भुलावहि गावहि नटति सु साज बजा ।

श्याम घटा नभ दामिनि दमकत त्रिविध पवन सरसाई ॥

दादुर मोर पपीहा कोयल चहुँदिशि शोर मचाई ।

'प्रेममोद' तिलई तट भूलन रसिकन को सुखदाई ॥

पद २६६

दुलहिनि संग दूलह भूलि रहे ।

मौरी मौर सुभग सिर धारे नव जोवन दोउ उमग गहे ॥  
 ग्रथित चूनरी पीत उपरना कर कंकन छवि अधिक लहे ।  
 नासामणि अधरन पर हलरत मंद हँसनि दृग चहनि चहे ॥  
 कर पंकज पद मेहदी जावक अनुपम शोभा कौन कहे ।  
 ब्याह विधान कराइ सहेलिन गावति मंगल तालन दे ॥  
 'प्रेममोद' सब ऋतु की लीला रासमण्डल मधि नित्य बहे ।

पद २७०

भूलन पर अरुम्भि गये पिय प्यारी ।

भूषण से भूषण पट पट से श्याम गौर मनहारी ॥  
 जंघा जानु उरु कटि कटि से नवल अंग छवि मारी ।  
 उर उर से मुख मुखनि मिलाये भुज से भुज अँकवारी ॥  
 तन मन प्राण जीव एक कीन्हें प्रीति सुरीति अपारी ।  
 'प्रेममोद' यह अनुपम अरुम्भनि निरखत अलिन सुखारी ॥

पद २७१

सरयू कूले बना रहे सावन ।

पिय प्यारी नित भूला भूलैं अलिगन भ्रमकि भुलावन ॥  
 घन गरजनि चमकनि दामिनियाँ मोरवा बोल सुनावन ।  
 बाजहिं वीण मृदंग मुरलिका राग रागिनी गावन ॥  
 छत्र फिरावन व्यजन चलावन दुहुँदिशि चँवर दुरावन ।



मन्द हँसनि चितवनि रस बोलनि नैनन सैन चलावन ॥  
 अतर पान माला की पहिरन अरस परस मन भावन ।  
 भूषण वसन अंग अरुभावन भुज से भुज लपटावन ॥  
 गेंद उछारन कमल फिरावन रसिकन हिय सुख छावन ।  
 'प्रेममोद' तृण तोरि अशीषत राई लोन उतारन ॥

श्रीसन्तशरणजी 'मस्त' पद २७२

अरे रामा रिमिझिमि बरसे पनियाँ भूलें राजा रनियाँ रे हरी ॥  
 धिरि आये घुमड़ि घनकारे, परैं रिमिझिमि बुन्द फुहारे,  
 अरे रामा चमकि रही दामिनियाँ ॥ अंग अंग में भूषण निराला,  
 गरे सोहैं मणिन की माला, अरे रामा कमर पड़ी करधनियाँ ॥  
 दोउ भूलें सुरंग हिंडोला, बिन दाम लेत मन मोला,  
 अरे रामा मन्द मन्द मुसुकनियाँ ॥ गल बहियाँ दिये दोऊ भूलैं,  
 हो 'मस्त' हिये दोऊ फूलैं, अरे रामा भूलैं नहिं चितवनियाँ ॥

श्रीरामप्रसादशरणजी 'दीन' पद २७३

मोरा छाँड़ि दे अँचरवा मैं तो न्यारी भूलूँगी ॥  
 भोंका दीन्हीं अति भारी फारी सारी जड़तारी,  
 अब बातों में तिहारी मैं तो नाहीं भूलूँगी ॥  
 बहु भूषण हमारे गिरे टूटे नग सारे,  
 जनि छेड़ो छलकारे तोसे नाहीं बोलूँगी ॥  
 हिय काँपत हमार जिमि तरुवर डार,  
 पैयाँ लागूँ बार बार मुख नाहीं खोलूँगी ॥

तुम गावो लैके वीण कोउ पावस नवीन,  
विनती करो ह्वै के 'दीन' तब साथे भूलूँगी ॥

श्रीमोदलताजी-पद २७३

भूलत नवल रसिया लाल ।

नवल सिय संग नवल शोभा नवल रंग रसाल ॥  
नवल भूषण वसन चमकन नवल चहुँदिशि बाल ।  
नवल तान तरंग उमड़े नवल सुख सरसाल ॥  
नवल मुसुकन नवल चितवन नवल वचन रसाल ।  
नवल हास विलाश नवलहिं भोका दै दै चाल ॥  
नवल नित्य किशोर राजत नवल सुख सब काल ।  
नवल सुरति विनोद चिन्मय 'मोदलता' निहाल ॥

श्रीमोदमंजुजी-पद २७५

आज दोउ भूलै श्रीजानकी वाग ।

रसिकन की संपति दम्पति उर उमगि उमगि अनुराग ॥  
दै गलवाँहि परस्पर हेरत नेह सु अचल अदाग ।  
'मोदमंजु' अलि कमकि भुलावहिं भारी भरी सुहाग ॥

पद २७६

सजन आज भूला भुलाना पड़ेगा ।  
छवीले छली छल भुलाना पड़ेगा ॥  
किया हैरान था मुझको जो फागुन के महीने में,  
कसर सारी गिन गिन चुकाना पड़ेगा ।



उतरकर आप भूले से खड़े हो जाइये साहब,  
कानूनन न हीलो बहाना चलेगा ॥  
गहो डोर रेशम कमल कर में प्रीतम,  
रसीली सिया को झुलाना पड़ेगा ।  
बड़े पैंग लम्बी भूलकर न हरगिज,  
रसे रस रसिकवर बढ़ाना पड़ेगा ।  
खता माफ चाहो तो जुरमाना यह है,  
सिया के चरण सिर झुकाना पड़ेगा ।  
कियो सोई प्रीतम रसीले रसिकमणि,  
'मोद' स्वामिनि को कण्ठ लगाना पड़ेगा ॥

श्रीसियावल्लभशरणजी-पद २७७

भूमत भूलन पै दोउ आवत ॥

मन्द मन्द पग धरत मनोहर नूपुर धुनि सरसावत ।  
राम रसिक वर सिय रमणी संग गति गयन्द सकुचावत ॥  
उमड़ि घुमड़ि धिरि आई बदरिया दामिनि दुति दमकावत ।  
रमकि पवन पुरवाई सुखद अति अनुपम रस उपजावत ॥  
कोउ सखि पान दान कर लीन्हे कोउ शिर चँवर दुरावत ।  
कोउ सखि वीण मृदंग बजावत पावस राग सुनावत ॥  
नेही नयन निहार विहारिन नयनन शयन चलावत ।  
'सियवल्लभ' रसिकन सुख सम्पति दम्पति मृदु मुसुकावत ॥

पद २७८

भूलन से उमगत प्रीतम जात ।

प्यारी संग विराजत गर मिलि मन्द मन्द मुसुकात ॥  
 मणिन जटित सुखपाल मनोहर पान खवावत खात ।  
 बहु सखि चँवर सु छत्र लिये कर बहु हेरत मृदु गात ॥  
 आये दम्पति शयन महल में प्रेम सहित बतरात ।  
 करि आरती बिलोकि चन्द्रमुख 'सियवल्लभ' हरषात ॥

श्रीयुगलसहचरीजी-पद २७६

भूमकि भूलब बालम तो संगे हिंडोरना ॥  
 विपिन प्रमोद बन नित बोले मोरना ।  
 ताहू पै उमरि आवै सरयू हिलोरना ॥  
 सिय मुख लखि पिय नयन भै चकोरना ।  
 भोंका न सम्हारि सके मति भई भोरना ॥  
 'युगलसहचरी' लखि छवि छकी जकी ।  
 भुलबहु पिया हँसि हेरि दृग कोरना ॥

श्रीविन्दुजी - पद २८०

हिंडोरे भूलत दोउ सरकार ॥  
 श्रीमिथिलेशलली संग राजत श्रीअवधेश कुमार ।  
 दामिनि लरजि गरजि घन वरसत रिमझिम परत फुहार ॥  
 भुकि भुकि लाल लली मुख निरखत मानत मोद अपार ।  
 मानहु अरुण 'विन्दु' पंकज पर भ्रमर भ्रमत बहु बार ॥

पद २८१

सिय साजन का रो बांका भूला ।  
 मोतिनहार बन्दनवार हीरे हजार की कतार, बार बार छवि निहार,



रतिपति निज मद भूला ॥ चम्पा चमेलि मोतिया बेलि जूही  
अकेलि छवि सकेलि, भेलि मेलि करत केलि, फूलों की महक  
से फूला ॥ तापै विराजे अवधराज जनकजा समेत आज, लोक  
लाज त्यागि सुजन छवि हरण त्रिविध शूला ॥ अरुण वरुण  
मंगल करन दोउ पिय प्यारी के चरण, शरण 'विन्दु' संतन की  
सोई जीवन धन मूला ॥

पद २८२

भोजत कुंजन में दोउ अटके ॥

प्रिय पाहुने भये विटपन के पावन सरयू तट के ।  
पवन झकोर लली मुख मोरति छिपति छोर पिय पट के ॥  
युगल स्वरूप अनूप छटा लखि रति मनोज मन भटके ।  
इक टक छवि रस 'विन्दु' पियत दृग पल भर हटत न हटके ॥

पद २८३

दोउ जन लेत लतन की ओटैं ।

कछु पुरवाई चलत घन गरजत कछु बून्दन की चोटैं ।  
हरपति सिय पट छाँह करत पिय बांधि भुजन की कोटैं ।  
उत फहरत पचरंगी पगिया इत चूनर की गोटैं ।  
यह छवि लखि दृग 'विन्दु' प्रिया प्रीतम के पांय पलोटैं ॥

श्रीशरणजी-पद २८४

भूला भूलो सम्हारि के लालना ।

हजार बार कहा आप मानते ही नहीं,  
रहम करना गोया आप जानते ही नहीं ।

धड़कता है मेरा दिल और आप हँसते हैं,  
किसी के पीर को बेपीर क्या समझते हैं ।

कहवैहौ निठुर यह चालना ॥ १ ॥

भला है अब तो कहा मान लीजिये साहब,  
नहीं तो होली में फिर जान लीजिये साहब,  
कसर निकालेंगी सखियां जय बोलावेंगी,  
'शरण' पुकारियेगा आप तब छुड़ावेंगी,  
परि जैहौ सखिन के पालना ॥ २ ॥

स्वामी श्रीसीतारामशरणजी 'मधुरलता'-पद २८५

पावस घटा अटा चढ़ि लखि के बन प्रमोद सोहनियाँ रामा,  
अरे रामा भुण्ड भुण्ड चलीं भूलन को कामिनियाँ रे हरी ॥  
विलसत वदन अमन्द चन्द पर कारी धुंधुरवारी रामा,  
अरे रामा लट लोटै मानो पाली नागिनियाँ रे हरी ॥  
नाशा वेशर राग अधर पर लटकन की लटकनियाँ रामा,  
अरे रामा जियरा शाले कमर पड़ी करधनियाँ रे हरी ॥  
गति गयन्द गामिनियाँ छमछम बाजै पग पैजनियाँ रामा,  
अरे रामा कुच नितम्ब के भार लंक लचकनियाँ रे हरी ॥  
सरस हिंडोल शाल लखि बलि बलि जाहिं सबै भामिनियाँ रामा,  
अरे रामा रस वरसत जब पिय भुज गहि लपटनियाँ रे हरी ॥  
तीन ग्राम स्वर सप्त अलापहिं 'मधुर' साज बाजनियाँ रामा,  
अरे रामा मानहु मूरति धरे फिरे रागिनियाँ रे हरी ॥



आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे ।

आयगा कब सुखद सावन रसिक मनहर,  
 सजल घन रस भरत भरना शीत मृदुतर ॥  
 मोर शोर अथोर दामिनि दमक घन पर,  
 हरित भूमि लता वितान भरे सरित सर ॥  
 लाड़िली के साथ लालन मधुर भूलन कब भुलेंगे ॥आज०॥  
 आज से फिर दिन गिनेंगे भक्त प्रतिपल,  
 व्याह, होली, चैतनौमी आदि उत्सव ॥  
 फूल बँगले की छटा को देखते ही,  
 मधुर पावस आगमन होगा अवध पर ॥  
 विरह पावक से जले नव कंज मानस तब खिलेंगे ॥आज०॥  
 मास भर सद्गुरु सदन रस रंग वरषा,  
 तीज की शुभ रात सबका हृदय करषा ।  
 प्रात सरयू तट अघट पर बरसि रसरंग की बहार,  
 आज भी आँखों समाई है वही भूलन विहार ॥  
 श्रीजानकी वर वाग में फिर आप जानें कब मिलेंगे ॥आज०॥  
 श्रीजानकी वर वाग के नव सुमन लोभी ऐ भ्रमर,  
 लाड़िली नव अंग सौरभ घ्राण कर हो मत्त प्रियवर ॥  
 नित चकोर बने रहो श्रीलाड़िली मुखचन्द का,  
 पानकर युग युग जिओ श्रीप्रिया कंज मरन्द का ॥  
 'मधुर' भूलन ये सदा दृग में भुलेंगे ॥आज०॥

श्रीसियाअलीजी पद २८७

धानी रंगादे मजेदार मोरा बालम ॥

धानी पहिरि पिया तोरे संग भूलव गाउव राग मलार ।  
 गौरांगिनि के मध्य श्याम छवि शोभा अमित अपार ॥  
 हम तुम बालम एक रंग है विहरव सरयू किनार ।  
 'सियाअली' के यही मनोरथ हो जा गले का हार ॥

पद २८८

भुलावो सजनी धीरे धीरे ।

ताल मृदंग मजीर सितारे बजाओ सजनी धीरे धीरे ।  
 गौड़ मलार राग सोरठ में गवाओ सजनी धीरे धीरे ॥  
 नूपुर छमक भ्रमक किंकिणि की नचाओ सजनी धीरे धीरे ।  
 हास विलास केलि कौतुक में रमाओ सजनी धीरे धीरे ॥  
 'सियाअली' प्रीतम प्यारी छवि निहारो सजनी धीरे धीरे ।

श्रीवृजनन्दनजी-पद २८८

सावन सियाराम संग भूलत रेशम हेम हिंडोर हो ॥

सियाजू मिथिला दिशि को भोंकत राम अवध की ओर हो ।  
 अपने अपने वश राखन को मानो गई लागि होर हो ॥  
 वदन विलोकि विलोकन वारे बोलि उठत बरजोर हो ।  
 सुघर सुधाकर संसृति सुख प्रद सुभग सूर इक ठोर हो ॥  
 भूला भूमि भूमि पूरब को औ पश्चिम की ओर हो ।  
 छन प्रभात छन संध्या की छवि छाये रहे छिति छोर हो ॥  
 शोभा देखि देखि दोऊन की नारी नरहूँ विभोर हो ।



बिहँसि उठत जिमि साँभ कुमुदिनी खिलत कंज बन भोर हो ॥  
 मधुर मल्हार मेघ की तानै सुनि आनन्द अथोर हो ।  
 ठठी अलौकिक प्रीति प्रेम की दम्पति हिये हिलोर हो ॥  
 प्रकृति पुरुष तन नील पीत पर जनु विजुरी घनघोर हो ।  
 दरशन करि नाचन लागत हैं 'वृजनन्दन' बनमोर हो ॥

समदावन-पद २६०

गुनि गुनि गनि गनि दिवस वितैलियै, से दिन आज पूरि गेल ॥  
 अब त बरस भरि तरसि तरसि रहवै, शोचि दृग आँसू बहि गेल ।  
 अली सब रूप रस रसिक चकोरी तोर, बिन देखे कल नहि लेल ॥  
 अब तो अरज एक तोहि सँ हो प्राणधन, अरुम्कि भुलू एक बेर ।  
 सुरभू जनि पिय अलिन समाज बिच, रमकहु साँभ सवेर ॥  
 यही भाँकी लय पिय नैनन में भुलियौ, अब पिय करियौ न देर ।  
 भुकि भुकि भमकि भुलहु पिया-प्यारी हिय, दृग भरि निरखव फेर ॥

श्रीश्रीकरजी-पद २६१

प्यारी पिया संग भूतै, उनये घनघोर ॥

ढारे गरे दोउ बहियाँ, गरे दोउ बहियाँ, भोंकत भकभोर ।  
 सखियाँ भुलावै गावै, भुलावै गावै, बिच बिच बोलें मोर ॥  
 भोंकन चलत पुरवैया, चलत पुरवैया, फहरत पट छोर ।  
 पुवती भरोखन लागीं, भरोखन लागीं, 'श्रीकर' तृण तोर ॥

श्रीमनमोहनजी पद २६२

रमके रितु पावस सजनी बहेला पवनमाँ हे ।

प्रिया प्रीतम संग संग भूलत भुलनमाँ हे ॥

सखियाँ भुलावैं दै दै प्रेम भोंकनमाँ हे ।  
 तन मन धन बारैं लखि रूप युगलनमाँ हे ॥  
 प्रिया मुख लखि पिय मन ललकनमाँ हे ।  
 रसिक जन मन हर लीन्हैं भुज अंशनमाँ हे ॥  
 बैठे वितान बिच जोति चमकनमाँ हे ।  
 प्यारी दामिनी दुति हरतीं पिया श्याम घनमाँ हे ॥  
 सावन सरस बन संत मन फुलनमाँ हे ।  
 परम पुनोत सरि सरयू कुलनमाँ हे ॥  
 प्रेमिन चकोर चाहे चन्दमुख दरशनमाँ हे ।  
 'मोहन' लखि मुसुकैं मनमोहन सजनमाँ हे ॥

पद २६३

भूमकि दोऊ भूलैं रे हिंडोरवा ॥

रतन जड़ित शुचि सुभग हिंडोरवा, रेशम रजु छोरवा ।  
 रिमझिम रिमझिम सावन की बदरिया,  
 से चारों ओरिया बोलैं रे बन मोरवा ॥  
 भूमकि भुलावैं सखि गावैलीं कजरिया,  
 निहारैं लागीं आपन री चित चोरवा ॥  
 'मनमोहन' के प्राण सजीवन, सुफल अब भेलै रे दृगकोरवा ।

पं० श्रीरामदुलारीशरणजी 'रूपलता' पद २६४

प्यारी भुलैं री आली प्यारे भुला रहे हैं ।  
 रेशम के डोर ऐंचत श्रम बिन्दु छा रहे हैं ॥  
 भीने बसन सिया के फहरात भोंकने पर ।



पिय कंजकर सँवारे मन्मथ लजा रहे हैं ॥  
 भुज अंश धारते वे क्या शौक से छवीले ।  
 गाना सुना सुनाकर प्यारी रिक्का रहे हैं ॥  
 हँसती हैं मैथिली जब सन्मुख पिया के होकर ।  
 लखि 'रूपलता' प्रीतम बलिहार जा रहे हैं ॥

पद २६५

आज बालुम गिर गई मेरी नाक की नकवेशरी ।  
 अब भूलन की शौक मुझको है न उर में लेश री ॥  
 ये जनकपुर के सुनारों थी बनाई प्रेम से ।  
 अब न ऐसी बन सकेगी लाल कौशल देश री ॥  
 तब भूलन की भोंक लालन नागरी को सह सके ।  
 देख लो साड़ी हमारी ध्वंश नागिन केश री ॥  
 जोर भूलन भोंक से तरफर जिगर करते ललन ।  
 'रूपलता' अब ना भूलूँगी संग ते अवधेश री ॥

श्रीशत्रुहनशरणजी 'रसकान्तिलता'—पद २६६

भूलन में आज सज धज के युगल सरकार बैठे हैं ।  
 अलिन मन मोहने मानो सुछवि श्रृंगार बैठे हैं ।  
 युगल मुखचन्द हेरन को सभी आँखें चकोरी हैं ।  
 परस्पर में प्रिया प्रीतम बने गरहार बैठे हैं ॥  
 मजे से भूलते भूला कभी मचकी भी लेते हैं ।  
 रसीली मैथिली संग में रसिक सरदार बैठे हैं ॥  
 मधुर मुसुकाय सुनते हैं सरस संगीत सखियों के ।

गुणों पै दाद भी देते सजन दिलदार बैठे हैं ॥  
 कृपामय नयन कोरों से विहँसि हँसि हेरते दोनों ।  
 'लतारसकान्ति' के हियके सकल सुख सार बैठे हैं ॥

तिरहुत—पद २६७

देखु हे नवेली आली भूलन बहार ।  
 नवल किशोरी संग नवल कुमार ॥  
 नवल कंचन वन नवल हिंडोल ।  
 चातक कोयल केर नवल सुबोल ॥  
 उमड़ि आयल नव घटा बेसुमार ।  
 चपला चमकि परे नवल फुहार ॥  
 नवला नारिक तहँ नवल जुटान ।  
 नव साज लय गावे नव नव तान ॥  
 'लतारसकान्ति' फूलि अंग न समाय ।  
 नव सुख पावि लाल लली के भुलाय ॥

तिरहुत—पद २६८

नहुँ नहुँ भुलू पहुँ नवल हिंडोल ।  
 टूटल लली क गरहार अनमोल ॥  
 हमर स्वामिनी छथि बड़ सुकुमारि ।  
 एते जोर भाँका नहिं सकती सम्हारि ॥  
 खसल भूषण सुवसन उधियाय ।  
 डर सँ ललीक मुख कंज कुम्हिलाय ॥



किय नै मानै छी पिय रसिक सुजान ।

‘लतारसकान्ति’ क विनय करु कान ॥

समदावन-पद २६६

सिया के सजन के भुलाई लियौ हे सजनी सावन वितल चलि जाय ।  
सावन समान सुख अनत न पायब जेहि जोहि जियरा जुड़ाय ॥  
युगल ललन विहँसन गर लपटन भूलन भूलन मनकाय ।  
पान पत्रावन लट सुरभावन तजि किछु आन न सोहाय ॥  
भूलन-समाज संग सिय पिय हिय बसि विलसहुँ सुरुचि सदाय ।  
सावन-गमन तन राखन के ‘कान्तिलता’ नहिं किछु अपर उपाय ॥

भूला विसर्जन आरती-पद ३००

आरती भूलन की कीजै, मधुर छवि नयनन लखि लीजै ॥  
लली लालन राजै भरि प्यार, सु नख शिख सजे सुभग शृंगार,  
मदन मद तजै, सूर शशि लजै, डोल छवि छजै, बलैया बार२लीजै ॥  
नींद बश कबहुँ कबहुँ भुकि जात, सखिन तन हेरि सकुचि मुसुकात,  
विहँसि जब जोहैं, नयन मन मोहैं,

धरै धीर को है, सखिन हिय प्रेमवारि भीजै ॥

अरुण अंखियाँ सोहैं अलसात, अंगैठी लै लै के जमुहात,  
अधिक निशि भूले, प्रेमवश भूले,

परम सुख मूले, निछावर तनमन करि दीजै ॥

भूलन की भाँकी तजी न जाय, नयनमाँ अधिक अधिक ललचाय,  
प्रेम रस रसै, युगल जो लसै,

उर अन्तर बसै, तबहिं ‘रसकान्तिलता’ जीजै ॥

## परिशिष्ट भाग—कवित्त

मेघ घहरायो छन जोति छहरायो,  
 बक पांति बहरायो मोर पंख फहरायो है ।  
 बारि बरसायो इन्द्रचाप दरसायो,  
 चातकन तरसायो सरितान सरसायो है ॥  
 दादुर बुलायो उर आलिन फुलायो,  
 सियाराम को भुलायो मद काम को भुलायो है ।  
 भूमि हरिआयो 'रसरंगमणी' गायो,  
 मनभावन को भायो आयो सावन सुहायो है ॥१॥  
 वरषत वारी घटाकारी रसरंगमणी,  
 कियो सिया प्यारी वैन पिया सो उचार है ।  
 करिये तैयारी राज रसिक विहारी संग,  
 सखिन सुखारी होत हमहूँ तैयार हैं ॥  
 भूमकि भुलावो रंग रमकि बढ़ावो,  
 जौक जमकि जमावो गावो सावन मलार है ।  
 सरयू के कूला बन फूले सब फूला,  
 मोद मूला अनुकूला आई भूला की बहार है ॥२॥  
 सावन में अधिक सोहावन अवधपुर,  
 रिमिभिमि वरसैं जलद जल जूटि जूटि ।  
 पावनि अबनि रमणीय राजैं हरी हरी,  
 वारी भरी क्यारी चहूँओर चलीं फूटि फूटि ॥



जानि समय अनुकूल सखिन सोहाग मूल,  
 झूलत हिंडोर सीताराम सुख लूटि लूटि ।  
 देखि 'रसरंगमणी' दम्पति की शोभा घनी,  
 लाजैं भूषकेतु भूषमारैं शिर कूटि कूटि ॥३॥  
 कारे कारे घन नभ दरसत प्यारे प्यारे,  
 बरसि गये ते अबै बरसत फेरि फेरि ।  
 हरी हरी भूमि हरी हरी रहीं लता भूमि,  
 बोलत विहंग मानो मैं मंत्र टेरि टेरि ॥  
 लोनी लोनी ललना सलोनी राग गाय गाय,  
 नाचैं मोद माचैं लली लालन को घेरि घेरि ।  
 रमकि रमकि रघुवीर 'रसरंगमणी',  
 सरयू के तीर झूलैं सिया मुख हेरि हेरि ॥४॥  
 छाय छाय आये चहुँओर घनघोर करि,  
 सोर जोर बरसैं मधुर झरि लाय लाय ।  
 लाय लाय गलबांह राजत नवेली नाह,  
 सखियाँ झुलावैं झुकि झुकि नाचैं गाय गाय ॥  
 गाय गाय बोलैं मानो कोकिला मधुप कीर,  
 सरयू के तीर तरु फूले नीर पाय पाय ।  
 पाय पाय पान मुसुक्याय रघुराय सीय,  
 झूलैं 'रसरंगमणी' मन मोद छाय छाय ॥५॥  
 सावनी सुतीज मोद बीज 'रसरंगमणी'  
 मनीकूट कुंज बीच फूले तरु सावनी ।

सावनी अवनि हरी सावनी सरयु भरी,  
 सावनी मधुर भरी मेघ वरसावनी ॥  
 सावनी सु सारी धारी भामिनी समूह गावैं,  
 सावनी सु राग नृत्य गति दरसावनी ।  
 सावनी पोशाक राम स्वामिनी सँवारि भूलैं,  
 सावनी सु भूलनि सनेह सरसावनी ॥६॥  
 बाग वृक्ष वेली भूलैं संग की सहेली भूलैं,  
 सरयु तरंगन सों भूलैं मोद मूलहीं ।  
 तुरा अनमोल भूलैं कुण्डल सु लोल भूलैं,  
 अलक कपोल भूलैं दग भूलि फूलहीं ।  
 बेनी पीठ पर भूलैं वेसरि अधर भूलैं,  
 भूलनी सुघर भूलैं कर्णफूल झूलहीं ।  
 सबहीं भुलाय भूलैं भूलन में सीताराम,  
 यों ही 'रसरंगमणी' नैनन में भूलहीं ॥७॥  
 आजै चहुँओरे नभ गाजै घनघोरे तोय,  
 त्याजै थोरे थोरे बोलैं मंजु मोरी मोरे हैं ।  
 सरयु हिलोरे जहाँ लेहिं चित चोरे तहाँ,  
 युगल किशोरे लसैं श्यामल सु गोरे हैं ।  
 यंत्रन टंकोरे सखी नाचैं अंग मोरे,  
 'रसरंगमणी' जोरे जस गावैं ताल तोरे हैं ।  
 मैन छवि छोरे हंसैं हेरि नैन कोरे,  
 सीताराम रस बोरे आज भूलत हिंडोरे हैं ॥८॥



रचे चारु चौमीकर दण्डन के दोनों ओर,  
 चन्द्रकला चन्द्रप्रभा चँवर चलावती ।  
 विमला व्यजन बीजै छेमा छपानाथ ऐसो,  
 सीता रघुनाथ माथ छत्र छटा छावती ।  
 सहजादि सखी साज लीन्हें 'रसरंगमणी'  
 सुभगा सुभग राग सावन की गावती ।  
 भुकि-भुकि भूमकि-भूमकि भोंकि भोंकन सों,  
 अली लली लालन को भूलन भुलावती ॥६॥  
 उत घन दामिनी सो दुरत सपेद होत,  
 इत सीताराम दुति थिर एकरस हैं ।  
 उत वारि वरसै सो कबहुँ अधिक कम,  
 इत जन रुचि सम सुख के बरस हैं ॥  
 उत छिति हरित औ सरित भरित इत,  
 हरी सहचरी चारु नद गान जस हैं ।  
 उत सुखी मोर 'रसरंगमणी' इत सोहैं,  
 सावन ते सिया मन भावन सरस हैं ॥१०॥  
 पावस की फौज जामें कोकिला निशान लीन्हें,  
 बान तौ बलाहक कर काम अग्नि जोर है ।  
 चोवदार चात्रिक चहुँओर शोर मोर करै,  
 जोरन सों दादुर दमान कीलै दौर है ॥  
 घूमि घूमि घटा घेरि अटन मध्य कामिनी सी,  
 दामिनी सी ओट चोट काम कोट टोर है ।

घायल से घूमि भूमि विरहिनि बेहाल कीन्ही,  
 'प्रिया सखी' सिया श्याम उपजी मरोर है ॥११॥  
 आली री अंदोल आजु विपिन प्रमोद माँझ,  
 सहित अलिन्ह भूलै नवल किशोर हैं ।  
 शीतल कदम्ब छाँह छाये द्रुम फूलन से,  
 दादुर मयूर पिक चारों ओर शोर है ॥  
 मधुप गुंजारै आली गावती मल्लारें मिलि,  
 आनन्द के सिन्धु माँझ उठत हिलोर हैं ।  
 आली सिय रसिक सुजान प्रान प्यारी पिया,  
 पेखि घनश्याम तन नाचै मन मोर है ॥१२॥  
 सावन सहेली छवि छावन अशोक वन,  
 भूलन रतनगिरि शोभा अधिकार्ई री ।  
 द्रुमन्ह हिंडोले आछे फूलन के भुमके हैं,  
 फूले फूले भूलै दोउ फूल मही छाई री ॥  
 पटुली पिरोजा चारु चामीकर रचे द्वार,  
 बने हैं अमोले डोलै छवि सरसाई री ।  
 नवल किशोरी लाल हरषि भुलावै बाल,  
 भूमि भूमि भोंका देत रही मुसक्याई री ॥१३॥  
 सखिहूँ से सखी कहै नवल किशोर लखि,  
 पिय घनश्याम शोभा सींव सिय गोरी है ।  
 सहे सहे वसन लसत मृदु अंगन पै,  
 भूषण विचित्र लखि रति मति भोरी है ॥



कारी घटा घूमि रही भूमि भूमि बरसत,  
सरस सुगंधै भीनी पवन भूकोरी है ।

‘आलीसियरसिक’ कूजत अति प्रिय लागै,  
कोकिला सो सारस चकोर मोर मोरी है ॥१४॥

येरी आजु राजनंद सियाजू सहेलि वृन्द,  
हिलि मिलि भूलन रतनगिरि आये हैं ।

सुरंग बसन सोहैं इन्द्रवधू छवि मोहैं,  
भूषण सुदेश अंग रचिकै बनाये हैं ॥

मुख में चबात पान मंद मंद मुसुक्यानि,  
चन्दमुखी चितवत हियरे समाये हैं ।

आली हिय भूलने अपार रंग बाढ्यो आजु,  
देखि देखि दम्पति आनन्द उमगाये हैं ॥१५॥

सरयू पुलिन शुभ अलिन समेत सिया,  
राधो जू भूलन रच्यो अति सुखदाई है ।

हरियाई छाई चहुँओरन सुहाई भूमि,  
भूमि द्रुम सुमन की सुभग ललाई है ॥

कोइली करत सोर मोर चहैं और जोर,  
नचत मयूरी ठौर ठौर छवि छाई है ।

ललित लुनाई लखि विपिन प्रमोद आजु,  
नंदनादी लजत विलोकि रुचिराई है ॥१६॥

सावन की घटा घेरि आई चहुँओरन से,  
मधुर मधुर शब्द सो पखावज बजायो है ।

भ्रमर भन्नाय तानपूरा को सुर भरै,  
 भिल्ली भिनकारि गति सितार को सुनायो है ॥  
 गान करै कोकिल सुनि नाचत मयूर पेखि,  
 देत ताल मेढ़क यह शोभा बनि आयो है ।  
 चलु री सखी भूलन जैए रघुराज पास,  
 भूलन की साज सब नवीन ही बनायो है ॥१७॥  
 गावत हैं वेद चारि ब्रह्मा त्रिपुरारि जाके,  
 नारद शारद शेष पार नहीं पावहीं ।  
 करहि विविध जप तप योग योगीजन,  
 संयम समाधि करि करि जेहि ध्यावहीं ॥  
 जाको अनुशासन विरचि जग माया यह,  
 डहकि डहकि अग जगहि भुलावहीं ।  
 सोई प्यारे जानकी मनोहर सहित सिय,  
 भूलत नवलकुंज सखिन भुलावहीं ॥१८॥  
 सबुज रंग फर्स छत चँदोवा है सबुज रंग,  
 सबुज रंग भीति वापै सबुज चित्रकारी है ।  
 सबुज रंग आसन सिंहासन है सबुज रंग,  
 सबुज है हिंडोला तापै सबुज पिय प्यारी हैं ।  
 सबुज रंग भूषण औ वसन है सबुज रंग,  
 सबुज सब साज लिये बने छबि भारी है ।  
 भुलावैं दुइ सबुज सखी गावैं सब सबुज राग,  
 भूलैं सबुज रघुवर संग जनक दुलारी है ॥१९॥



नवल हिंडोर कुंज नये भ्रमर पुंज गुंज,  
 नवल रंगीले लाल प्यारी को झुलाई है ॥२२॥  
 श्याम कच श्याम चोटी श्याम भाल विन्दु दिये,  
 श्याम दृग श्याम श्याम काजर लगाये हैं ।  
 श्याम तन सारी श्याम श्याम है किनारी तामे,  
 श्याम जड़तारी बेली बूटहू सजाये हैं ॥  
 चाँदनी तनी है श्याम फरश विछी है श्याम,  
 श्याम श्याम भालर श्याम लट्ठू लटकाये हैं ।  
 श्याम ही तमाल डाल भूलन रसाल श्याम,  
 राम अभिराम सिया श्यामा को झुलाये है ॥२३॥  
 सावन अब आये लाल लीन्हें सब साज लाल,  
 फूले बन बाग लाल लाल रंग मेह की ।  
 विजुली की चमक लाल बोले बन मोर लाल,  
 लाल लाल दादुर लाल लाल रंग गेह की ॥  
 कंचन को खम्भ लाल रेशम की डोर लाल,  
 चन्दन कपाट लाल लाल रंग जेह की ।  
 लाल शिरपेंच लाल लली की चन्द्रिका लाल,  
 भूले दशरथ के लाल लाड़िली विदेह की ॥२४॥  
 लाल है लड़ैती लाल संग लिये सखी लाल,  
 भूलत हिंडोल लाल लाल घन गाज री ।  
 चन्द्रिका किरीट लाल जामा औ पटुका लाल,  
 चुन्दरी कंचुकी लाल लाल सब साज री ॥

मृदंग लाल ढोलक सितार लाल,  
लाल मुरचंग लाल लाल बीन बांसुरी ।

ललाई लाल देखिके मदन लाल,  
ठाढ़े पछतात लाल लेत है उसांस री ॥२५॥

लाल लाल फूल फूले ललित प्रमोदवन,  
बनि ठनि संग सोहैं लाल लाल बाल हैं ।

लाल सिया सारी लाल बसन विहारी तन,  
चन्द्रिका किरीट लाल लाल उरमाल हैं ॥

लाल लाल आनन में पानन की लाली लसैं,  
लाल मुसुक्यानन सों करत निहाल हैं ।

लाल लाल भूलन में सरयू के कूलन में,  
हूले 'रसरंगमणी' भूलैं लली लाल हैं ॥२६॥

चहुँओर ललित हिंडोरे लाल बालहू के,  
राजै मध्य रंग भीने श्यामा श्याम लाल हैं ।

चुन्दरी सुरंग लाल प्यारी अंग अंग लाल,  
भूषण विचित्र लाल संग रंग लाल हैं ॥

मन्द मन्द हँसनि हिंडोरे रंग भूलने में,  
लाल बाल हेरनि सों करत निहाल हैं ।

लटपटि पाग लाल समर उमंग लाल,  
लाल मई बाल कैधौ बाल मई लाल हैं ॥२७॥

आली पिक कोकिला कलापि किलकारैं सोर,  
सोरैं नभमाली आली काम जोर जंग में ।



अंग मुख लाली लाल बसन कुसुंभि लाल,  
 नवल किशोरी लाल लाल बाल संग है ॥२२॥  
 छूटै पेंच लाली पाग चुन्दरी किशोरीजू की,  
 अति सुख लाली खिली अमित अनंगे नैं ।  
 रूप गुण जोवन कला की कण्ठ ताली संग,  
 सावन निकुंज भूलै प्यारी लाल संगमें ॥२३॥  
 लाली है लतिका तमाल ताल बकुल वृन्द,  
 देखत अनन्द होत पोत मुनि लाल है ।  
 लाली अति सावनी सोहावनी सुरंग फूल,  
 कल्पतरु कदम्ब मूल केतकी रसाल है ॥  
 लालन के लाल बाग बेदिका विचित्र लाल,  
 अतिहिं विसाल तामें भूला परयो लाल है ।  
 लालही वितान फरस भूलामणि रचित लाल,  
 लाल बालमध्य भूलै सिया रघुलाल हैं ॥२४॥  
 फूलन के खम्भा पाट पटरी सुफूलन की,  
 फूलन के फुदने फुदे हैं लाल डोरे में ।  
 कहैं पदमाकर वितान तने फूलन के,  
 फूलन के भालर से भूलत भकोरे में ॥  
 फूल रही फूलन फुलवारी तहँ फूल के ही,  
 फरस बिछे हैं फूल फूल कुंज खोरे में ।  
 फूल भरी फूल भरी फूल जरी फूलन में,  
 फूल ही सी फूलि रही फूल के हिंडोरे में ॥२५॥